वर्ष 13 अंक 35

सितंबर, 2016

जनेपन्यास
JNPT

# अभिव्यक्ति

(जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास की गृह पत्रिका)

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को हासिल एक और उपलब्धि :
भारत के किसी पत्तन में आया पहला सबसे बड़ा जलयान
एम. वी. एम.एस.सी. क्रिस्टीना

# समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह की झलकियाँ

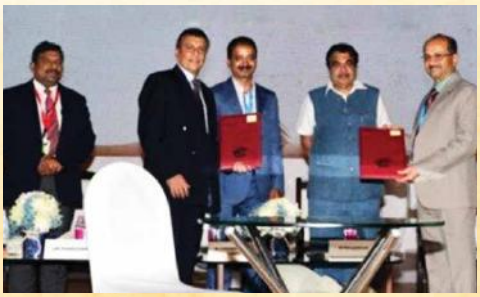

**वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः ।**
**तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्व बाहो जिग्युरश्वाः ।।**

*(सामवेद पूर्वार्चिक आग्नेयकाण्ड - 1/7/6)*

(**भावार्थ :-** हे परमैश्वर्य सम्पन्न परमात्मन! आपके स्तोत्रों से पहाड़ पर से जल के समान ज्ञानी भक्त लोग विशेष रूप से मोक्ष किंवा अन्य फल प्राप्त करते हैं, और हे स्तुति मात्र से प्रसन्न होने वाले परमेश्वर! ऐसे आपको आपके भक्तगण परमोत्तम सुन्दर स्तुतियों के द्वारा ही आपको जीतते हैं, जैसे, वीर उत्तम घोड़े से युद्ध जीतता है ऐसे ही भक्तगण उत्तम स्तुतियों से हे परमात्मा आपको वश में कर लेते हैं। )


**संरक्षक**
**श्री अनिल डिग्गीकर**, *भा.प्र.से.*
*अध्यक्ष*

**परामर्शदाता**
**श्री नीरज बंसल**, *भा.रा.से.*
*उपाध्यक्ष*

**मार्गदर्शक**
**श्री डी. नरेश कुमार**
*मुख्य प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव*

**श्री एन. के. कुलकर्णी**
*प्रबंधक (प्रशासन) तथा*
*राजभाषा अधिकारी*

**सम्पादक**
**सन्तोष कुमार पाठक**
*सहायक प्रबंधक (राजभाषा)*

**उप-सम्पादक**
**रोहित त्रिपाठी**

**सहायक सम्पादक मंडल**
**संजय पाटिल**
**अब्दुल गफ्फार शेख**

**टाइप सेटिंग**
**मनोहर जनार्दन म्हात्रे**


**अस्वीकरण**

अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। आवश्यक नहीं कि जवाहर लाल नेहरू पत्तन प्रशासन उनसे सहमत हो।

**- सम्पादक**

# अंदर के पृष्ठों पर


02 अध्यक्ष की कलम से...
04 आपके पत्र
07 सम्पादकीय
09 पत्तन समाचार
16 सुरक्षित क्रेन प्रचालन कब और कैसे
20 सड़क दुर्घटना और आघात परिस्थिति
23 मानसिक तनाव के शमन में मानसिक भावनाओं का महत्व
26 स्मार्ट सिटीज़ बेहतर भविष्य की ओर
29 विराट हिन्दी पखवाड़ा
33 हिन्दी पखवाड़ा झलकियाँ
37 कहानी - परम प्रेम
39 कहानी - इंदु नानी
41 कहानी - एक ऐसा भी रिश्ता
42 निबंध - कश्मीर में आतंकवाद
45 निबंध - कश्मीर में आतंकवाद
47 निबंध - कश्मीर में आतंकवाद
49 निबंध - जीवन जीने की कला है योग
51 कविताएँ
56 सत्यनिष्ठा का प्रभाव

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास
JAWAHARLAL NEHRU PORT TRUST

**अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से.**
अध्यक्ष
**ANIL DIGGIKAR, IAS**
CHAIRMAN

# अध्यक्ष की कलम से.....

''अभिव्यक्ति'' के इस 35 वें अंक के माध्यम से इसके पाठकों से संवाद करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। आप जानते ही हैं कि किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विकास में पत्तनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। साथ ही, किसी पत्तन का आकर्षण उसकी अवस्थिति से ज्यादा उसकी कुशलता और तत्पर सेवाओं पर निर्भर करता है। देश के निरंतर बढ़ते आयात-निर्यात की माँग को पूरा करने के लिए जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास विकास की दिशा में निरंतर कदम बढ़ाता रहता है।

इसी क्रम में पत्तन में लॉजिस्टिक डाटा बैंक टैगिंग का आरंभ किया गया जिससे व्यपारी अपने सामान की कंटेनर रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान तकनीक (आरएफआईडी) के जरिये पता लगा सकेंगे। भारत में यह तकनीक लागू करने वाला जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास देश का पहला महापत्तन है।

हमने अगले पाँच वर्षों में अपनी क्षमता को बढ़ाने के लिए बुनियादी संरचना के संवर्धन के लिए भारतीय स्टेट बैंक और डेवलपमेंट बैंक ऑफ सिंगापुर के साथ 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लेनदारी अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर प्राप्त करने का करार किया है।

अप्रैल, 2016 में पोत परिवहन मंत्रालय द्वारा मुंबई में आयोजित मैरीटाइम इंडिया समिट में जवाहरलाल नेहरू पत्तन द्वारा कई लाभकारी समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए जिनसे पत्तन के तेज विकास को बल मिलेगा। इस शिखर सम्मेलन में पत्तन के स्टॉल को भी बहुत सराहा गया।

ज.ने.प. न्यास सौर ऊर्जा का उपयोग करने वाला देश का पहला महापत्तन बन गया है। पत्तन ने इसके लिए अपने प्रशासन भवन, नगरक्षेत्र तथा अन्य परिसरों में छतों पर सौर ऊर्जा पैनल लगवाए हैं। इस 822 किलोवाट की परियोजना से वर्ष में 909 लाख यूनिट बिजली तैयार होगी। इससे पारंपरिक ऊर्जा पर निर्भरता कम होगी और पत्तन का बिजली पर व्यय बहुत कम हो जाएगा।

इसके अलावा पत्तन ने ''सुगम व्यापार'' के तहत प्रचालनों की कार्य कुशलता को बढ़ाने तथा कुशलता के मानकों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के समतुल्य लाने के लिए अनेक प्रकार के उपाय किए हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण उपाय इस प्रकार हैं :

1. अधिकृत ग्राहकों के लिए कंटेनरों की सीधे पत्तन में सुपुर्दगी (डीपीडी)
2. कंपनियों से कंटेनरों की सुपुर्दगी लेने के लिए ई-सुपुर्दगी आदेश
3. हस्तलिखित प्रपत्र 11 तथा प्रपत्र 13 के स्थान पर सॉफ्टवेयर सोल्यूशन का कार्यान्वयन
4. रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान तकनीक (आरएफआईडी) आधारित द्वार स्वचालन प्रणाली
5. टर्मिनलों के बीच ट्रैक्टर ट्रेलरों का अंतर टर्मिनल हस्तांतरण
6. ऑनलाइन घाटायन सुविधा
7. पत्तन के पहुँच मार्गों को चौड़ा बनाना
8. भीड़ को कम करने के लिए पार्किंग /होल्डिंग क्षेत्रों का विकास
9. लॉजिस्टिक डाटा बैंक का निर्माण
10. अतिरिक्त कंटेनर स्केनरों की सुविधा

इतना ही नहीं, पत्तन में राजभाषा हिन्दी की निरंतर प्रगति के लिए भी हमने अनेक उपाय किए हैं और उसका परिणाम भी बहुत सुखद रहा है। इस बार राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2015-16 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) मा. राष्ट्रपति के करकमलों से हिन्दी दिवस 14 सितंबर, 2016 के अवसर पर प्राप्त करने का गौरव मुझे प्राप्त हुआ। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार पत्तन अब तक निरंतर 10 बार प्राप्त कर चुका है। इस वर्ष पत्तन को कंटेनर प्रहस्तन क्षेत्र के माला पुरस्कारों में 'वर्ष 2016 का कंटेनर टर्मिनल प्रचालक' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। हमारे सभी कर्मचारी तथा अधिकारी इन उपलब्धियों के लिए अभिनंदन के पात्र हैं।

किसी भी विकास की निरंतरता को बनाए रखने के लिए समाज से उसका जुड़ाव होना बहुत आवश्यक है। इसके लिए जनेप न्यास पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा और खेल-कूद जैसे क्षेत्रों में भी अपना भरसक योगदान दे रहा है। महाराष्ट्र सरकार के वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत पत्तन में दस हजार पौधे लगाए जा रहे हैं और के. ई. एम. अस्पताल, मुंबई, के सहयोग से पत्तन के नगरक्षेत्र स्थित अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि आप सब भी इस पत्रिका से जुड़े रहकर ज. ने. प. न्यास की विकास यात्रा के साक्षी रहेंगे।

धन्यवाद,

**अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से.**

# आपके पत्र

**आपके** संस्थान की हिन्दी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 34वां अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2014-15 के लिए मिले प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हेतु आपको अनेकानेक बाधाई।

पत्रिका में आपके संस्थान में विभिन्न क्रियाकलापों और उपलब्धियों को भली भांति प्रस्तुत किया गया है। जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में महावृक्षारोपण अभियान के दौरान पेड़ों और फूल झाडियों का रोपण सराहनीय है। 'प्राकृतिक आपदा'जो कि आज भी एक चुनौती है, पर लेख सूचनापरक एवं व्यावहारिक लगा। 'भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएं'लेख भी सारगर्भित एवं प्रकृति के प्रति संचेतना जागृत करता है। पत्रिका के माध्यम से कार्य के प्रति दृढ़ निश्चय एवं आत्मविश्वास दृष्टिगोचर होता है। पत्रिका का यह अंक स्तरीय जानकारीप्रद,प्रेरणाप्रद, ज्ञानप्रद एवं संग्रहणीय बन गया है।

*- राम विचार यादव*
*प्रमुख-राजभाषा*
*हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पो. लि., मुंबई*

**आपकी** गृह पत्रिका अभिव्यक्ति का 34वाँ अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को ''कंटेनर प्रहस्तन में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ महापत्तन'' के लिए समुद्र मंथन पुरस्कार तथा राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2014-15 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त हुआ, इसलिए हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएं। निबंध प्रतियोगिता का विषय तथा पुरस्कृत निबंध अप्रतिम हैं। पुरस्कृत कहानियाँ तथा लेख पठनीय हैं। पत्रिका का यह अंक ज्ञानप्रद, पठनीय एवं संग्रहणीय है। उत्तरोत्तर प्रगति और उन्नति हेतु हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

*- धीरज डोले*
*राजभाषा अधिकारी*
*भारत संचार निगम लिमिटेड*
*देवनार, मुंबई*

**प्रतिष्ठित,** सुपरिचित पत्रिका अभिव्यक्ति देखने और पढ़ने का सौभाग्य सुसाहित्य पुस्तकालय में मिलता है। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है और रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है। आपके इस सुप्रयास के लिये सम्पादक मंडल बधाई व साधुवाद के पात्र हैं।

*- संतोष बी. गुप्ता*
*विशेष कार्यकारी अधिकारी*
*सक्करसाथ, अमरावती*

**गृह पत्रिका** अभिव्यक्ति(दिसम्बर, 2015) का अंक हमें सधन्यवाद प्राप्त हुआ। गृह पत्रिका में पत्तन से जुडी विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी देने वाली विषयवस्तु बहुत सुन्दर है। पत्रिका में प्रकाशित लेख आदि सारगर्भित हैं जो कि राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। अभिव्यक्ति पत्रिका का संपादन, उसकी साजसज्जा, फोटोग्राफी तथा छपाई उच्चस्तरीय एवं सराहनीय है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आपका यह प्रयास राजभाषा हिन्दी की प्रगति में एक अच्छा मार्गदर्शन करेगा।

*- एन. के. पटनायक*
*हिन्दी अधिकारी*
*पारादीप पत्तन न्यास*

**आपके** कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका हमें सधन्यवाद प्राप्त हुई। आपकी गृह पत्रिका का मुखपृष्ठ, साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं सुंदर है। प्रकाशित सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक है। सुंदर व जानकारी पूर्ण पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए समस्त संपादक मंडल को कोच्चिन पोर्ट ट्रस्ट की ओर से हार्दिक बधाइयाँ। आगामी अंकों की प्रतीक्षा करते हुए।

*- सूसन वर्गीस*
*सहायक सचिव ग्रेड- I (राजभाषा)*
*कोच्चिन पत्तन न्यास*

**आपके** द्वारा हिंदी गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के अंक 34 की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्तन की गृह पत्रिका के इस अंक से आपके कार्यालय के विभिन्न कार्यों की विस्तृत जानकारी मिली। साथ ही, पत्तन के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा की झलक भी मिली। हिन्दी पखवाड़े में पुरस्कृत कहानियों को छापकर पत्रिका को अधिक पठनीय बनाया गया है। पत्रिका में प्रकाशित कविताएँ मनमोहक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और मुद्रण उत्तम है। मैं पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता हूँ।

*- नरसिंह राम*
*उप निदेशक (राजभाषा)*
*परमाणु ऊर्जा विभाग, मुंबई*

**गृह पत्रिका** 'अभिव्यक्ति' के 34 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। संस्थान में सम्पन्न विविध शासकीय तथा सामयिक क्रियाकलापों को अपने में समाहित करने में पत्रिका पूर्णतया सफल हुई है। विभिन्न आयोजनों के रंगीन छायाचित्रों के प्रकाशन से पत्रिका की सुन्दरता में अपेक्षित सुधार हुआ है। प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं किन्तु श्रीमती बेला मनोज आगलावे द्वारा लिखित 'जीवन का मूल्य'

विशेष रूप से पठनीय कहानी बन पड़ी है। पत्रिका का संपादन एवं पृष्ठ सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका के प्रकाशन से संबद्ध समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंकों की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभेच्छा।

*- वरुण यादव*
*सहायक कार्य प्रबंधक*
*मशीनी औजार आदिरूप फैक्टरी, अम्बरनाथ*

'अभिव्यक्ति' का अंक 34 दिसम्बर, 2015 पाकर बहुत अच्छा लगा। माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी का अभिभाषण प्रेरणादयक है। सम्पादकीय में राजभाषा के प्रचार प्रसार की चिंताएँ हमें झकझोरने वाली है। सम्पादक द्वारा प्रस्तुत सुझाव ध्यान देने योग्य हैं। पत्तन समाचार के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यकलापों की रंगीन चित्रमय प्रस्तुती बरबस ध्यान आकृष्ट करती है। लेख- प्राकृतिक आपदाएं-आज भी एक चुनौती तथा खाँसी बहुत उपयोगी हैं। प्रश्नगत पूरी करो कहानी एवं विभिन्न प्रकार से पूर्ति अच्छी लगी। यह कहानी पत्तन के कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा की परिचायक है। हिन्दी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिता में प्रस्तुत लेख पठनीय हैं तथा पत्तन के प्रतिभावान कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के प्रति लगाव को प्रकट करते हैं। स्तम्भ - फुहार का क्या कहना। पूरी पत्रिका में सभी पर भारी है। पत्रिका को नियमित बनाने की ओर प्रयास की जरूरत है।

*- विष्णु वर्मा*
*ग्राम - ककोली*
*जिला - फैजाबाद, उत्तर प्रदेश*

आपके द्वारा प्रेषित''अभिव्यक्ति'' पत्रिका का अंक-34 बहुत लाभदायक रहा। आपके द्वारा हिन्दी के लिए किए जा रहे कार्य एवं प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री एवं छायाचित्र सभी बड़े रोचक एवं प्रेरणादायक हैं। कार्यस्थल में आपकी उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी हो इस हेतु कामना करते हैं।

*- अरुणा शर्मा*
*प्रबंधक (राजभाषा)*
*स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, क्षे.का. मुंबई*

'अभिव्यक्ति' के 34वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पोर्ट ट्रस्ट की विविध गतिविधयों को परिलक्षित करती हुई, उत्कृष्ट मुद्रण व पेपर क्वालिटी के साथ प्रकाशित पत्रिका अभिव्यक्ति की एक अलग पहचान है। पत्रिका में प्रकाशित लेख ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के आगामी अंकों की प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित।

*- एस. के. मिश्रा*
*राजभाषा अधिकारी*
*आयुध निर्माणियाँ शिक्षण संस्थान, अम्बरनाथ*

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 34वां अंक इस कार्यालय को प्राप्त हुआ। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की दिशा में आपकी राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रयास सराहनीय है और ऐसे ही आगे बढ़ें।

*अध्यक्ष, नराकास एवं प्रभारी वैज्ञानिक*
*भा.कृ.अनु.प-के.मा.प्रौ.सं, वेरावल*

आपकी हिन्दी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के अंक 34 की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। धन्यवाद। पुस्तक के सफल प्रकाशन में संपादक मंडल का सराहनीय कदम है। इस अंक में लेख, कविता तथा छायाचित्र अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। पत्रिका में जीवन का मूल्य, आस्था और अंधविश्वास, फुहार एवं भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ ? लेख विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका का चित्र संग्रह बहुत आकर्षक है। वर्ष 2016-17 आगामी अंकों के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

*- एम. डी. मीना*
*उप निदेशक*
*कर्मचारी राज्य बीमा निगम*
*उपक्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे*

आपकी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के दिसम्बर, 2015 का अंक-34 मिला। हार्दिक आभार। गृह पत्रिका की विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय विषय वस्तु बेहद मनमोहक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ रंगीन चित्रमय बहुत ही आकर्षक व रमणीक है। उत्तम कागज व स्पष्ट मुद्रण ने पत्रिका में चार चांद लगा दिये हैं। हिन्दी दिवस 2015 पर माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी का अभिभाषण बेहद सटीक व यथार्थपरक लगा। अध्यक्ष की कलम से स्तम्भ में पत्तन की विकास यात्रा व सर्वाधिक प्रहस्तन का कीर्तिमान स्थापित करने का कार्य एक बड़ा कदम है। जनेप न्यास राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संपादकीय में आपने राजभाषा हिन्दी की प्रगति और उसकी संवैधानिक स्थिति को एक मजबूत आधार देने के लिये अपने कार्यालयों में विभिन्न स्तरों पर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन करने का कारगर उपाय करना सार्थक व सराहनीय कदम है। पत्तन समाचार, प्राकृतिक आपदाएँ, हिन्दी पखवाड़ा उत्सव और उसमें पुरस्कृत रचनायें आदि बेहद जानकारीप्रद स्तम्भ हैं। स्वास्थ्य स्तम्भ में खाँसी रोग के कारण निदान व उपचारों की जानकारी मानव कल्याणकारी व उपयोगी है। जनेप न्यास के वित्त विभाग में सबसे महत्वपूर्ण अनुभाग राजस्व अनुभाग की कार्यप्रणाली व फायदों की सटीक जानकारी ज्ञानप्रद है। हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता 2015 की पुरस्कृत कहानी मत

परिवर्तन व जीवन का मूल्य बेहद मार्मिक व सारगर्भित लगीं। दुनिया झुकती है कहानी भी शिक्षाप्रद व प्रेरणाप्रद लगी। निबंध आस्था व अंधविश्वास मार्मिक व सारगर्भित लगे। आपके पत्र स्तम्भ पत्रिका को संजीवनी प्रदान करता है व पत्रिका में निखार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला है। हिन्दी पखवाड़ा व सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियां पत्रिका में चार चांद लगाती हैं। पत्रिका का यह अंक स्तरीय, पठनीय, सराहनीय व संग्रहणीय है। आपको व पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों व कहानी व निबंन्ध में पुरस्कृत लेखकों को मेरी कोटि-कोटि बधाई व मंगलकामनाएँ।

*- विजयसिंह बलवान*
*जटपुरा (जहांगीराबाद)*
*बुलन्दशहर (उ.प्र.)*

*संपादक की टिप्पणी : माननीय विजय सिंह जी आप जैसे सुधी पाठकों के पत्रों का अभिव्यक्ति में हमेशा ही स्वागत है। किन्तु उनसे यह अनुरोध भी है कि वे अपनी प्रतिक्रियाएँ पोस्ट कार्ड पर सघन रूप से लिखकर न भेंजें, हमें टंकण में परेशानी होती है। कृपया ए - 4 साइज़ कागज पर ही अपनी प्रतिक्रियाएँ साफ-साफ और फैल-फूटकर लिखें जिससे हम आराम से आपके विचारों को पढ़ और समझ सकें। और क्या ही अच्छा हो कि सभी पाठकगण कागज के प्रयोग को टालें तथा हमें यूनिकोड फॉन्ट में टाइप करके निम्नलिखित ई-मेल से अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजें।*

santoshpathak@jnport.gov.in

'अभिव्यक्ति' का 34वां अंक दिसम्बर, 2015 प्राप्त हुआ, धन्यवाद। साहित्यिक संचेतना को समर्पित स्वतन्त्र विचारों की संवाहक 'अभिव्यक्ति' राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ मानवीय मूल्यों की जतनकर्ता है। सामग्री रोचक, स्तरीय एवं विविधता की यह आकर्षक प्रस्तुति पाठक को एक सम्पूर्ण समाधान का अहसास दिलाता है। हिन्दी दिवस 14 सितंबर, 2015 के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति श्रीमान प्रणब मुखर्जी के विचार अति उपयोगी व महत्वपूर्ण हैं। डॉ. मिलिंद भोसकर का लेख 'प्राकृतिक आपदाएँ : आज भी एक चुनौती' तथा उज्वला निकालजे का 'खांसी' पाठक को दिधबद्ध सतर्क व मालुमात से परिचित कराता है। हिन्दी पखवाड़ा झलकियाँ तथा विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन सहकर्मियों में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम के उत्साह को बढ़ावा देता हैं। मनपूर्वक शुभेच्छा।

*- प्रा. डॉ. प्रकाश वि. जीवने*
*158, चंडिका नगर नं. 2,मानेवाडा बेसा रोड,*
*नागपुर - 440027 (महा.)*

जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति'का 34वां अंक पाकर अति प्रसन्नता हुई। अध्यक्ष जी के संदेश में ट्रस्ट की नवीनतम उपलब्धियों के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई है। निस्संदेह, इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रोचक, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक है। स्वास्थ्य विषयक 'खाँसी' पर लिखा लेख और आपदा प्रबंधन से संबंधित 'प्राकृतिक आपदाएं : आज भी एक चुनौती' नामक लेख अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। ट्रस्ट में सभी भुगतानों के लिए अपनाई गई पोर्ट कम्युनिटी सिस्टम (पी.सी.एस.) पर दी गई जानकारी भी अत्यन्त उपयोगी है। कुल मिलाकर इस पत्रिका का कलेवर तथा प्रस्तुतीकरण अत्यन्त आकर्षक है। इस अंक की साज-सज्जा व छपाई स्तरीय एवं सराहनीय है परन्तु इसकी प्रूफ रीडिंग में और अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। यदि इस पत्रिका में पत्तन के कार्यकलापों पर अधिक लेख शामिल किए जाएं तो इसकी उपयोगिता और अधिक बढ़ जाएगी। मैं, इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

*- सुनील कुमार*
*संयुक्त निदेशक (रा.भा.)*
*पोत परिवहन मंत्रालय,*
*नई दिल्ली - 110001*

*(संपादक की टिप्पणी: माननीय श्री सुनील कुमार जी अभी हाल ही में हमारे मंत्रालय में संयुक्त निदेशक(राजभाषा) के पद पर आसीन हुए हैं। आप सचिवालयीन राजभाषा सेवा के अधिकारी हैं। आपने जो उपर्युक्त प्रूफ रीडिंग का सामान्य रूपसे सुझाव दिया है, वह विशिष्ट रूप से इस प्रकार है कि पिछले अंक में हमने हिन्दी निबंध तथा कहानी लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं की रचनाओं को पहली बार यथारूप छापकर पाठकों के पढ़ने के लिए प्रस्तुत किया था जिससे कि एक तो तुलनात्मक रूप से सभी प्रतियोगी यह समझ पाएँ कि वे पुरस्कारों की दौड़ में अपने साथी प्रतिभागी से कैसे पीछे रह गए और साथ ही पाठक भी इतर हिंदी भाषी प्रदेशों में वहाँ की स्थानीय भाषा के प्रभाव में किए जा रहे हिन्दी लेखन की स्थिति का आकलन कर सकें। यह बात मैंने इन लेखों और कहानियों की पुष्पिका में भी स्पष्ट कर दी थी। यद्यपि पहले हम ऐसे लेखों और कहानियों का त्रुटि निराकरण करके ही छापते रहे हैं और ''अभिव्यक्ति'' की भाषा शुद्धता को लेकर एक पहचान रही है ,तथापि श्री सुनील कुमार जी की प्रतिक्रिया और इस कार्यालय के राजभाषा निरीक्षण के दौरान उनके आग्रह को देखते हुए हम फिर से इस प्रकार की रचनाओं को उनकी मौलिकता और रोचकता को बनाए रखते हुए इस बार शुद्ध करके छाप रहे हैं। सामान्यतया इस पत्रिका में यहाँ के विभागीय लेख और गतिविधियां ही प्रकाशित की जाती हैं। )*

मैं जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में एक छोटा सा हिन्दी सेवी हूँ। वर्तमान व्यवस्था में मेरी अपनी सीमाएँ हैं। विगत अस्सी के दशक से ही राजभाषा हिन्दी को पूरी सत्यनिष्ठा से अपनी सेवाएँ देता आ रहा हूँ। राजभाषा अधिनियम, 1963, उसके अंतर्गत बनाए गए राजभाषा नियम, 1976 व इनके स्पष्टीकरण तथा अनुपालन के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी किए गए आदेशों एवं प्रतिवर्ष हिन्दी की प्रगति को गति देने के लिए तैयार किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम का कार्यालय में अनुपालन कराना मेरे कर्तव्यों में शामिल है। पर इनके अनुपालन के लिए मुझे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। इनमें से किसी प्रावधान या उपबंध का उल्लंघन होने पर मैं उसके निराकरण के लिए स्वयं कोई कार्यवाही नहीं कर सकता हूँ। मुझे एक विनयावनत व्यक्ति की तरह संबन्धित उल्लंघनकर्ता के पास जाना पड़ता है। अक्सर तो वे मान लेते हैं, अनुपालन हो जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि वे अंग्रेजी के स्थान पर या उसके साथ-साथ हिन्दी को स्थान देना नहीं चाहते तो जब मजबूरन मुझे उच्च अधिकारियों से गुहार लगानी पड़ती है तो वे नाराज हो जाते हैं। वे यह नहीं समझते कि यह हिन्दी प्रभारी तो अपना कर्तव्य कर रहा है। उन्हें लगता है कि जब हम अंग्रेजी के माध्यम से आराम से अपना काम कर पा रहे हैं तो यह व्यक्ति बीच में हिन्दी का अड़ंगा लेकर क्यों आता है। यहाँ मेरी परेशानी यह है कि यदि मैं उनको समय-समय पर न टोकूँ या राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में उनकी शिकायत न करूँ तो फिर कार्यालय में राजभाषा नियमों के उल्लंघनों की बाढ़ सी आ जाती है। यद्यपि अनेक वर्षों से जब मैं यह प्रक्रिया दोहराता आ रहा हूँ तो अब सब राजभाषा हिन्दी के प्रावधानों के बारे में समझ गए हैं और अधिकतर अब ज. ने. प. न्यास में राजभाषा नियमों के उल्लंघन नहीं होते, तथापि स्थायी समाधान तो तभी हो सकता है जब उच्चस्तरीय अधिकारियों को मंत्रालयों या राजभाषा विभाग में निरंतर बुलाकर बहुत ही उच्च स्तर के अधिकारियों के द्वारा प्रशिक्षित किया जाए।

कार्यालय के अनेक कार्मिकों को तो राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) के इस उपबंध पर आपत्ति है कि मैं उसके अंतर्गत खासकर परिपत्र, आदेश, कार्यालय आदेश आदि को हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप से जारी करने पर ज़ोर क्यों देता हूँ। उनका कहना है कि अंग्रेजी नहीं तो हिन्दी में ही इन्हें जारी करने दिया जाए। दोनों भाषा में उन्हें जारी करने को क्यों कहा जाता है? इस कार्यालय में जब सभी को हिन्दी का अच्छा ज्ञान है तो इन्हें मात्र हिन्दी में ही क्यों न जारी किया जाए? मैं भी उनकी इस बात पर यह अपनी एक निजी राय रखता हूँ कि केन्द्र सरकार को धारा 3(3) के 13 दस्तावेजों में से पहले दस्तावेज़ 'सामान्य आदेश' को 'क' और 'ख' क्षेत्र के कार्यालयों के लिए हिन्दी में जारी करना अनिवार्य कर देना चाहिए अथवा यह विकल्प देना चाहिए कि यदि 'क' और 'ख' क्षेत्र में स्थित कोई कार्यालय चाहे तो अपने यहाँ इन्हें केवल हिन्दी में जारी कर सके।

इस यात्रा में मैंने यह भी अनुभव किया कि जो उच्च अधिकारी बड़े ही मिलनसार और हिन्दी प्रेमी थे एवं राजभाषा कार्यान्वयन में गहरी रुचि लेते थे, उनके साथ काम करना मेरे लिए बहुत आसान रहा और वे ही जो राजभाषा कार्यान्वयन की नींव रख गए अर्थात हिन्दी के सभी प्रकार के प्रशिक्षणों को उनके सहयोग से मैं पूरा कर सका और जो भी हिन्दी में काम करने के लिए सुविधाएं चाहिए थीं वे भी मिल सकीं जैसे, प्रारम्भ में एक बार मेरे अनुरोध पर ज ने प न्यास में केवल अंग्रेजी की सैकड़ों रबड़ की मोहरों को तोड़ा गया और उनके स्थान पर नियमानुसार हिन्दी तथा अंग्रेजी की द्विभाषी मोहरें बनाई गईं। नामपट्ट तो जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में पहले से ही द्विभाषी थे। किन्तु दूर-दूर तक फैले पत्तन क्षेत्र में जो भी केवल अंग्रेजी के साइन बोर्ड थे उन सबको तोड़कर फेंका गया। आज पत्तन क्षेत्र में कोई हमारा ऐसा साइन बोर्ड नहीं है जो हिन्दी ऊपर रखते हुए हिन्दी तथा अंग्रेजी में द्विभाषी न हो। इतना ही नहीं कार्यालय के सभी 200 अंग्रेजी के मैनुअल और इलेक्ट्रानिक टाइपराइटरों को हटाकर सभी द्विभाषी प्रकार के इलेक्ट्रानिक टाइपराइटरों को एक साथ खरीदकर प्रतिस्थापित किया गया। उसके बाद तो 1995 में ज ने प न्यास के सभी कार्यालयों में पूरी तरह से कम्प्यूटरीकरण हो गया और द्विभाषी साफ्टवेयर ही डाले गए। यह होने से राजभाषा कार्यान्वयन में बहुत तेजी आई। आज स्थिति यह है कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में सभी 670 पर्सनल कम्प्यूटर यूनिकोड की सुविधा से युक्त हैं और यह देखकर बड़ा अच्छा लगता है, जब चारों ओर से हिन्दी कार्यों और ई-मेल का आदान-प्रदान हिन्दी में होता है और जिग्ज़ेग कैरेक्टर अब नहीं आते। आज जो हम राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर पाए और निरंतर 10 बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार माननीय राष्ट्रपति जी के कर कमलों से ज. ने. प. न्यास के लिए प्राप्त कर सके हैं, उसका पूरा श्रेय मैं कार्यालय के उन्हीं हिन्दी प्रेमी उच्च अधिकारियों को देता हूँ जिन्होंने हिन्दी की बेहतरी के लिए हमारे द्वारा जो भी प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए, उन्हें बिना किसी संकोच के मंजूर किया। वह परंपरा आज भी जारी है। पर उनमें से एक महानुभाव ने मुझे कहा था कि जिस प्रकार से राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन केंद्रीय कार्यालयों में किया जा रहा है,वैसे तो हिन्दी सरकारी कामकाज में कभी भी अंग्रेजी का स्थान लेकर पूर्ण राजभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकेगी। गोवा में पुर्तगाली भाषा के स्थान पर अंग्रेजी कैसे स्थापित हुई। तुर्की में कमालपाशा ने कैसे वहाँ की भाषा तुर्की कोअपने यहाँ राजभाषा के रूप में स्थापित किया। यदि ऐसे ही इस बहुभाषी और विविधताओं के हमारे देश में दृढ़ इच्छाशक्ति से कोई कठोर निर्णय लिया जा सकेगा तो ही हिन्दी केन्द्र सरकार के कार्यालयों से अंग्रेजी को हटाकर पूर्ण राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकती है। मैं भी समझता हूँ कि जब तक सहायक राजभाषा के रूप में कार्यालय में काम-काज करने के लिए हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी का विकल्प मौजूद है, तब तक पूरी तरह हिन्दी राजभाषा का दर्जा कैसे ग्रहण कर सकती है, चाहे हम कितने ही उपाय क्यों न कर लें।

हिन्दी को प्रगतिशील रखने के लिए उसमें निरंतर अद्योपांत परिवर्तन की जरूरत है। हमारी गुरु-शिष्य परंपरा विलीन हो गई है। अब प्यासा कुएँ के पास नहीं जाता बल्कि कुएँ पानी पिलाने प्यासों के पास

जाते हैं, अन्यथा सब बोतलबंद पानी पी लेंगे और कुएँ जहाँ के तहाँ सड़ते रहेंगे। मेरे कहने का तात्पर्य है कि यदि केन्द्र सरकार के कर्मचारियों तथा अधिकारियों को अच्छी तरह हिन्दी में पारंगत करना है तो अपना तामझाम समेटकर हिन्दी सिखाने एक-एक कर्मचारी तथा अधिकारी तक जाना होगा। अब कैसे जाना है यह हिन्दी सिखाने वाले सोचें। मैं अपने इस कथन के प्रमाण में एक और तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ कि हमारे कार्यालयों के पुस्तकालय, जो कभी कार्यालय की शान हुआ करते थे, आज वहाँ किताबें पढ़ने और लेने कोई बिरला ही जाता है। इसके लिए कोई और नहीं ग्रंथपाल वर्ग को ही मैं दोषी मानता हूँ; क्योंकि वे यह सोचकर अपनी जगह पर ही बैठे रहे कि जिसकी गर्ज पड़ेगी वह हमारे पास आ जाएगा। काश! यदि ग्रंथपाल लोगों तक जाते और उन्हें नई-नई श्रेष्ठ पुस्तकों की जानकारी देते। ज्ञानार्जन का महत्व समझाते, तो कोई वजह नहीं थी कि कर्मचारी वर्ग ऑनलाइन रूप से मौजूद सस्ते साहित्य को पढ़ते जो कि लाभदायक कम और नुकसानदायक अधिक है। यदि आप हमारे ज ने प न्यास के केंद्रीय पुस्तकालय को ही देखें तो मराठी, हिन्दी तथा अंग्रेजी में कितना सुंदर संकलन है। सभी प्रकार के संदर्भ साहित्य की पुस्तकें, उपनिषद, पुराण साहित्य, संत साहित्य, मध्यकालीन साहित्य, आधुनिक साहित्य, देश-विदेश की पुस्तकों का हिन्दी में अनूदित साहित्य, भारत एक खोज, रामायण, महाभारत और तमस जैसे महान टीवी सीरियलों की डी वी डी और अनुवाद विज्ञान की पुस्तकों सहित हिन्दी में काम करने के लिए सभी प्रकार का सहायक साहित्य हमारे यहाँ मौजूद है। फिर भी, पुस्तकालय में पाठक नजर नहीं आते कारण कि उसके लिए समय की मांग के अनुसार परिवर्तन होना चाहिए था।

यह भी बड़ी विडम्बना है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में जो एक व्यवस्था चल रही है उसमें सुधार के लिए किसी का नाम लिए बिना सामान्य रूप से भी यदि हम कोई सुझाव दें,तो वह भी उस व्यवस्था के चलाने वालों को नागवार गुजरता है। मैं यह नहीं समझ पाता हूँ कि यदि हम सब राजभाषा कार्यान्वयन जैसे पावन कार्य में सहभागी हैं तो कुछ लोग यह भावना क्यों रखते हैं कि यदि चल रहे ढर्रे के विरुद्ध कुछ कहा गया है, तो यह उनकी शान के खिलाफ है। पर जब भी मुझे अवसर मिला है चाहे वह कोई राजभाषाई परिचर्चा मंच हो,राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को लेकर कोई लेख लिखा हो अथवा संपादकीय के माध्यम से हिन्दी के विषय में मैंने अपनी भावनाएँ व्यक्त की हों,मैंने पूरी निडरता से अपनी बात कही है। आखिर यह मेरा संवैधानिक अधिकार है कि मैं किसी व्यक्ति या संस्था का नाम लिए बिना, किसी व्यवस्था अथवा कार्य प्रणाली के बारे में अपनी राय व्यक्त कर सकता हूँ। अपनी बात कह सकता हूँ। यदि मेरी बात सही हो तो उसे ग्रहण करें अन्यथा अनुपयोगी समझकर जाने दें।

यह सब होने से कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि भले ही हम दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश हों पर अभी भी हमारा प्रजातन्त्र किताबों में ही अधिक है; क्योंकि हमारे यहाँ लोग दूसरों पर राज करना चाहते हैं। दूसरों से सहमति और सामंजस्य बनाकर नहीं चलना चाहते। इस व्यवस्था में कबीर बड़े समसामयिक हो गए हैं जो कहते हैं :

**संतौ देखउ जग बौराना।**
**साँच कहइ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना।**

पिछले दिनों पहली बार मैंने अपने सहयोगियों की मदद से पावर पॉइंट के माध्यम से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जिसके द्वारा हम अपने यहाँ के कर्मचारियों की हिन्दी में काम करने तथा रिपोर्ट आदि बनाने में आने वाली कठिनाइयों का काफी हद तक निराकरण कर सके। हमने हिन्दी पखवाड़ा पूरे जोशोखरोश से मनाया और राजभाषा विभाग के नए निदेशों का अनुपालन करते हुए हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने वाली अन्य प्रतियोगिताओं के साथ-साथ आई. टी. को हिन्दी में बढ़ावा देने के लिए वस्तुनिष्ठ कम्प्यूटर ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया और यह इस अर्थ में बहुत शानदार रहा कि इस प्रतियोगिता का योग्यता स्थिरांक 92 प्रतिशत पर जाकर ठहरा। इससे विदित होता है कि हमारे कर्मचारी तथा अधिकारी आई. टी.के क्षेत्र में भी कितने योग्य हैं और इस कंप्यूटर के युग में भी हिन्दी को किसी प्रकार भी अंग्रेजी से पिछड़ने नहीं देंगे।

पाठकों की मांग पर हम 'अभिव्यक्ति' के अंकों को अपनी वैबसाइट (http://www.jnport.gov.in) पर भी अपलोड करते हैं जिससे जिन्हें हम पत्रिका नहीं भेज पाते वे भी इस पत्रिका को पढ़ सकें। साथ ही, पाठकों ने अपनी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से जो भी हमारा मार्गदर्शन किया है अथवा हमें सुझाव भेजे हैं, उनको हमने यथासंभव इस अंक में पूरा किया है। इसके अलावा हमने इस पत्रिका में हिन्दी में लेख लिखने के लिए मानदेय में भी आकर्षक रूप से वृद्धि की है, पर इसका लाभ हमारे कार्यालय तथा केंद्रीय कार्यालयों के कर्मचारी तथा अधिकारी ही उठा सकते हैं।

इस पत्रिका में लेख लिखने के लिए मैं सभी लेखकों का हृदय से आभारी हूँ। इतना ही नहीं मैं इस पत्रिका पर अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजकर मार्गदर्शन करने वाले उन सभी पाठकों का भी आभारी हूँ जो हमें कोई लेख आदि तो नहीं भेजते किन्तु हमारी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के प्रकाशित होने का इंतजार करते हैं और अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें तुरंत अवगत कराते हैं जिसका परिणाम यह हुआ है कि पत्रिका अपनी साज-सज्जा, कलेवर और सामग्री आदि को लेकर पहले से काफी उन्नत हो गई है।

इन्हीं कुछ मेरे भाव पुष्पों के समर्पण के साथ 'अभिव्यक्ति' का यह 35 वाँ अंक हिन्दी प्रेमी पाठकों को सादर समर्पित है। आशा है वे पूर्व की भांति ही अपनी प्रतिक्रियाओं के द्वारा हमारा मार्गदर्शन करेंगे। राजभाषा नियम 2(ख) के अंतर्गत आने वाले केन्द्र सरकार के कार्यालयों के कर्मचारी तथा अधिकारी हमें अपनी रचनाएँ भी ऑनलाइन रूप से भेज सकते हैं। ऑनलाइन रूप से न भेजे गए लेखों को हम स्वीकार नहीं करते तथा पत्रिका पर प्रतिक्रिया भेजने वाले पाठक महानुभावों से भी मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे ऑनलाइन रूप से ही अपनी प्रतिक्रियाएँ मेरे ई-मेल पते santoshpathak@jnport.gov.in पर भेजें क्योंकि हम कागज का प्रयोग जितना भी हो, उसे टालकर बिनकागज रूप से कार्य करके पर्यावरण तथा वृक्ष संवर्धन में पूरी तरह से सहभागी होना चाहते हैं। आशा है हिन्दी सेवी पाठक तथा 'अभिव्यक्ति' के लेखक हमारी भावनाओं का सम्मान करेंगे तथा ऑनलाइन रूप से ही हमसे व्यवहार करके राजभाषा हिन्दी की प्रगति में सहयोग करेंगे।

**-संपादक**

**● जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास ने एक ही समय पर चार जलयानों का प्रहस्तन करने का कीर्तिमान बनाया :**

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास ने दिनांक 21 जुलाई, 2016 को मूरिंग डॉल्फ़िन संरचना का प्रयोग करके एक ही समय पर चार जलयानों का प्रहस्तन करने का कीर्तिमान बनाया। दोहरे घाटों पर चार जलयानों, यथा - नावे पलसर द्रव घाट -01 (एन) पर, एससी शांघाई द्रव घाट-01 (एस) पर, वावसन एमराल्ड द्रव घाट 02 (एन) पर और सुपरफ़ोर्ट द्रव घाट -02 (एस) पर प्रहस्तित किए गए। यह उपलब्धि बुनियादी सुविधाओं का अधिकतम उपयोग करके जनेप न्यास के यातायात विभाग और समुद्री विभाग जलयान मास्टर के सहयोग से निरंतरता रखने के कारण हासिल हुई है। पूर्व में 13 फरवरी, 2016 को जनेप न्यास ने दो जलयानों का एक ही समय में प्रहस्तन किया था जिनकी अधिकतम संयुक्त कुल लंबाई 342.10 मीटर थी जो पिछली अधिकतम संयुक्त कुल लंबाई 334.05 से अधिक थी।

**● भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन ने समुद्री उद्योग में बड़े पैमाने पर विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया :**

*महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री, श्री देवेंद्र फडनवीस का स्वागत करते हुए जनेप न्यास के अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भा प्र से.*

भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन दिनांक 14 से 16 अप्रैल, 2016 को मुंबई सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया और इसमें विभिन्न केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, राज्य मंत्रियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

जनेप न्यास का स्टॉल शिखर सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइन किए गए स्टालों में से एक था। शिखर सम्मेलन की

विशेषताओं में दो दिन का सम्मेलन, त्वरित व्यापार बैठकें और समुद्री क्षेत्र में निवेश के अवसरों पर विशेष सत्र रहा।

**● शिखर सम्मेलन में हस्ताक्षरित प्रमुख समझौता करार:**

भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन, 2016 में ज. ने. प. न्यास और आगामी परियोजनाओं के लिए जनेप न्यास में निवेश करने की इच्छा रखने वाले अन्य उद्द्योगों के बीच बहुत से समझौतों के करार हुए।

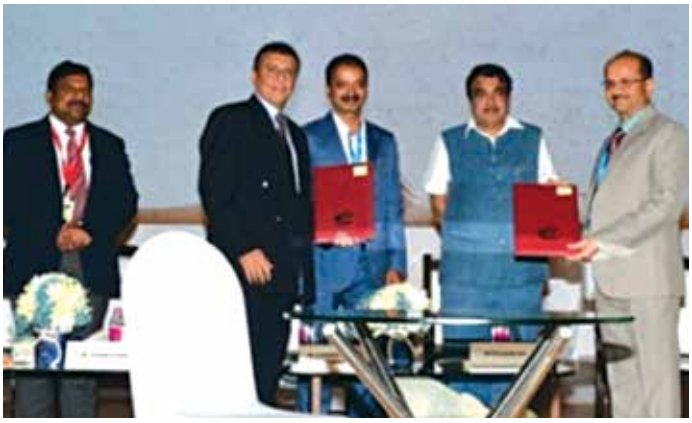

**● भारत - ईरान संबंधों को बढ़ावा :**

चबहर पत्तन समेत भारत-ईरान के बीच प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। चबहर पत्तन ईरान का एकमात्र ऐसा पत्तन है जिसकी हिन्द महासागर तक सीधे पहुँच है। भारत - ईरान के बीच हुए द्विपक्षीय समझौते के अनुसार वर्ष 2015 में भारत

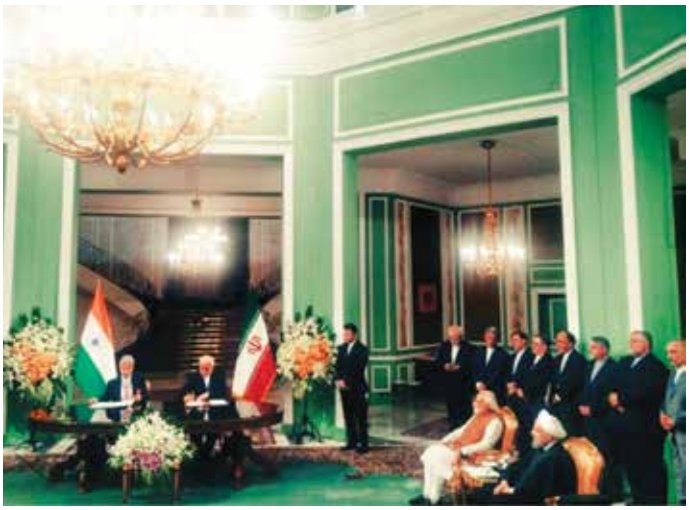

को चबहर पत्तन पर दो घाट विकसित करने का अधिकार दिया गया और इंडिया पोर्ट ग्लोबल (जनेप न्यास और कांडला पत्तन न्यास का संयुक्त उपक्रम) को ईरान के आर्या बंदर के साथ उसे भागीदारी में 10 वर्षों तक चलाने की अनुमति दी गई।

### ● जनेप न्यास में सबसे लंबे जलयान का प्रहस्तन किया गया :

*जनेप न्यास में एमएससी क्रिस्टीना जलयान के घाटायन के बाद केक काटते हुए अध्यक्ष तथा अन्य प्रमुख अधिकारी गण*

मुख पृष्ठ पर दिखाए गए एमएससी क्रिस्टीना जलयान (जो विश्व के सौ सबसे लंबे कंटेनर जलयानों में से एक है) का प्रहस्तन करके जनेप न्यास ने फिर से इतिहास रचा। इस जलयान की कुल लंबाई 365.96 मीटर है। यह जलयान 14.5 मीटर डुबाव में 13,102 टीईयू का वहन करता है। जने पत्तन में एमएससी क्रिस्टीना जलयान के आने पर केक काटने का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

### ● पत्तन में सौर पैनल की संस्थापना

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास अपने नगरक्षेत्र तथा वाणिज्यिक इमारतों की कुछ छतों पर सौर ऊर्जा संयत्र संस्थापित कर रहा है जिससे कि पम्परागत बिजली के लिए ग्रिड पर निर्भरता कम की जा सके। इस परियोजना से एक वर्ष में 9.9 लाख यूनिट बिजली का निर्माण होगा जिससे पत्तन के लिए बिजली पर हो रहे व्यय में लगभग 1.08 करोड़ की बचत होगी। पत्तन नगरक्षेत्र में स्थित विद्यालयों की छत पर संस्थापित सौर ऊर्जा संयत्रों से छात्रों में संपोषणीय ऊर्जा के बारे में जागरूकता आएगी।

### ● देश में पहली बार जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में कंटेनरों की लॉजिस्टिक डाटा टैगिंग का कार्यान्वयन

दि.1 जुलाई, 2016 को जवाहरलाल नेहरू पत्तन कंटेनरों की लॉजिस्टिक डाटा टैगिंग का कार्यान्वयन करने वाला देश का पहला पत्तन बन गया है। इस सुविधा से आयातकर्ताओं/ निर्यातकर्ताओं को लॉजिस्टिक डाटा बैंक सेवा के माध्यम से पारगमन के दौरान अपने माल का पता लगाने में मदद मिलेगी। यह पत्तन द्वारा व्यापार के हित के लिए दस्तावेज़, समय तथा लागत में कमी लाने को ध्यान में रखते हुए 'व्यापार की सुगमता' के लिए की गई महत्वपूर्ण पहल है।

### ● जनेप न्यास ने दो जलयानों का एक साथ घाटायन कर पिछला कीर्तिमान ध्वस्त किया :

13 फरवरी, 2016 को जनेप न्यास ने दो जलयानों (एमटी गिंगा पैंथर और एमटी एटलॉंटिक पोलारिस) को एक ही समय पर एक साथ स्थान देकर पिछले वर्ष के कीर्तिमान को ध्वस्त करते हुए नया कीर्तिमान स्थापित किया। इन जलयानों की कुल लम्बाई 342.10 मीटर थी।

यह उपलब्धि जनेप न्यास के यातायात विभाग और समुद्री विभाग के जलयान के अधिपति द्वारा उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं का अधिकतम उपयोग करने के लिए किए गए निरंतर

सहयोग से प्राप्त हुई और इससे तरल कार्गो जलयानों के घाटायन पूर्व निरोध को कम करने में सहायता मिलेगी।

### ● जनेप न्यास में तीन मोबाइल स्कैनरों की स्थापना

जवाहरलाल नेहरू पत्तन कंटेनरों की लंबी कतारों को कम करने के लिए अगले छः महीनों में और तीन कंटेनरों की संस्थापना करने के लिए रु. 150 करोड़ का निवेश करने जा रहा है। वर्तमान में केवल द्रोणागिरि तथा ज.ने.कंटेनर टर्मिनल में ही इस प्रकार के स्कैनर लगाए गए हैं। 'व्यापार की सुगमता' के लिए पत्तन में इस पहल का आरंभ किया है जिससे पत्तन दुनिया के सर्वोत्कृष्ट पत्तनों के साथ और अधिक प्रतिस्पर्धा कर सकता है तथा उनके समकक्ष बन सकता है।

### ● कच्चे तेल की लदाई का तीन वर्ष पुराना कीर्तिमान ध्वस्त :

जनेप न्यास ने एमआरपीएल तेल शोधक कारखाने जाने वाले भारतीय नौवहन निगम के कच्चे तेल के टैंकर एमटी महर्षि परशुराम पर 70,161.536 मी. टन कच्चे तेल की लदाई करके एक और कीर्तिमान स्थापित किया। पिछले तीन वर्षों के दौरान किसी जलयान पर भरी गई कच्चे तेल की यह सर्वाधिक मात्रा है। यह देश के विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों के प्रयासों की एकरूपता का उदाहरण है। इसके अलावा, अधिक गहराई और बुनियादी संरचनाओं के साथ जनेप न्यास अब अधिक गहरे जलयानों का पसंदीदा पड़ाव है।

### ● वाढवण पत्तन में वर्ष 2021-22 तक कार्य आरंभ होगा

मुंबई से लगभग 150 कि.मी. की दूरी पर डहाणू में रु. 2500 करोड़ के निवेश से एक नए नौवहन टर्मिनल के विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनुमति दिए जाने के बाद महाराष्ट्र में वाढवण पत्तन नामक तीसरा सबसे बड़ा पत्तन बनने जा रहा है। श्री नीरज बंसल, उपाध्यक्ष, जनेप न्यास के अनुसार सरकार ने केंद्र और राज्य सरकार के बीच सहयोग से पत्तन का विकास करने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि वाढवण परियोजना में प्रस्तावित रु. 2500 करोड़ के निवेश में जनेप न्यास की 74 प्रतिशत इक्विटी होगी जबकि महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड की 26 प्रतिशत इक्विटी होगी। हमें और पत्तनों की आवश्यकता है और डहाणू के निकट स्थान बहुत काम का है क्योंकि वहाँ पर भविष्य में समुद्र द्वारा कार्गो के आवागमन के लिए बहुत उपयुक्त गहराई है। बल्क कार्गो और बड़े जलयानों के लिए 16 मी. या अधिक की गहराई आवश्यक होती है।

### ● महाराष्ट्र के समुद्री किनारों पर समुद्र की सफाई के लिए जनेप न्यास ने भारतीय तटरक्षक बल से हाथ मिलायाः

भारत के नं. 1 कंटेनर पत्तन - जनेप न्यास ने दि. 17 सितम्बर, 2016 को 'अंतरराष्ट्रीय तटीय साफसफाई दिवस' के अवसर पर महाराष्ट्र के प्रमुख समुद्री किनारों पर साफसफाई के लिए भारतीय तटरक्षक बल के साथ साझेदारी की।

यह तटीय साफ सफाई अभियान जुहू, गिरगाँव, दादर, रत्नागिरि, मुरुड, डहाणू और विभिन्न अन्य स्थानों पर तटरक्षक बल, विद्यालय के छात्रों और प्रमुख संगठनों के स्वयंसेवकों के सहयोग से चलाया गया। यह अभियान जनेप न्यास के पहले से जारी स्वच्छ भारत अभियान का हिस्सा था।

### ● पुरस्कार

1) जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को 'वर्ष का कंटेनर टर्मिनल प्रचालक' की श्रेणी में प्रतिष्ठित माला अवार्ड (अखिल भारतीय समुद्री तथा परिवहन पुरस्कार) प्राप्त हुआ है। दि. 28 सितम्बर, 2016 को मुंबई में आयोजित समारोह में पत्तन के अध्यक्ष श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से., ने यह पुरस्कार नौवहन

महानिदेशक एवं भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव, श्री दीपक शेट्टी, भा.रा.से. के हाथों से ग्रहण किया।

2) जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2015-16 का प्रतिष्ठित 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त हुआ है। दि. 14 सितम्बर, 2016 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक शानदार समारोह में भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी के करमलों से पत्तन के अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से., ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

*मा. राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के करकमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त करते हुए पत्तन के अध्यक्ष श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से.*

# अभिनंदन

ज.ने.पत्तन के कंटेनर टर्मिनल में कार्यरत कनिष्ठ अभियंता श्री नागेश भोईरकर के सुपुत्र कुमार संकेत भोईरकर संयुक्त राज्य अमरीका के टेक्सास विश्वविद्यालय, अर्लिंग्टन से एम. एस. की परीक्षा में विशेष गुणवत्ता के साथ उत्तीर्ण हुए हैं।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार संकेत को हार्दिक बधाई।

ज. ने. पत्तन के यातायात विभाग में कार्यरत कनिष्ठ अभियंता, श्री विलास सी.ठाकुर के सुपुत्र कुमार सुयोग विलास ठाकुर को मार्च, 2016 में संपन्न दसवीं की परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार सुयोग को हार्दिक बधाई।

ज. ने. पत्तन में कार्यरत तकनीशियन श्री प्रदीप मेहता के सुपुत्र कुमार कौशिक प्रदीप मेहता को मार्च, 2016 में संपन्न दसवीं की परीक्षा में 90.40 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार कौशिक को हार्दिक बधाई।

## अंतरराष्ट्रीय ट्रॉमा सपोर्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास के अस्पताल में सेवारत डॉ. मिलिंद भोसकर, चिकित्सा अधिकारी, अस्पताल के औद्योगिक चिकित्सा विभाग के प्रभारी हैं। आपने सिंबायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ साइन्स, पुणे से ''इंटरनेशनल ट्रॉमा लाइफ सपोर्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम'' 82 प्रतिशत अंकों के साथ पूरा किया। इससे उन्हें अपघात रोगियों का इलाज प्रभावी और कुशल रूप से करने में मदद मिलेगी। यह प्रमाणीकरण कार्यक्रम संयुक्त राज्य अमेरिका और साथ ही दुनिया भर के अन्य संगठनों एवं कई एजेंसियों द्वारा आपातकालीन चिकित्सा के क्षेत्र में सेवाएँ देने के लिए अवश्यक माना जाता है।

डॉ. भोसकर अपने कार्य के अलावा कार्यालय में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में भी उत्साहपूर्वक योगदान करते हैं और हिन्दी संबंधी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से डॉ. भोसकर को हार्दिक बधाई।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में

## पत्तन में स्वतंत्रता दिवस समारोह

दि. 15 अगस्त, 2016 को जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में भारत का 70 वां स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर पत्तन के अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से., ने ध्वजारोहण करके समारोह का आरंभ किया।

अध्यक्ष महोदय ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पत्तन के सभी कर्मचारी/ अधिकारी, कें.औ.सु. बल के जवानों, भागीदारों, पत्तन उपभोक्ताओं, विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा उपस्थित सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों और सैनिकों के प्रति हार्दिक श्रध्दांजली अर्पित की जिन्होंने भारत को विदेशी शासकों से स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। इसके साथ ही उन सभी जवानों को भी श्रध्दांजली अर्पित की जिन्हें आतंकियों के साथ लड़ते समय तथा हमारी सुरक्षा के लिए देश की सीमा पर शत्रु के साथ लड़ते समय वीरगति प्राप्त हुई थी।

इसके बाद अध्यक्ष महोदय ने संक्षेप में पत्तन की वर्ष 2015-16 की उपलब्धियों से सभी को अवगत कराया। उन्होंने आगे कहा कि ये उपलब्धियां पत्तन के सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं थीं।

उन्होंने कहा कि हमारे पत्तन ने वित्त वर्ष 2015-16 के दौरान 64.03 मिलियन टन माल का प्रहस्तन किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 0.35 प्रतिशत अधिक है। इसमें 56.79 मिलियन टन कंटेनरबंद कार्गो, 6.50 मिलियन टन द्रव कार्गो तथा 0.73 मिलियन टन विभिन्न प्रकार का सूखा तथा थोक माल शामिल है।

आगे उन्होंने यह भी कहा कि हमारे पत्तन ने इस वर्ष कुल 4.49 मिलियन टीईयू कंटेनर यातायात का प्रहस्तन किया है जो पत्तन के आरंभ से अब तक का सबसे अधिक प्रहस्तन का कीर्तिमान है। इस कीर्तिमान के लिए हमने पिछले वर्ष बहुत मेहनत की थी तथा हमारे सभी संसाधनों का प्रभावी रूप से उपयोग किया था। इसके साथ ही हमने हमारे बहुमूल्य ग्राहकों के सुलभ व्यापार के लिए अनेक प्रकार की पहल की थी तथा प्रपत्र 11 तथा 13 को हटा दिया गया, अंतरटर्मिनल टी टी गतिविधि शुरू की है, सभी एसीपी ग्राहकों के लिए सीधे पत्तन में सुपुर्दगी की सुविधा शुरू की है।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हम औरंगाबाद के नजदीक जालना में तथा नागपुर के नजदीक वर्धा में ड्राइ पोर्ट भी बनाने जा रहे हैं। इसके साथ ही वर्तमान में जनेप न्यास में हो रही भीड़ तथा डुबाव को देखते हुए डहाणू के नजदीक वाढवण में एक सैटेलाइट पोर्ट बनाने जा रहे हैं। इसे हम एक कारपोरेट पत्तन के रूप में विकसित करेंगे जिसे महाराष्ट्र सरकार के साथ भागीदारी में बनाया जाएगा। हमने चौथे कंटेनर टर्मिनल का विकास करने के लिए पोर्ट ऑफ सिंगापुर अथारिटी की सहायक कंपनी मेसर्स भारत मुंबई कंटेनर टर्मिनल लि. के साथ छूट करार पर दि. 6 मई, 2014 को हस्ताक्षर किए हैं। हमने पत्तन आधारित विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने का भी निर्णय लिया है। इसके साथ ही एक अतिरिक्त द्रव बल्क टर्मिनल बनाने की भी प्रक्रिया चल रही है। हमने यातायात की भीड़ को कम करने के लिए अनेक कदम उठाए है। इसीके तहत दिल्ली और मुंबई - जनेप न्यास के बीच एक डेडिकेटेड फ्रेट कॉरीडोर बनाने का कार्य रेलवे मंत्रलाय ने शुरू किया है।

अध्यक्ष महोदय ने सेंट मेरी जनेप विद्यालय के उन सभी छात्र-छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन किया जिन्होंने विविध परीक्षाओं में तथा अन्य प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि लगातार बारहवें वर्ष सेंट मेरी जनेप विद्यालय की दसवीं परीक्षा के परिणाम 100 प्रतिशत आए हैं। दसवीं की परीक्षा में कुमारी वैभवी आर

कोली 93.60 अंकों के साथ विद्यालय में प्रथम तथा उरण तालुका में चौथी आई। इसके साथ ही वर्ष 2015-16 में हुई एमटीएस परीक्षा में कुमार मुकुल ऐगलीकर को तालुका स्तरीय पुरस्कार तथा कुमार शिवम म्हात्रे, कुमार सर्वेश डोंगरे, कुमार रुजल मोकल तथा कुमारी कशिश भावसार को विशेष पुरस्कार और कुमार अथर्व तांडेल को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा एनएमएमसी, वाशी द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में कुमारी हर्षदा गावड़े 13 वर्ष के समूह में सिंगल तथा डबल्स में विजेता रहीं और 15 वर्ष के समूह में उप-विजेता रहीं। नेरुल में सम्पन्न बैडमिंटन प्रतियोगिता में भी कुमारी हर्षदा को नक़द रु. 1500/- का पुरस्कार मिला तथा कुमार शैलेश सिंह 13 वर्ष के आयु समूह में डबल्स में विजेता रहे और कुमारी परिणीता मगदूम 13 वर्ष के आयु समूह में सिंगल्स में तथा 15 वर्ष के आयु समूह में डबल्स में विजेता रहीं।

जनेप आईईएस के 08 छात्रों ने दसवीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं। अंग्रेजी माध्यम में कुमारी मानसी प्रदीप घरत 94.53 प्रतिशत अंकों के साथ दसवीं की परीक्षा में विद्यालय में प्रथम आईं तथा मराठी माध्यम में कुमार सिद्धेश्वर दत्त जावरे 94.53 प्रतिशत अंकों के साथ विद्यालय में प्रथम रहे। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी इस विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने छात्रवृत्ति परीक्षा में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

अध्यक्ष महोदय ने पत्तन की उन सभी टीमों का भी अभिनंदन किया जिन्होंने विभिन्न खेलों में पदक जीते हैं। कांडला पत्तन में आयोजित अखिल भारतीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता में हमारी सांस्कृतिक टीम ने चैम्पियनशिप जीती है, वी.ओ.सी चिदंबरनार पत्तन न्यास में आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन एथलीट चैंपियनशिप प्रतियोगिता में हमारी एथलीट टीम उप-विजेता रही तथा कामराजर पत्तन लि. में आयोजित अखिल भारतीय महापत्तन बैडमिंटन प्रतियोगिता में हमारी बैडमिंटन की वेट्रन टीम तृतीय स्थान पर रही।

हमारे पत्तन को वर्ष के सर्वोत्कृष्ट कंटेनरीकृत पत्तन के लिए वित्तीय वर्ष 2015-16 का 'इंडिया मैरीटाइम अवार्ड' भी मिला है। इन सभी उपलब्धियों के लिए उन्होंने सभी का फिर से अभिनंदन किया।

अध्यक्ष महोदय ने कें.औ.सु.बल की जनेप इकाई का भी अभिनंदन किया क्योकि पत्तन की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का योगदान महत्वपूर्ण है।

अंत में अध्यक्ष महोदय के सभी को शुभकामनाएँ अर्पित करने के साथ ही कार्यक्रम समाप्त हुआ।

**भूल सुधार :** अभिव्यक्ति के पिछले अंक में अखिल भारतीय महापत्तन एथलीट चैंपियनशिप प्रतियोगिता का आयोजन स्थल पारादीप पत्तन बताया गया था जबकि उक्त प्रतियोगिता वी ओ सी. चिदंबरनार पत्तन न्यास, तूत्तुकुडी में आयोजित हुई थी। भूल के लिए खेद है।

## अध्ययन दौरा

जेएनपीटी डिप्लोमा इंजीनियर्स असोसिएशन अभियंताओं के ज्ञानवर्धन के लिए पिछले नौ वर्षों से विभिन्न तकनीकी संस्थानों के दौरे आयोजित कर रहा है। इस वर्ष दिनांक-27 नवंबर, 2016 को पुणे जिले के जुन्नर तालुका में विघ्नहर चीनी कारख़ाने का अध्ययन दौरा आयोजित किया गया। विघ्नहर चीनी कारखाने के निदेशक, श्री सुरेश गडगे और अध्यक्ष, श्री सत्यशील शेरकर ने विधिवत रूप से अनुमति देकर सहयोग दिया ।

विघ्नहर चीनी कारख़ाना जेएनपीटी से लगभग 180 कि. मी. दूर छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मस्थान शिवनेरी किले और विघ्नहर गणेश मंदिर से कुछ दूरी पर स्थित है। जेएनपीटी अभियंताओं के दल के दोपहर को पहुँचने पर मुख्य अभियंता, श्री नलावड़े और अभियंता श्री जोशी द्वारा सभी जेएनपीटी अभियन्ताओं को दो दलों में बाँटकर कारखाने की पूरी जानकारी दी गई । इस कारखाने के मुख्य तीन विभाग हैं:

**चीनी उत्पादन विभाग:** इसमें लगभग 6000 मीट्रिक टन गन्ना लाया जाता है जिसे क्रशिंग मशीन में डालकर और उसके बाद विभिन्न प्रक्रियाएँ करके लगभग 700000 किलोग्राम चीनी का उत्पादन किया जाता है।

**बिजली उत्पादन विभाग:** गन्ने के रस से चीनी बनाकर जो कुछ शेष रह जाता है उसे कारखाने के बॉयलर में जलाकर टर्बाइन से लगभग 18 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाता है। 9 मेगावाट कारखाने के लिए प्रयोग की जाती है और शेष 9 मेगावाट महाराष्ट्र राज्य विद्युत मण्डल को बेची जाती है।

**इथनॉल उत्पादन विभाग:** विदेश से आयात किए जानेवाले पेट्रोल पर देश काफी डॉलर खर्च कर रहा है जिसमें कुछ हद तक कमी लाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने चीनी कारखानों में निर्मित इथनॉल पेट्रोल में मिलाने का निर्णय लिया है और अभी 2 से 3 प्रतिशत इथनॉल पेट्रोल में मिलाया जाता है जिसे 5 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जबकि विकसित देशों में इथनॉल का प्रयोग 10 प्रतिशत तक किया जाता है। विघ्नहर चीनी कारख़ाने में वर्ष 2006 से इथनॉल का उत्पादन आरंभ किया गया और आज लगभग 28200 लिटर इथनॉल उत्पादित करके हिंदुस्तान पेट्रोलियम और इंडियन ऑइल जैसी सरकारी कंपनीयों को बेचा जाता है।

विघ्नहर चीनी कारखाने की स्थापना वर्ष 1984 में हुई और इसमें कुल 1145 कर्मचारी और अधिकारी कार्यरत हैं। विघ्नहर चीनी कारखाने को केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

इस प्रकार कारखाने के सभी विभागों की जानकारी हासिल करके और संस्थान के प्रबंधन को धन्यवाद देकर श्री क्षेत्र ओझर के विघ्नहर्ता गणेशजी के दर्शन करने के साथ ही जेएनपीटी अभियन्ताओं के अध्ययन दौरे का समापन हुआ।

*(सूचना स्रोत: श्री जी.यू.कोल्हे, सहायक अभियंता)*

# सुरक्षित क्रेन प्रचालन कब और कैसे

शेखर र. मालवदे
*अधीक्षक*

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में सबसे ज्यादा किसी कार्गो की आवाजाही होती है, तो वह है 'कंटेनर कार्गो'। स्वाभाविक तौर पर जहाज पर कंटेनरों को चढ़ाना या उतारना, यही पत्तन के कामों में सबसे एक प्रमुख काम होता है। इसीलिए हमारे पत्तन में कंटेनर लादने-उतारने वाली क्रेनें बड़ी मात्रा में कार्यरत हैं। इन क्रेनों को चलाने के लिये हमारे यहाँ तीनों पारियों में क्रेन चालकों की फौज तैनात है। वे चालक बंधु सुरक्षित रूप से क्रेन चला पाएँ, इसके लिए उपयुक्त मार्गदर्शन प्रस्तुत कर रहा हूँ :

कोई भी काम अच्छे ढंग से हो, इसके लिये हमारा मन स्थिर होना आवश्यक है। शुरुआत करने से पहले दो तीन मिनट अपने आप के लिये दें। अपनी साँसों पर ध्यान दें। लंबी-लंबी साँसें लेकर अपने मन को तनावमुक्त एवं शांत करें।

कुछ महत्त्वपूर्ण चीजों का होना आवश्यक है। उनका होना निश्चित करें। क्रेन के केबिन की खिड़कियों के काँच साफ हैं, यह जरूर देख लें। जरूरत होने पर साफ करवा लें।

चालक यह देख लें कि केबिन में नट, बोल्ट, आदि, चीजें नीचे खुली नहीं पड़ी हैं।

चालक कुर्सी को अपनी सुविधानुसार आगे पीछे, ऊपर नीचे करवा लें, ताकि उनकी पीठ या कमर पर अतिरिक्त, असहज तनाव न हो और नीचे का दृश्य दिखाई देने में कोई बाधा न हो।

क्रेन चालू होते ही स्प्रेडर ऊपर रख कर ट्रॉली को आगे पीछे ले जाकर कार्यक्षेत्र की प्राथमिक जाँच करें, और उसके बाद ही काम शुरू करें।

आपातकालीन (emergency) स्विच कहाँ पर है यह सबसे पहले अवश्य जान लें, और अंत में, अग्निशमन सुविधा भी मौजूद है कि नहीं यह भी जरूर देख लें।

अब हम क्रेन चलाने के लिए तैयार हैं। चलाते वक्त कुछ तौर तरीके ध्यान से अपनाने होंगे।

अपने दोनों हाथ ज्यादातर जॉयस्टिक्स पर रखें। क्रेन की यात्रा की दिशा का बाहरी दृश्य बिलकुल साफ हो, और चलने के सायरन एवं बत्तियाँ चालू होनी चाहिये। यह निश्चित करें।

क्रेन चलते समय स्प्रेडर सुरक्षित ऊँचाई पर उठाया हुआ होना चाहिए। ज्यादा नीचे लटका हुआ स्प्रेडर नीचे किसी चीज से टकरा सकता है, यह ध्यान रखें।

जॉयस्टिक्स एवं स्विचों का परिचालन हल्के हाथों से करें। नियंत्रण पैनल के स्विचों के साथ जोर जबरदस्ती न करें। अगर वे ठीक से न चल रहे हों तो रखरखाव करनेवालों को सूचित कर दें।

स्प्रेडर के धातु के रस्सों को ज्यादा ढिलाई या झटका न दें। बहुत ज्यादा ढील देने पर वे कहीं फँस सकते हैं और दुर्घटना हो सकती है। साथ ही झटके से रस्सों को हानि पहुँच सकती है। झटके से कंटेनर उठाने या नीचे रखने से बचें। दोनों ही क्रियाओं में हल्के हाथों से प्रचालन करें।

क्रेन की सुरक्षित क्षमता (SWL) से ज्यादा वजन का कंटेनर न उठाएँ। वजनदर्शी पर ध्यान रखें। निर्धारित क्षमता (SWL) से ज्यादा वजन उठाना दुर्घटना को न्यौता देना है।

क्रेन के नीचे, आसपास चलते हुए लोगों के साथ दुर्घटना होने की संभावना बहुत ज्यादा होती है। लोगों को हार्न बजाकर चेतावनी देते रहिए या उद्घोषणा प्रणाली पर उद्घोषणा करके कार्य क्षेत्र से उन्हें दूर हटने को कहें।

जब कंटेनर लटकती हुई स्थिति में हो तो क्रेन छोड़कर कतई न जाएँ। यह बहुत गंभीर स्थिति है। उठाया हुआ कंटेनर जल्द से जल्द सही जगह पर रखें।

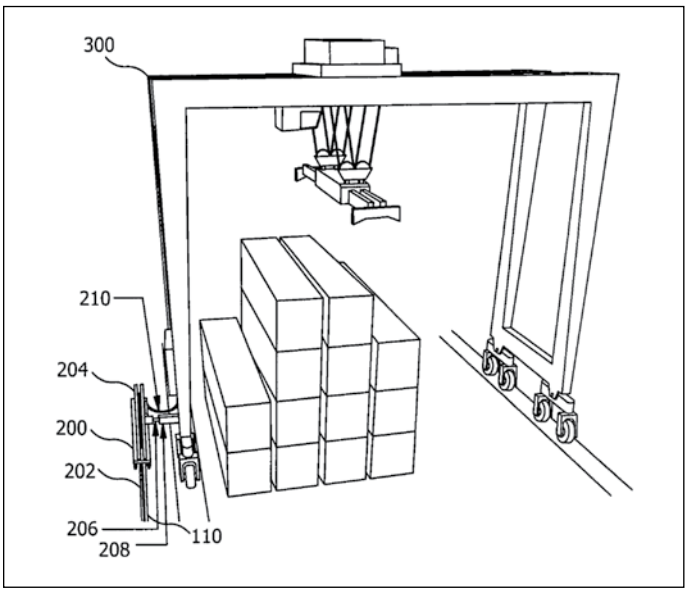


कंटेनरों की स्टैकिंग अर्थात उन्हें एक दूसरे पर रखते समय कंटेनर को उसके निचले कंटेनर पर चारों कोनों से बराबर मिलाकर बिठाएँ। टेढ़े-मेढ़े तरीके से की गई स्टैकिंग से दुर्घटना हो सकती है।

कंटेनर को लोगों के ऊपर से लेकर न जाएँ। कंटेनर के नीचे चिपके पत्थर गिरने से उन्हें गंभीर चोट आ सकती है। कभी कभी लॉक के टुकड़े भी कंटेनर के साथ लटक कर आ सकते हैं और गिरकर दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। लोगों को कार्यक्षेत्र से दूर ही रखा जाना चाहिए।

ट्रॉली चलाने से पहले कंटेनर सुरक्षित ऊँचाई पर उठा लें नहीं तो वह बीच की किसी चीज से टकरा सकता है।

कंटेनर उठाने से पहले स्प्रेडर के चारों लॉक पूरी तरह से घूमे हैं या नहीं यह परख लेना जरूरी है। चारों लॉक घूम चुके हैं या नहीं यह जानने के लिए कंटेनर उठाने की क्रिया का आरंभ धीरे से करें। अगर कोई लॉक सही तरह से लगा नहीं होगा तो वहां से स्प्रेडर टेढ़ा होता नजर आएगा। तभी स्प्रेडर फिर से नीचे रखकर अनलॉक करके सीधी तरह कंटेनर पर रखें और लॉक कर दें।

गति के नियमानुसार प्रचालन करते समय ट्रॉली का झूलना स्वाभाविक है। ट्रॉली चलाते समय स्प्रेडर कम से कम झूले इस पर ध्यान दें। स्प्रेडर का झूलना बंद करने के लिये ट्रॉली को स्प्रेडर के झूलने की दिशा में लेकर जाएँ। यह अनुभव प्रयास करने से ही हो पाएगा। स्प्रेडर का कम से कम झूलना यह अच्छे क्रेन चालक की निशानी है। क्रेन में लगी एंटी स्वे मेकेनिस्म इसमें काफी हद तक मददगार होगी। पर क्रेन चालकों को खुद इस पर ध्यान देना जरूरी है। इसके लिए जॉयस्टिक्स को शुरू में हलके से दबाएँ और धीरे धीरे बढ़ाते या कम करते हुए नियंत्रण में रखें। जॉयस्टिक्स को कितना दबाने से कितनी गति मिलती है, यह अंदाजा होने के बाद यह कार्य आसान हो जाएगा। जहाँ पर जाकर हमें रुकना हो, उसके थोड़ा पहले ही रुकें और जैसे ही स्प्रेडर झूलकर आगे जाए, हमें ट्रॉली को उसके ऊपर ले जाना चाहिए ताकि झूलने की शून्य स्थिति आ जाये और झूलना बंद हो जाए।

कंटेनर और ट्रॉली एक दूसरे की बिलकुल सीध में हों यह निश्चित करें और बाद में ही कंटेनर उठाना शुरू करें। ऐसा न करने पर गुरुत्वबल के कारण कंटेनर ट्रॉली के नीचे आने की कोशिश करेगा और किसी चीज से टकरा सकता है एवं तब उस पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रह पाएगा।

कंटेनर उठाते वक्त वैगन या ट्रेलर के चारों लॉक्स खुले हैं या नहीं यह निश्चित कर लें। इसके लिये प्रारम्भिक आज्ञा (command) धीरे-धीरे दें।

काम की जगह पर आवश्यक रोशनी होनी चाहिये, अंधेरे में काम न करें। जरूरत होने पर फ़्लड लाइटें जलाएँ। ट्रॉली से जुड़ी फ़्लड लाइटें बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे आवश्यक स्थान को प्रकाशित करती हैं।

क्रेन की कुर्सी पर इस प्रकार से बैठें कि पीठ या कमर पर अतिरिक्त तनाव न हो। कुर्सी की स्थिति अपने हिसाब से आरामदायक बना लें। अपने शरीर को आरामदेह स्थिति में रखने से ज्यादा देर तक काम कर सकते हैं। लंबे समय तक एक ही स्थान पर काम करना टालें। अपने रिलीवर साथी के साथ काम का समय छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट लें। इससे शरीर को कम कष्ट होगा और उत्पादकता भी बढ़ेगी।

संपर्क एवं सूचनाओं के लिये संकेत चार्ट, सार्वजनिक घोषणा प्रणाली एवं वी.एच.एफ आदि कैबिन में लगाए गए हैं।

उनका सही उपयोग करें। वी.एच.एफ का महत्व जानिए। उस पर बोलने का तरीका सीख लीजिये। अपनी बात साफ साफ और कम से कम शब्दों में बताएँ एवं उत्तर पाने के लिए स्विच छोड़ दें। उसका असंगत उपयोग न करें। दूसरे उपयोक्ता को बोलने का मौका दें। उस पर सिर्फ काम की ही बात करें।

यार्ड में रबर टायर गंत्री क्रेन (RTG) को दूर तक चलाते समय क्रेन के इंजिन की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। उसकी स्टियरिंग को उपयोग में लाना सीखें। जब तक ऑटो प्रणाली कार्यरत है, उससे छेड़खानी न करें। इंजिन की तरफ विशेष ध्यान देना जरूरी है। अगर इंजिन की तरफ का दृश्य दिख नहीं रहा हो तो अपने चेकर साथी की मदद लें।

इसी तरह रबर टायर गंत्री क्रेन (RTG) को क्रॉस ट्रैवल कराते समय हमेशा सतर्क और अपने जमीनी सहयोगियों के संपर्क में रहें क्योंकि यार्ड में चलने वाले ट्रेलर आदि वाहन इस कार्रवाई से हड़बड़ा सकते हैं। रबर टायर गंत्री क्रेन (RTG) को लॉंग या क्रॉस ट्रैवल कराते समय कंटेनर उठाया हुआ न हो। कंटेनर को दूसरी जगह पर भेजने के लिए ट्रेलर पर रखवा दें और वहाँ पहुँचने पर उसे उतार लें।

किसी कारण से अगर कंटेनर का दरवाजा खुल जाए तो उसे तुरंत बंद करवा लें। दरवाजा खुला रखकर प्रचालन कतई न करें। इसमें बहुत सारे खतरे हैं।

ट्विन कंटेनर उठाने के बाद 40 फीट कंटेनर उठाने से पहले ट्विन मोड बंद करना न भूलें। ट्विन स्प्रेडर का प्रयोग बड़ी सावधानी के साथ करें। स्प्रेडर को धकेलने या धक्का देने के लिये कतई प्रयोग न करें।

ट्रेलर पर कंटेनर हल्के से रखें। झटके से रखा गया कंटेनर ड्राइवर एवं गाड़ी को नुकसान पहुँचा सकता है।

लैशिंग मैन अपने काम में उलझे रहते हैं। वे आपके भरोसे पर इतने साहस और कठिनाई का काम करते हैं। उन्हें चोट न पहुँचे, इस पर बहुत ध्यान दें। उन्हें स्प्रेडर पर न बिठाएँ तो अच्छा। पर अगर लैशिंग मैन को स्प्रेडर पर बिठाकर ले जाना पड़े तो सावधानी बरतें। लैशिंग केज का प्रयोग करें, वह ज्यादा सुरक्षित है पर उस समय भी ट्रॉली धीरे से चलाएँ।

सबसे ज्यादा सावधानी भीमकाय (ODC) कंटेनर उठाते समय बरतें। उचित क्षमता की वायर रोप स्लिंग्स ही उपयोग में लाएँ। स्लिंग्स लगी हों तो धीरे धीरे काम करें। ध्यान रहे कि स्प्रेडर के नीचे कंटेनर ज्यादा झूले नहीं क्योंकि अगर कंटेनर झूलेगा तो उस पर नियंत्रण रखना मुश्किल होता है।

मानसून के मौसम में कुछ खास सावधानी रखनी होती है। जब तूफानी हवाएँ चलती हैं तो क्रेन पर हवा का दबाव उसे धकेल देने में सक्षम होता है। तूफानी हवाओं के चलते हुए, वेज (wedge) लगाकर काम करें। जरूरत पड़ने पर काम रुकवा दें। क्रेन को जरूरत न होने पर एँकर करके रखें।

जहाज पर दो स्तरों पर कंटेनर रखे जाते हैं। एक डेक पर और दूसरा डेक के नीचे। उसके लिए हैचकवर्स उठाकर नीचे रखने पड़ते हैं। हैचकवर्स और भीमकाय कंटेनर उठाते समय ज्यादा सावधानी बरतें और क्रेन धीरे से चलाएँ। खासकर तेज हवा के कारण हैचकवर्स धीरे से उठाएँ।

जहाज पर काम करते वक्त ध्यान रहे कि जहाज पर लगे टावर, क्रेन तथा एंटिना को नुकसान न पहुंचे। बूम टकराने की संभावना ज्यादा होती है। इसलिए बूम ऊपर-नीचे करते समय केबिन पार्किंग स्थिति में रखें।

बार्जों में स्थिरता कायम रखने की कोई प्रणाली नहीं होती। कंटेनर उठाने या रखने से वे असंतुलित हो सकते हैं। छोटे जहाजों एवं बार्जों पर काम करते वक्त जहाज की स्थिरता को न बिगाडें। जहाजकर्मियों की सूचना के अनुसार ही प्रचालन करें।

क्रेन चलाते समय मन एकाग्र होना जरूरी है। मोबाइल पर बातें करते या रेडियो पर गाने सुनते हुए काम न करें। इन व्यवधानों से दूर ही रहें। साथ ही, शराब, गुटके जैसी चीजों के सेवन से हमारी कार्यक्षमता पर अनुचित परिणाम होता है। क्रेन चलाते समय किसी भी प्रकार का नशा न करें। ये कानूनन अपराध भी है।

हमारे प्राकृतिक संसाधन धीरे धीरे खत्म हो रहे हैं। डीज़ल एवं बिजली इन्हीं में से हैं। उन्हें बचाएँ। जरूरत न होने पर क्रेन बंद कर दें। क्रेन बंद करते समय ध्यान रखें कि :

- स्प्रैडर सुरक्षित उँचाई पर हो।
- कैबिन पार्किंग स्थिति में हो।
- रबर टायर गंत्री क्रेन (RTG) बराबर ट्रैक पर हो तब ही 'शट डाउन' बटन दबाएँ।
- काम करते समय कभी आपातकालीन स्थितियों का सामना भी करना पड़ सकता है। इनके लिये तैयार रहना चाहिए। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर डरें नहीं। शांत रहें और सोच समझकर कदम उठाएँ। नीचे दी गई स्थितियों में बताए गए बुनियादी उपाय करें।

## क्रेन पर आग लगने की स्थिति में:

- केबिन को पार्किंग स्थिति पर लाएँ। पारी प्रभारी को वी.एच.एफ से रिपोर्ट करें।
- आपातकालीन (emergency) स्विच दबाएँ।
- अग्निशामक (CO2, Halon, BCF, Dry chemical extinguisher, प्रकारों के ही) से आग बुझाने की कोशिश करें। इनका प्रयोग कैसे करते हैं, यह भी पहले से सीख लेना जरूरी है।
- क्रेन के नीचे आग लगी हो तो क्रेन को तुरंत वहाँ से दूर सुरक्षित जगह पर लेकर जाएँ।

## क्रेन टकराने पर :

- आपातकालीन स्विच दबाएँ।
- पारी प्रभारी को वी.एच.एफ से रिपोर्ट करें और मदद माँगें।
- 'शट डाउन' बटन दबाएँ और सूचना की प्रतीक्षा करें। अतिरिक्त सहायता लेकर ही क्रेन वहाँ से निकालें।

## अन्य आपातकालीन स्थितियों में :

दिल का दौरा या अन्य बीमारी होने पर केबिन को पार्किंग स्थिति पर लाएँ। पारी प्रभारी को वी.एच.एफ से रिपोर्ट करें। 'शट डाउन' बटन दबाएँ और मदद एवं सूचना की प्रतीक्षा करें।

क्रेन चालक का काम बड़ी जिम्मेदारी का काम है। कंटेनर बेहद वजनदार होते हैं, साथ ही, कीमती भी। उनके साथ जुड़ी छोटी सी दुर्घटना भी जानलेवा हो सकती है। उससे जुड़ा नुकसान भी भारी ही होता है। यह सब क्रेन चालक पर ही ज्यादा निर्भर करता है यह न भूलें। कंटेनर टर्मिनल में क्रेन चालक एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। लापरवाही का यहाँ पर कोई स्थान नहीं। समझ लें कि जरा सी भी सावधानी हटी तो दुर्घटना हो सकती है। ■

## हँसी की फुहार

लड़की: तुम क्या कर रहे हो?
लड़का : मच्छर मार रहा हूँ।
लड़की: कितने मारे?
लड़का: 5 मारे, 3 फीमेल और 2 मेल
लड़की: कैसे पता चला, मेल है या फीमेल
लड़का: 3 आईने के पास बैठे थे और 2 बियर के पास

---

मयके से हमारी मैडम फोन पर बोलीं:
''क्या... तुम हमें याद करते हो?''
हमने कहा:
''अरे पगली! याद करना इतना आसान होता तो दसवीं में हम टॉप न कर लेते''.....

---

हरियाणा में दादा और पोते का प्यार...
दादा: छोरे छिप जा तेरी मास्टरनी आने लागरी सै...
पोता: दादा तू भी छिप जा मनै तेरे मरने पर 1 हफ्ते की छुट्टी ले रखी सै ।

डॉ. मिलिंद डी. भोसकर
*चिकित्सा अधिकारी*

# सड़क दुर्घटना और आघात परिस्थिति

आज का अखबार पढ़ा तो मुंबई पुणे एक्सप्रेस वे पर बस और कार के बीच हुई गंभीर दुर्घटना के बारे में पता चला। करीब 14 लोगों की मौत हो गई और कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए। कुछ महीने पहले कोलकाता में भी निर्माणाधीन पुल के गिरने से ऐसी ही जनहानि हुई थी। आए दिन सड़क, रेल, हवाई दुर्घटनाओं का होना तो अब हमारे देश में आम बात हो गई है।

चिकित्सा के क्षेत्र में इन दुर्घटनाओं से लगने वाली चोटों को आघात (ट्रामा) कहते हैं।

आजकल यातायात के साधनों में बेतहाशा वृद्धि के कारण दुर्घटनाओं में भी उतनी ही वृद्धि हुई है। इस कारण आज घर से बाहर जा रहा व्यक्ति सकुशल घर वापस आएगा या नहीं- यह विश्वास कोई नहीं दिला सकता। गलती किसी से, कहीं भी हो सकती है, लेकिन सड़क पर उसकी कीमत जान देकर ही चुकानी पड़ती है।

ग्लोबल रोड सेफ्टी रिपोर्ट, 2015 के अनुसार भारत में सड़क दुर्घटनाओं से करीब 2,00,000 लोगों की मृत्यु हुई और यह आंकड़ा राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के द्वारा जारी राष्ट्रीय सांख्यिकी से 46 प्रतिशत अधिक है। इसी से यह अंदाज लगाया जा सकता है कि सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली जन हानि कितनी अधिक है।

दुर्घटनाएँ कहीं भी, कभी भी घटित हो जाती हैं बच्चे , युवा, वृद्ध , स्त्री - पुरुष सब इनकी चपेट में आते रहते हैं. पर हर दुर्घटना के पीछे किसी न किसी की जल्दबाजी या लापरवाही जरूर होती है। जल्दबाजी या रोमांच के चक्कर में अक्सर लोग यातायात के नियमों का उल्लंघन करते हैं, और किसी तेज़ वाहन से टकराकर अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं या किसी के जीवन को संकट में डाल देते हैं।

कई सर्वेक्षणों के अनुसार नीचे दी गई वजहों से सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि होती है :

- सड़क परिवहन नियमों का पालन न करना
- वाहन की तेज़ गति या उस पर नियंत्रण न होना
- नशे की हालत में या मोबाइल पर बात करते करते वाहन चलाना
- हेलमेट या सीट-बेल्ट का उपयोग न करना

भारत में सड़क दुर्घटनाओं में 03 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हो रही है। ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के डॉ.जय प्रकाश नारायण और वहाँ के अपैक्स ट्रॉमा सेंटर के प्रमुख डॉ. मिश्रा ने सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली जनहानि को आधुनिक, उभरते भारत के लिए एक कैंसर जैसा बताया है। यदि इस पर जल्दी ही कोई कदम नहीं उठाया गया तो, आने वाले वर्षों में सड़क दुर्घटनाओं से काफी हद तक युवा पीढ़ी को क्षति या विकलांगता का सामना करना पड़ सकता है।

## सड़क सुरक्षा : एक सामूहिक ज़िम्मेदारी

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है और यह हम सभी नागरिकों, स्थानीय प्रशासन, राज्य और केंद्र सरकार की एक नैतिक तथा सामूहिक जिम्मेदारी होनी चाहिए।

### क) सड़क पर वाहन चालकों की जिम्मेदारियां :

- सड़क पर चलने वाले सभी को अपने बाईं तरफ होकर चलना चाहिए।
- चालक को सड़क पर गाड़ी घुमाते समय गति धीमी रखनी चाहिए।
- अधिक व्यस्त सड़कों और उनके तिराहों तथा चौराहों पर चलते समय ज्यादा सावधानी बरतें।
- दोपहिया वाहन चालकों को अच्छी गुणवत्ता वाले हेलमेट पहनने चाहिये और कार चालकों को सदैव सीट बेल्ट का उपयोग करना चाहिए।

- खासतौर से स्कूल, हॉस्पिटल तथा कॉलोनी आदि क्षेत्रों में गाड़ी की गति निर्धारित सीमा तक ही रखें।
- सभी वाहनों को दूसरे वाहनों से निश्चित दूरी बनाकर रखनी चाहिये।
- सड़कों पर चलने वाले सभी लोगों को वहाँ पर बने निशानों और नियमों की की अच्छी तरह से जानकारी होनी चाहिए।
- गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बात न करें और यदि कॉल महत्वपूर्ण है तो गाड़ी किनारे रोककर मोबाइल पर बात करें।
- मद्यपान कर गाड़ी न चलाएं और यदि नशे की हालत में हों तब तो अपने किसी मित्र या संबंधी से गाड़ी चलवाएं या ड्राइविंग को टालें।
- अपने वाहन की नियमित रूप से देखभाल करें और सर्विसिंग कराएं।

### ख) सरकार की जिम्मेदारियां:

- अच्छी मजबूत टिकाऊ सड़कों तथा व्यस्त रास्तों पर फ्लाईओवर का निर्माण करना
- राष्ट्रीय तथा राज्य महामार्ग पर दुर्घटना की आशंका वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना
- सड़कों पर यातायात पुलिस कर्मियों की 24 घंटे पोस्टिंग और निगरानी करना
- सड़क पर तेज चलते वाहनों पर निगरानी, कार्यवाही और रोकथाम करना
- यदि चालक मद्यपान करके गाड़ी चलाता या मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी चलाता पकड़ा जाए तो उस पर कड़ी कार्यवाही करना
- भारी वाहन चालकों के नियमित प्रशिक्षण और शारीरिक जाँच की व्यवस्था करना

- सभी वाहनों की नियमित जांच के लिए जांच केंद्र की व्यवस्था करना
- आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं के प्रावधान और 108 नंबर जैसी एम्बुलेंस सर्विसेस की व्यवस्था रखना
- हर शहर में एक आघात केंद्र (ट्रॉमा सेंटर) का निर्माण करना
- आपात स्थिति से निपटने के बारे में चिकित्सा कर्मियों को नियमित रूप से अद्यतन रखना और प्रशिक्षण देना
- आम लोगों और स्कूली छात्रों को ''बेसिक लाइफ सपोर्ट'' और घायल व्यक्ति को निश्चित ट्रॉमा सेंटर में स्थानांतरण का प्रशिक्षण देना

विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में सड़क सुरक्षा की बुनियादी सुविधाएँ और व्यवस्था बहुत सीमित और न्यूनतम स्तर की पाई गई हैं। मेरा मानना है कि किसी भी देश में जब तक किसी एक व्यक्ति की जान की कीमत को मूल्यवान न माना जाए, तब तक हम पूरी सड़क सुरक्षा मुहैया नहीं करा पाएंगे।

## सड़क दुर्घटना के घातक प्रभाव :

सड़क दुर्घटनाओं में चोटों से मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, छाती, हड्डियों में फ्रैक्चर होने की संभावनाएं होती हैं , जिस कारण सांस लेने में बाधा होने से, ज्यादा मात्रा में खून बहने से, रीढ़ की हड्डी टूटने से,पीड़ित की जान पर खतरा बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में ज़ख़्मी व्यक्ति को यदि तुरंत अस्पताल न ले जाया गया तो उसकी जान बचाना मुश्किल हो जाता है।

## आपातकालीन चिकित्सा सेवाः

सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से ज़ख्मी व्यक्ति को तुरंत प्राथमिक चिकित्सीय उपचार देना और एम्बुलेंस द्वारा न. जदीकी अस्पताल में स्थानांतरण ही आपातकालीन चिकित्सा सेवा का मुख्य लक्ष्य होता है। इसमें आपातकालीन चिकित्सा कर्मियों द्वारा किए जाने वाले कार्यों में रोगी के श्वसन मार्ग को खुला रखकर श्वास की गति सामान्य करना, खून के

रिसाव को रोकना, शरीर में रक्त प्रवाह को बनाए रखना, टूटी हड्डी और रीढ़ की हड्डी का स्थिरीकरण शामिल होता है। भारत के कई बड़े राज्यों में अब 108 नंबर की एम्बुलेंस सेवा बहुत अच्छा काम कर रही है। लेकिन बहुत सारे राज्यों ने अभी भी इस सेवा को प्रारम्भ नहीं किया है।

## आघात केंद्र (ट्रॉमा सेंटर ) :

वह अस्पताल जिसमें गंभीर चोटों से घायल रोगियों के

उपचार के लिए आपातकालीन विभाग, अतिदक्षता विभाग, आपातकालीन चिकित्सक, अस्थि शल्य चिकित्सक, पर्याप्त कर्मी, उपकरण,ऑपरेशन कक्ष, एक्स रे, एम आर आई, प्रयोगशाला इत्यादि पूरे सप्ताह 24 घंटे (24x7) उपलब्ध रहते हैं , उसे आघात केंद्र या अंग्रेजी में ट्रॉमा सेंटर कहते हैं। आज चिकित्सा शिक्षा प्रणाली, आपातकालीन चिकित्सा विशेषज्ञता कार्यक्रम विकसित करने पर कदम उठाती दिखाई दे रही है। इसी को ध्यान में रखकर प्रमुख राज्यों के सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों में आपात चिकित्सा की डिग्री, डिप्लोमा, प्रशिक्षण, एटीएलएस, आइटीएलएस प्रमाणीकरण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। ■

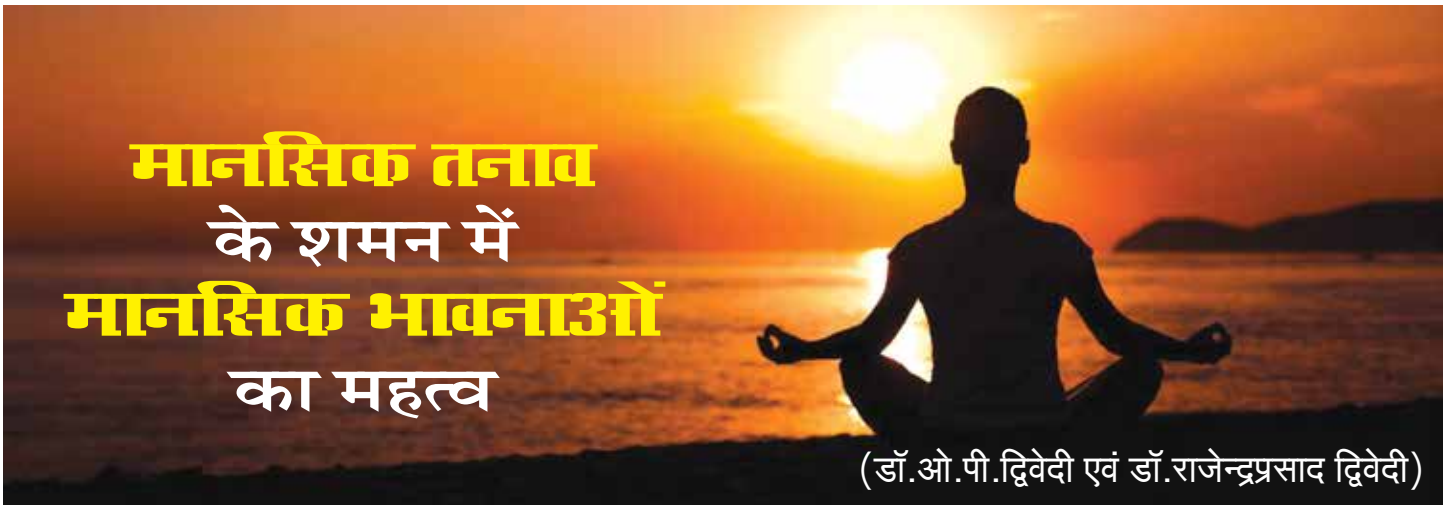

# मानसिक तनाव के शमन में मानसिक भावनाओं का महत्व

(डॉ.ओ.पी.द्विवेदी एवं डॉ.राजेन्द्रप्रसाद द्विवेदी)

जीवनमें पल-पल नवनिर्माण हो रहा है, उत्साहकी तरंगों से मनको तरंगित एवं आप्लावित करते रहें। जीवन, एक सुनहरा वरदान है। मानवको स्वस्थ एवं सुखी रहनेके लिये ही यह स्वर्णिम अवसर मिला है। जीवनसे बढ़कर अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं है। यदि आपका समस्त लुट गया है और जीवन शेष बचा है तो मानिये कुछ भी नहीं लुटा और सब कुछ शेष रह गया। हमें अपने जीवनका महत्व समझना चाहिये, जीवनमें रुचि लेना आद्य एवं सर्वप्रथम आवश्यकता है। धर्म, अर्थ, काम, ज्ञान, योग, भोग, त्याग, मुक्ति आदि सब कुछ बादमें हैं तथा जो जीवनमें रुचि नहीं लेता है, वह जिन्दगीका बोझ ढोनेवाला दयनीय पशु कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्रत्येक मनुष्य में महानता की अनंत सम्भावनाएँ छिपी हुई हैं, अतएव मनुष्य को अपनी महत्ता पहचानकर उसके अनुरूप चिन्तन और कर्म करना चाहिये। कोई मनुष्य एक दिशा में महान हो सकता है तो कोई अन्य मनुष्य किसी दूसरी दिशा में आगे बढ़ सकता है, जिस मनुष्य के पास जो कुछ गुण शक्ति है, वह उसीको लेकर ऊँचा उठे तभी उसकी सफलता और सार्थकता प्रमाणित हो सकती है। सदा रोते रहनेका स्वभाव मनुष्य को दयनीय बना देता है। मनुष्यको अपने अपमानका भय, हानिका भय, रोग का भय, मुत्युका भय, अनेक प्रकार के भय घेरे रहतेहैं तथा सारा जीवन यूं ही रोते-डरते बीत जाता है। भय बार-बार मनको विचलित कर देता है, जो भूखे भेड़िये की भाँति स्वास्थ्य एवं सुखको खा जाता है तथा चिन्ता हमें पंगु बना देती है। काल्पनिक चिन्ताओं में हम अपनी जीवनी-शक्ति का क्षय करते ही रहते हैं। इसलिए हम मनुष्योंको घृणा, भय, क्रोध, चिन्ता, ईर्ष्या, द्वेष, शोक, क्लेश आदि मानसिक विकारोंसे बचना चाहिये, क्योंकि ये हमारे रक्तसंचारपर दुष्प्रभाव डालते हैं, जिससे मानसिक व्याधियाँ या विकलता उत्पन्न होती है।

मानसिक तनावसे बचनेके लिए हमें अपनी बाह्य एवं आंतरिक भावनओंका नियन्त्रण निम्नानुसार आवश्यक बिन्दुओं पर करना चाहिए -

## हमेशा प्रसन्नचित्त रहें --

- जिस क्षण आपको लगे कि आपके हृदयमें भय, क्रोध, तनाव आदि के विचार आ रहे हैं तत्काल अपने मन को अच्छे विचारों की ओर ले जायँ ताकि तनावपूर्ण भावों के स्थान पर शान्ति एवं प्रसन्नता के भाव उत्पन्न हो सकें।
- अपना मुख्य विचार सदा याद रखें, 'मैं अपने विचार व्यवहार में सदैव शान्त एवं प्रसन्न रहूंगा।' ऐसा दृढ़ निश्चय व्रत पालन करना चाहिये।
- यदि आप निश्चिन्त हैं तो खूब हँसें। बुरे अर्थात विषम हालात में स्वयं को अधिक प्रसन्न रखें। विपत्ति में भी किसी का न बुरा करें, न सोचें।
- क्रोध न करें। दु:ख को बार-बार मन में न दोहरायें। पराजय को विजय में बदलने की कोशिश करें। मन को शान्त रखें। धैर्य न छोड़ें। जिन हालात को आप बदल नहीं सकते उन्हें स्वीकार कर निश्चय एवं सुझ-बूझसे सुधारने का प्रयास करें। जो आपत्ति आन पड़ी है, उसे शान्तिपूर्वक सहन करें।

## मौलिक आवश्यकताएँ-

प्रत्येक मनुष्यकी छह मौलिक आवश्यकताएँ हैं। प्रेम, सुरक्षा, सृजनात्मक स्वतन्त्रता, सम्मान एवं प्रशंसा, नवीन प्रयोग एवं

स्वाभिमान। इन छह मेंसे यदि एक भी आवश्कयता पूरी न हो तो मनुष्य अन्दर ही अन्दर उनकी पूर्तिके लिये व्याकुल रहता है। सुखद जीवनके लिये इन छह आवश्यकताओं का पूरा होना जरूरी है। आप अपनी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ इस प्रकार पूरी कर सकते हैं -

- अपनी संरक्षा का उचित प्रबन्ध करें। शेष नियति के हाथों छोड़ दें। लोगों को प्यार करें।
- नवीन प्रयोगों के लिये अपने मनोरंजन करने का उचित प्रबन्ध करें।
- दूसरों के स्वाभिमानको आहत न करने का प्रयास करें। दूसरों की उदार हृदयसे प्रशंसा करें, उचित सम्मान दें। उनसे वैसा ही बर्ताव करें, जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।

## कैसी हो हमारी दिनचर्या

- सादगी-जैसा कोई आभूषण नहीं। जीवन सादा रखें। मनोरंजन का साधन, कोई हॉबी अवश्य चाहिये।
- अपने काम से प्यार करें। उसे पूर्ण रुचि एवं लगन से करें। बीमारी की चिन्ता बीमारी को और अधिक बढ़ाती है।
- छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़ायें नहीं। घृणा न करें। नफरत की आग नफरत करनेवाले को ही जलाती है। जीवनमें सन्तुष्ट रहकर बेहतरी का प्रयास करना सीखें।
- सदा मधुर बोलें। लोगों को खुश रखने एवं लोकप्रिय होनेका यह सबसे सरल उपाय है। जल्दबाजी न करें। हड़बड़ाहट में किये गए काम में कुछ न कुछ गलतियाँ रह जाती हैं।
- सुबह हँसते हुए उठें। ईश्वर को धन्यवाद दें। इससे सारा दिन प्रसन्नतापूर्वक बीत जाता है।
- परिवार के साथ हँसें -बोलें, स्वस्थ् संवाद रखें। मनुष्य के लिये प्रसन्नचित्तता आरोग्य का मूल है।
- वर्तमान क्षण का आनन्द लें। ऐसा करने से भविष्य भी सुखमय बनेगा। आस-पड़ोस के लोगों में दिलचस्पी लें, उनकी उचित सहायता करें।

## कैसा हो खुशहाल परिवार - एक खुशहाल परिवार के लिये निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं

- प्यार के बिना परिवार व्यर्थ है। परिवार के सभी सदस्यों में समान प्यार एवं सौहार्द होना चाहिये।
- एक-दूसरे की सहायता करें। प्रसन्न परिवारके लिये संगठन की भावना होना आवश्यक है।
- रहन-सहन सादा रखें। खुशी एक ऐसी भावना है, जो मन के भीतर रहती है, उसे बाहरी सुख-सुविधाएँ ज्यादा प्रभावित नहीं करतीं।
- सुन्दर इमारत एवं फर्नीचर एक अच्छा घर नहीं बनाते। एक अच्छा घर उसमें रहनेवाला, सन्तुष्ट एवं प्रेमपूर्ण परिवार बनाता है।
- पराजय को विजय में बदलें। समयानुसार स्वयं को भी बदलें। यही समझदारी है।

## बच्चोंसे हमारा व्यवहार

- बच्चों को रोक-टोक की अपेक्षा बेहतर जीवन के आदर्श देने की आवश्यकता है।
- बच्चे बहुत कुछ अनुकरण करने वाले होते हैं, जिससे कि वे अपने माता-पिता के अनुसार ही अपना जीवन बना लेते हैं।
- बच्चों को घर एवं बाहर के लोगों का आदर करना सिखाएं। बच्चों पर कठोरता का उचित कारण होना चाहिये।
- बच्चों की मौलिक मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरी करना चाहिए। बच्चों को मारना नहीं चाहिए। शारीरिक दण्ड बच्चों के लिये हानिकारक होता है।
- उन्हें अत्याधुनिक सुरक्षाके माहौल में नहीं रखना चाहिये।
- बच्चों को बाह्यमुखी बनाएं। जीवन में ऐसे बच्चे के सफल होने सम्भावनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती हैं। बच्चों पर दबाव पक्का एवं प्रेमपूर्ण होना चाहिये।

## वृद्धावस्था में सुखद अनुभूति

यदि समय, परिस्थिति एवं वातावरणसे तालमेल न बनाकर चले तो वृद्धावस्था जीवनका सुनहरा समय होने की अपेक्षा दुखोंकी खान बन जाता है। इसके सामान्य कारण हैं -

- स्वास्थ्य खराब हो जानेका भय। बच्चों की ओरसे लापरवाही। आर्थिक अवस्था कमजोर हो जानेका भय। बेरोजगारी का भय।
- परिवारकी सत्ता से वंचित हो जाना। मित्रों का चल बसना। मृत्यु का भय। आत्मसम्मान का आहत होना।
- अपनी सत्ता एवं स्वामित्वको धीरे-धीरे छोड़ें।
- वृद्धावस्था के लिये कुछ धन संचित करें। मन को शान्त रखें। परिवार से अच्छे सम्बन्ध रखें।

- यदि आप चाहते हैं कि बुढ़ापे में बच्चे आपकी सेवा करें तो आप भी अपने बूढ़े माता-पिताकी सेवा करें।
- अपने बच्चों के निजी मामलात में दखल न करें। वृद्धावस्था को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें।
- बच्चों की ओर से अत्यधिक देख-रेख एवं परवाह की आशा न रखें।
- पुराना मित्र चल बसे तो नये मित्र बनाएं। मृत्यु से कभी न डरें। मनोरंजन के लिये कोई शौक रखें।
- सदैव याद रखें कि वृद्धावस्था शरीर की नहीं, मन की अवस्था अधिक है। अधिक आयु में भी व्यक्ति युवा रह सकता है बशर्ते उसका हृदय युवा हो। अतएव सदा उत्साहपूर्ण एवं आशावादी विचाराधारा रखें।

## अपने आस-पास सुखद वातावरण निर्मित करें

- मन शान्ति महसूस करे, इसके लिये कुहनियों और घुटनों के पीछे के भाग पर बर्फ का एक टुकड़ा रखें, गर्दनके पिछले भागमें ठण्डा भीगा तौलिया रखें।
- तनावके दौरान किसी भी पालतू जानवर यथा - गाय से प्यार करें, उसे सहलाएँ, इससे तनाव कम होता है तथा मानसिक शान्ति मिलती है।
- घर में अनावश्यक एवं टूटे-फटे सामान न रखें उन्हें बाहर कर दें, शेष बचे सामान को साफ करके व्यवस्थित रखें, इससे आपका मन काफी हलका महसूस होगा।
- हमेशा अपनेको किसी न किसी कार्यमें व्यस्त रखें, क्योंकि कहा भी गया है कि 'खाली दिमाग शैतानका घर होता है।'
- सुबह-सुबह तेज गति से चलने या तैराकी करने से भी तनाव कम होता है, खुशी महसूस करें, पानी से खेलें और मस्त रहें।
- अपने गुजरे हुए अतीत के लम्हों को यादकर वर्तमान में खुश होने की कोशिश फोटोएलबम आदि के माध्यम से करें। वर्तमानसे उसकी तुलना न करें।
- सुबह एवं शाम अपने धर्म के अनुसार इष्टदेव की पूजा, अर्चना या मनकी एकाग्रता हेतु साधन अपनायें।
- अपने नजदीकी दोस्तों, रिश्तेदारों, सगे-सम्बन्धियों से निरन्तर बात करने का सिलसिला जारी रखा करें, क्योंकि अपने मन की बातों को शेयर करने से मानसिक चिन्ता कम होती है।
- मन और शरीर पर नियन्त्रण बनाये रखने के लिए प्राणयाम करना परम लाभकारी प्रमाणित हुआ है।
- हमेशा अपने भोजनमें विटामिन बी-1, बी-2, बी-6, बी-12, ई, सी, फॉलिक एसिड, ग्लूकोज एवं आवश्यक खनिज तत्व आयरन, जिंक, कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, फ्लोराइड, सेलेनियम, कॉपर, आयोडीनयुक्त आहार-विहार ग्रहण कर मानसिक स्वस्थता का लाभ प्राप्त करना चाहिये।
- हमेशा दिल खोलकर हँसना चाहिये, क्योंकि जिस प्रकार नाली की सफाई पानी से होती है उसी प्रकार से हँसने से मनका अवसाद, तनाव, उदासी दूर होती है।
- हँसना जीवन का सौरभ है। हँसता, मुसकराता चेहरा निरोग व्यक्तित्व का प्रतीक है। चेहरे पर आई मुसकराहट मन की मलिनता, दुख और अवसादों को मनमें अधिक देर तक नहीं ठहरने देती।
- भावनात्मक दोषों, ईर्ष्या, क्रोध, मानसिक तनाव, उत्तेजना, निराशा, उदासी, प्रतिशोध आदि भावनाओं का शोधन हँसने से हो सकता है। वास्तविक रूप से हँसना इन विषयों में एक चमत्कारी उपाय भी है।
- योगशास्त्रियों का अभिमत है कि हँसने से खून साफ होता है , उम्र बढ़ती है, चेहरे पर कान्ति आती है तथा बुद्धि का विकास होता है।
- चोरी-छिपे न हँसें। घनिष्ठ सम्बन्धों में हँसना मर्यादित रूप में रखें , जिससे आप भी हँसी के पात्र न बन जायँ। अतएव हमें अपनी मानसिक स्थिति को काबू में रखना चाहिये, जिससे हम शारीरिक या मानसिक रोगों से बच सकें।

('कल्याण' पत्रिका से साभार)

# स्मार्ट सिटीज़: बेहतर भविष्य की ओर

भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। अभी भी हमारे देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। यूँ तो भारत गाँवों का देश है किन्तु हमारे गाँव बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश लोग बेहतर जिंदगी की तलाश में शहरों की ओर जा रहे हैं।

पिछली जनगणना (2011) के आँकड़ों के अनुसार प्रत्येक पाँच में से दो भारतीय प्रवासी (migrant) हैं। अर्थात, लगभग 5 अरब भारतीय प्रवासी हैं। इसी जनगणना के ही आँकड़ों के अनुसार भारत की लगभग 31 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है जबकि शहर देश के कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 63 प्रतिशत का योगदान देते हैं। वर्ष 2030 तक शहरों में देश की आबादी बढ़कर 40 प्रतिशत हो जाने की संभावना है।

इस बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भौतिक, आर्थिक और सामाजिक आधारभूत संरचनाओं की जरूरत होगी। शहरों में रहने वाले लोगों का जीवन स्तर सुधारने तथा विकास को बढ़ावा देने के लिए शहरों को बेहतर बनाना बहुत ही आवश्यक है। और इसी में निहित है वर्तमान सरकार की स्मार्ट सिटी मिशन की संकल्पना।

**श्री रोहित त्रिपाठी**
*वरिष्ठ हिंदी अनुवादक*

## आइए जानते हैं कि आखिर क्या हैं ये स्मार्ट सिटी ?

स्मार्ट सिटी का आशय है, एक ऐसा शहर जहाँ नागरिकों को अच्छा जीवन स्तर प्रदान करने के लिए आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध होंगी तथा एक स्वच्छ और संपोषणीय पर्यावरण उपलब्ध कराया जा सकेगा। सबसे प्रमुख बात है कि स्मार्ट सिटी में सूचना तकनीक ही किसी बुनियादी सुविधा का आधार होगी जिसके द्वारा नागरिकों की सहभागिता से उन्हें सभी अनिवार्य सेवाएँ प्रदान की जा सकेंगी।

## किसी स्मार्ट सिटी में निम्नलिखित सुविधाएँ होंगी -

- पीने योग्य पानी की पर्याप्त सुविधा
- चौबीसों घंटे विद्युत आपूर्ति
- अपशिष्ट प्रबंधन (ठोस और द्रव दोनों)
- प्रभावी सार्वजनिक परिवहन सेवाएँ
- सभी के लिए उचित दरों पर आवासीय सुविधाएँ
- सूचना तकनीक आधारित आधुनिक डिजिटल सेवाएँ
- ई-गवर्नेंस
- संपोषणीय विकास
- नागरिकों की सुरक्षा और उनकी सहभागिता

वर्ष 2008 में जब पूरा विश्व भारी आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा था। तब आईबीएम ने अपनी ''स्मार्ट प्लैनेट'' पहल के तहत स्मार्ट शहरों की परिकल्पना की थी। इस विचार से प्रेरित हो कई देशों ने सक्रियता से इस पर कार्य किया और आज वियना, कायरो, एम्सटर्डम, माल्टा जैसे कई शहर इस परिकल्पना को कार्यान्वित कर अन्य शहरों के लिए मानक बन चुके हैं।

भारत सरकार द्वारा प्रत्येक राज्य में कम से कम एक स्मार्ट सिटी तैयार करने की योजना है। ब्लूमबर्ग फिलेन्थ्राफीज़ नामक संस्था द्वारा शहरों को उनके नागरी निकायों और प्रशासन द्वारा प्रस्तुत योजनाओं के आधार पर चयनित किया गया है। चुने गए शहरों को केंद्र सरकार द्वारा 5 वर्षों तक 100 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष दिए जाएँगे ताकि उन्हें स्मार्ट शहर योजना के अनुरूप ढाला जा सके। इन चुने गए शहरों में उपलब्ध संसाधनों और बुनियादी संरचनाओं के प्रभावी उपयोग के लिए ''स्मार्ट साल्यूशंस'' अपनाए जाएँगे।

स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य है ऐसे शहरों को बढ़ावा देना जो अपने नागरिकों को स्वच्छ और संपोषणीय पर्यावरण दे पाएँ और जहाँ दैनंदिन चुनौतियों से निपटने के लिए स्मार्ट विकल्प और आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध हों। इस निरंतर विकास के केंद्र में एक सीमित क्षेत्र में ऐसा मॉडल बनाना है जो स्वयं भी अनवरत कुशलता से कार्य कर सके, साथ ही अन्य क्षेत्रों के लिए भी उदाहरण बन सके। कई विदेशी सरकारों, जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी आदि ने स्मार्ट शहरों के विकास के लिए सहयोग की इच्छा जताई है।

किसी भी स्थान के विकास में वहाँ जल और ऊर्जा की उपलब्धता प्रमुख भूमिका निभाती है। इनमें से भी पानी हमारी मूलभूत आवश्यकता है। किन्तु, हमारे देश में साफ पानी अब भी अधिकांश लोगों को मुहैया नहीं है। यही नहीं, भारत में पानी की बर्बादी भी बहुत है। पानी का वहन करने वाले पाइपों में टूट-फूट, गैर जिम्मेदाराना इस्तेमाल से यह दुर्लभ संसाधन बहुत मात्रा में नष्ट हो जाता है। जमीनी जल के अंधाधुंध निकाले जाने के कारण जमीन में भी जल का स्तर बहुत कम हो चला है। इसके बावजूद भी बरसाती पानी के बचाव के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किए जाते हैं।

आज यह बहुत आवश्यक है कि स्वच्छ जल और अपशिष्ट जल, दोनों का ही समझदारी से उपयोग किया जाए। स्मार्ट शहरों में जल प्रबंधन और अपशिष्ट जल प्रबंधन, दोनों के लिए उपयुक्त आधारभूत संरचना होगी, जिससे कि न केवल स्वच्छ जल सभी को उपलब्ध हो सके बल्कि अपशिष्ट जल को उचित प्रक्रियाओं से शुद्ध करके उसका पुन: उपयोग किया जा सके।

इसी प्रकार,ऊर्जा एक ऐसा संसाधन है जिसके बिना पूरी व्यवस्था ठप्प पड़ जाती है और जिसके उत्पादन के लिए हम अभी भी धरती के निरंतर खत्म हो रहे भंडारों का दोहन कर रहे हैं। चाहे कारखानों और दफ्तरों को चलाने के लिए बिजली हो या वाहनों के लिए पैट्रोल-डीज़ल, सभी लगातार घटते संसाधनों से प्राप्त होते हैं। स्मार्ट शहरों में ऊर्जा की संपोषणीय व्यवस्था पर विशेष जोर दिया गया है। प्रयास यह होगा कि जितनी ऊर्जा का उपयोग हो, उतना ही उत्सर्जन हो सके और उत्सर्जन न हो सके तो संरक्षण अवश्य हो सके। इनके लिए नवीकरणीय ऊर्जा, जैसे सौर ऊर्जा के उत्सर्जन पर भी बल दिया गया है।

भारत में लोग काम पर जाने-आने के लिए बहुत सा समय और ऊर्जा खर्च कर देते हैं। ऐसा रिहायशी और कामकाज की जगहों का उचित नियोजन न होने की वजह से है। साथ ही, परिवहन के कई तरह के साधनों से भीड़भाड़ भी बढ़ती है और प्रदूषण भी। स्मार्ट शहरों में कामकाजी और रिहायशी इलाकों के बीच संतुलन लाने

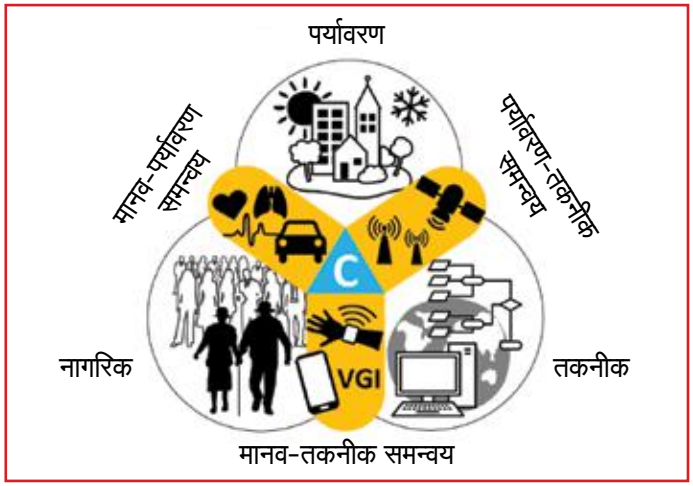

का प्रयास किया जाएगा। बहुविध परिवहन व्यवस्था (Multi Modal Transport) के माध्यम से नागरिकों को एक छोर से दूसरे छोर तक एक संपूर्ण परिवहन व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी जिससे सड़कों पर यातायात कम होगा, पैट्रोल/डीज़ल की खपत कम होगी और फलस्वरूप प्रदूषण भी कम होगा।

स्मार्ट शहरों के विकास में किसी निर्मित क्षेत्र का पुनर्विकास (जैसे मुंबई में भेंडी बज़ार, दिल्ली में कनॉट प्लेस), किसी रिक्त स्थान पर नई योजना द्वारा विकास (जैसे गुजरात में गिफ्ट सिटी) और वर्तमान इलाकों का प्रतिस्थापन (जैसे दिल्ली में किदवई नगर) किया जाएगा।

इस प्रकार, ऊर्जा प्रबंधन, जल प्रबंधन, अपशिष्ट जल प्रबंधन, पर्यावरण प्रबंधन तथा जगह के कुशल उपयोग के विभिन्न आयामों को अपनाकर इन स्मार्ट शहरों की संकल्पना की गई है और वर्तमान सरकार इन्हें कार्यान्वित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

फिर भी, भारत जैसे देश में स्मार्ट सिटी की संकल्पना बेहद चुनौतीपूर्ण है। किसी शहर के स्मार्ट बनने में उसके नागरी प्रशासन तथा सरकार के बीच सहयोग और साथ ही नागरिकों का योगदान अनिवार्य है। फिर, थोड़े समय में यह कार्य पूर्ण करना अत्यंत कठिन है। किन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि यह एक अत्यंत महत्वाकांक्षी परियोजना है जो देश के शहरों के लिए अत्यंत आवश्यक है। जरूरत है तो नागरिकों के, अर्थात् हमारे-आपके स्मार्ट बनकर इन शहरों के विकास में योगदान देने और उन्हें सफल बनाने की। ■

## कविता

*कवि आकार कपूर हमारे मॅरीन विभाग के उपसंरक्षक, कप्तान अमित कपूर के सुपुत्र हैं। आप बंगलूर स्थित डेलोइट (यू एस) नामक एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में व्यापार तकनीक विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। उनके काव्य प्रेम को देखकर ऐसा लगता है कि हिन्दी नई पीढ़ी के युवाओं में भी अपनी गहरी पैठ बना चुकी है।*

*- सम्पादक*

# छोटी सी आशा

पलकों में आँसू और हृदय में निराशा,
फिर भी उज्ज्वल एक छोटी सी आशा।
चंचल भ्रमर बन, जा बैठी कुमुदिनी पर,
निशा के अंधकार में भक्षक आये मेरे घर।
मैं रोई-गिड़गिड़ाई, अपना सम्मान बचा न पाई,
आते-जाते लोगों को थोड़ी भी शर्म न आई।
खंडित किया तन, लूट लिया कीमती धन,
लाज एवं विश्वास का ओढ़ लिया कफ़न।
मेरी मनोस्थिति कोई नहीं समझ पाता,
हास्य तथा उपहास का पात्र माना जाता।
व्याकुल मेरा मन पूछे कि कौन है पापी,
निर्दयी 'भक्षक' या जिन्हें शर्म नहीं आती ?
न पलकों में आँसू, न हृदय में निराशा,
न रहा जीवन, न वह छोटी सी आशा...

कवि आकार कपूर

# रावण

एक के अभिमान ने ऐसा दिया दण्ड,
सारे जग का स्वाभिमान हुआ खण्ड-खण्ड।
महादेव की कृपा और ब्रह्मा का वरदान,
परंतु बदले की ज्वाला से खो दिया सम्मान।
यूँ तो हीरा-कोयले से होता अत्यंत मूल्यवान,
विश्व को प्रकाशित करने का उसमें अभिमान।
रावण में उस हीरे के गुण कोई न बतलाता,
बुराई एवं कुटिलता का पात्र समझा जाता
आज मनुष्य पापी है, पर वह रावण नहीं,
रावण भी मनुष्य था, पर ऐसा पापी नहीं।

# विराट हिन्दी पखवाड़ा

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास हमारे देश भारत का नंबर-1 कंटेनर पोर्ट है। कंटेनर प्रहस्तन के साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी ज. ने. पत्तन हमेशा अग्रसर रहा है। इसके लिए पत्तन में अनेक हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं चल रही हैं। साथ ही हिंदी प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा भी यहाँ हिन्दी के प्रचार-प्रसार को निरंतर ही बल दिया जाता है। राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से ज ने पत्तन प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन करता है। हिंदी पखवाड़े के दौरान पत्तन अपने कार्यालय के कर्मचारियों,

अधिकारियों और उनके परिवारजनों एवं आसपास के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए भी अनेक हिन्दी प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों का आयोजन करता है। यह आयोजन कार्यालय के सभी हिन्दी प्रेमियों के सामूहिक सहयोग से राष्ट्रभाषा हिन्दी के चरणों में पूरी तरह से तन-मन-धन अर्पित करके आयोजित किए जाते हैं। और सहयोग भी ऐसा कि मात्र लिपिक वर्गीय कर्मचारी तथा अधिकारी ही नहीं बल्कि कार्यालय के बड़े-बड़े अभियंता एवं चिकित्सक भी अपने कार्य को शीघ्र निपटाकर हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए बड़ी उत्सुकता से आते हैं। यह उनके स्वाभाविक हिन्दी प्रेम को दर्शाता है।

इस वर्ष जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिन्दी पखवाड़ा हिन्दी दिवस,14 सितम्बर, 2016 को इसके उद्घाटन के साथ ही प्रारम्भ करके 28 सितम्बर, 2016 तक आयोजित किया गया। हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर अध्यक्ष जी के प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार,2016 लेने राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली चले जाने के कारण पखवाड़े का उद्घाटन मुख्य प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव, श्री डी. नरेश कुमार द्वारा किया गया। अनेक कर्मचारियों तथा अधिकारियों से भरे सभा भवन में इस अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन में सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों को इस बात के लिए बधाई दी कि राजभाषा हिन्दी को उनके निरंतर ही समर्थन देने के कारण आज जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को लगातार 10 वीं बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय से प्राप्त हुआ है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पत्तन न्यास के सभी कर्मचारी तथा अधिकारी इसी प्रकार आगे भी हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए काम करते रहेंगे।

इस कार्यक्रम के बाद हिन्दी पत्र लेखन तथा शब्दावली प्रतियोगिता का प्रारम्भ हुआ जिसमें कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, कर्मचारियों तथा अधिकारियों को कार्यालयीन पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना तथा हिन्दी की तकनीकी शब्दावली से अधिक से अधिक अवगत कराना है। प्रतियोगिता को अच्छा प्रतिसाद मिलने से यह पिछले कई वर्षों से निरंतर जारी है तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल रही है। यह देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि हमारे कर्मचारी तथा अधिकारी बड़े-बड़े कठिन अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय दे पाए तथा हिन्दी पत्र लेखन के दौरान मराठी वर्तनी के प्रयोग में भी काफी कमी देखी गई।

हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी वर्ग पहेली और सही हिन्दी लेखन प्रतियोगिताओं में भी कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। उनके हिन्दी निबंधों की कुछ बानगी हमने इस अंक में पाठकों के लिए प्रस्तुत की है जिससे जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हो रही हिन्दी की प्रगति के प्रति वे आश्वस्त हो सकेंगे।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास राजभाषा हिन्दी की प्रगति को लेकर अपने कार्यालय के कर्मचारियों तथा अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों को ही हिन्दी प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में शामिल करके हिन्दी के प्रति जागरूकता फैलाने तक सीमित नहीं है बल्कि निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए उसे आस-पास के अध्ययन परिसरों में भी ले जाने के लिए प्रयत्नशील है जैसे, हम अपने केंद्रीय पुस्तकालय से हिन्दी पुस्तकें आस-पास के विद्यालयों में वितरित करते हैं और वहाँ के विद्यार्थियों को आमंत्रित करके हिन्दी निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। साथ ही, इस आयोजन के माध्यम से सार रूप में विद्यार्थियों को केंद्रीय राजभाषा नियमों के अंतर्गत कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की क्या स्थिति है, उसकी जानकारी दी जाती है। इन युवजनों के मन पर हिन्दी प्रेम की छाप छोड़ने के लिए वही श्रेष्ठ सुंदर व्यवहार एवं विभिन्न प्रकार के पुरस्कार यथा- हिन्दी पुस्तकों सहित नकद पुरस्कार तथा शील्ड एवं प्रमाण पत्र आदि उन्हें भी दिये जाते हैं जो हम अपने कर्मचारियों व अधिकारियों को देते हैं। इस वर्ष ''जीवन जीने की कला है योग'' विषय पर आस-पास के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जो कि बहुत ही सफल रहा। सर्वश्रेष्ठ रहे विद्यार्थी के निबंध को हमने पत्रिका में पाठकों के पढ़ने के लिए स्थान दिया है।

हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता इस बार एक अलग तरह से आयोजित की गई। इसमें हमने किसी रिश्ते पर कल्पना का ताना-बाना बुनते हुए कहानी लिखने को कहा और यह प्रतियोगिता काफी सफल रही। इन कहानियों के नमूने हमने पाठकों के निर्णय के लिए पत्रिका में उपलब्ध कराए हैं।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन तो एक प्रकार के हास्य और हिन्दी साहित्य के मिले-जुले कवि सम्मेलन जैसा ही दृश्य उपस्थित करता है क्योंकि निरंतर कई वर्षों से यह प्रतियोगिता आयोजित करते-करते हम अपने कार्यालय में अनेक कवियों का भी उदय कर पाए हैं और अन्य को भी हम अपने यहाँ कविता पाठ करने का अवसर देते हैं। इस दौरान वातावरण इतना सरस हो जाता है कि कोई अपने गंजे सिर पर हाथ फिरा-फिराकर श्रोताओं को भाव विभोर कर रहा है तो कोई कवियित्री समसामयिक विषय को लेकर बड़ी ही गंभीर हो जाती है।

पखवाड़े में रोचक प्रसंग कथन प्रतियोगिता भी आयोजित हुई जिसमें कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने अपने जीवन के अनुभव सुनाए। प्रतियोगिता काफी शिक्षाप्रद रही।

हमारे यहाँ कार्यालय के सभी 674 पर्सनल कम्प्यूटरों को यूनिकोड एंकोडिंग से युक्त किया गया है और 02 प्रकार के लेंग्वेज टूल निर्मित किए हैं जैसे, ''हिन्दी इंडिक इनपुट-3'' जिसके माध्यम से जिन्हें हिन्दी की स्पीड से टाइपिंग करनी आती है, वे वहाँ मौजूद रेमिंग्टन की बोर्ड के अनुसार हिन्दी टाइपिंग कर सकते हैं। इसके अलावा जो हिन्दी की टाइपिंग नहीं जानते, वे ''माइक्रोसॉफ़्ट इंडिक लेंग्वेज इनपुट टूल'' के द्वारा अंग्रेजी की बोर्ड से ही हिन्दी टाइपिंग कर सकते हैं। यह प्रतियोगिता इन्हीं 02 वर्गों में बांटकर की गई तथा अनेक कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने इसमें भाग लेकर इसे सफल बनाया।

हमारे द्वारा हिन्दी अंताक्षरी तथा गीत गायन प्रतियोगिताएं बड़े ही गाजे बाजे के साथ कार्यालय के नगरक्षेत्र स्थित बहूद्देशीय सभाग्रह में आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के सम्मिलन में हमारे कर्मचारी तथा अधिकारी बड़े ही खुश होते हैं। उत्सव का सा माहौल पैदा हो जाता है और इन आयोजनों से तो जैसे उनका पूरे पखवाड़े का श्रम ही दूर हो जाता है।

हम पिछले दो बार से हिन्दी पखवाड़े में हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं और यह बहुत रोचकतापूर्ण रही है क्योंकि इसमें हम विभिन्न विषयों की पर्चियाँ प्रतिभागियों से खिंचवाकर उन्हें प्राप्त विषय पर बोलने को कहते हैं। तो यह समझ लीजिये कि कर्मचारियों तथा अधिकारियों के हृदयगर्त समाहित तुरत-फुरत विचारों को सुनकर सभी का मन मंत्रमुग्ध हो जाता है। यह प्रतियोगिता बहुत ही सफल चल रही है और हम इसे आगे भी हिन्दी के विकास के लिए आयोजित करेंगे।

इस वर्ष भारत सरकार के निदेशों के अनुसार आई. टी. के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी वस्तुनिष्ठ कंप्यूटर ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की

गई। इसमें हमने कंप्यूटर से संबंधित 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न विकल्पों के साथ पूछे। इस प्रतियोगिता में कर्मचारियों तथा अधिकारियों के श्रेष्ठ निष्पादन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रतियोगिता के परिणाम की ऊंचाई 92 प्रतिशत तक रही। कर्मचारियों तथा अधिकारियों के समूह ने इस प्रतियोगिता के आयोजन को बहुत अधिक सराहा एवं इसमें कर्मचारियों तथा अधिकारियों का संख्याबल भी सभी प्रतियोगिताओं से अधिक 32 तक रहा, अन्यथा बाकी हिन्दी लेखन प्रतियोगिताओं में औसतन 23 से 26 लोग ही भाग लेने आ पाते हैं। इस प्रतियोगिता के प्रतिसाद को देखते हुए आगे और भी इसके विशिष्ट रूप में आयोजित करने का हमने मन बना लिया है।

इन उपर्युक्त सभी प्रतियोगिताओं में पत्तन न्यास के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। उनके अंदर एक दूसरे से आगे निकल जाने की भावना बहुत बलवती थी। पर साथ ही आयोजकों को यह भी निरंतर अनुभव हुआ कि जैसे हिन्दी प्रतियोगिताओं में जीतना उनके लिए मुख्य न हो, केवल प्रतियोगिताओं में भाग लेना ही उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण है।

हिन्दी पखवाड़े की समाप्ति पर दिनांक- 30 सितम्बर, 2016 को आयोजित हुए हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह में सर्वप्रथम सभी आस-पास के विद्यालयों के हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में विजेता रहे विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार, शील्ड, हिंदी पुस्तकें तथा प्रमाणपत्र देकर माननीय अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर,भा.प्र.से. ने पुरस्कृत किया। इससे वे बहुत प्रफुल्लित हुए।

इसके पश्चात माननीय अध्यक्ष द्वारा ज ने प न्यास के कर्मचारियों तथा अधिकारियों के लिए आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम पुरस्कार के रूप में रु. 5000/-, द्वितीय पुरस्कार के रूप में रु. 3000/-, तृतीय पुरस्कार के रूप में रु. 2000/- एवं प्रत्येक प्रतियोगिता में रु. 1000/- के 03 सान्त्वना पुरस्कार दिए गए। इस प्रकार विजेता रहे 84 कर्मचारियों तथा अधिकारियों को रु. 2, 01,500/- की राशि पुरस्कार के रूप में दी गई। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी साहित्य के पठन पाठन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष इन पुरस्कारों की 10 प्रतिशत राशि हिन्दी पुस्तकों के रूप में विजेताओं को दी जाती है। इस वर्ष भी पहले, दूसरे तथा तीसरे पुरस्कार के विजेताओं को 10 प्रतिशत राशि एवं सान्त्वना पुरस्कार विजेताओं को रु. 200/- की हिन्दी पुस्तक नकद पुरस्कार के अलावा दी गई। इस प्रकार कुल रु. 26,200/- की हिन्दी पुस्तकें भी सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ वितरित की गईं।

इसके अतिरिक्त, पत्तन न्यास में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा निष्पादन के लिए विभागों को भी राजभाषा शील्ड दी जाती है। इसमें बड़े तथा अधिक पत्राचार वर्ग के कार्यालय में यातायात विभाग को प्रथम, प्रशासन विभाग को द्वितीय, यांत्रिक तथा बिजली विभाग को तृतीय एवं चिकित्सा विभाग को सांत्वना राजभाषा शील्ड एवं छोटे तथा कम पत्राचार वर्ग के कार्यालयों में समुद्री विभाग को प्रथम, सतर्कता विभाग को द्वितीय तथा पत्तन योजना एवं विकास विभाग को तृतीय तथा प्रबंधन सेवा प्रभाग को सान्त्वना पुरस्कार की राजभाषा शील्ड देकर मा. अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही विभागों/अनुभागों के सभी 09 हिन्दी सम्पर्क अधिकारियों को भी पूरे वर्ष अपने-अपने विभागों/अनुभागों में राजभाषा हिंदी के कार्य को बढ़ावा देने के लिए सम्मानित किया गया।

इस वर्ष से पत्तन में वर्ष भर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसी एक अधिकारी/कर्मचारी को सम्मानित करने के लिए "उत्कृष्ट राजभाषा सेवी सम्मान" देने का निर्णय लिया गया। इसी क्रम में इस वर्ष श्री गणेश गंगाराम मोकल, प्रशासनिक अधिकारी को मा. अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया। इस सम्मान में रु. 5000/- के नकद पुरस्कार के अलावा प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे मा. उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, भा.रा.से., ने ज.ने.प. न्यास को पुन: एक बार माननीय राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होने पर अधिकारियों और कर्मचारियों का अभिनंदन किया। साथ ही, उन्होंने उरी में हुए कायराना आतंकवादी हमले की निंदा करते हुए कर्मचारियों और अधिकारियों का आह्वान किया कि वे देश के वीर सैनिकों के समर्थन में खड़े हों। उन्होंने यह भी कहा कि पत्तन का काम भी देश की सुरक्षा को मजबूत करता है इसलिए किसी भी कर्मी को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, यह नहीं समझना चाहिए कि वह कोई हीन कार्य कर रहा है। सारे काम उच्च कोटि के होते हैं और उन्हें करने वाले सभी व्यक्ति समान होते हैं।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, पत्तन के अध्यक्ष श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से., ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए पत्तन को लगातार दस वर्षों तक मा. राष्ट्रपति के करकमलों से राजभाषा पुरस्कार प्राप्त होने की बधाई दी। उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों से यह अपील भी की कि वे अपने कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे कि राजभाषा कार्यान्वयन की जिस श्रेष्ठ ऊँचाई तक हम पहुँच चुके हैं उस पर बने रहें। उन्होंने इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए हिन्दी अनुभाग के कर्मियों को कुल रु. 30,000/- के नकद पुरस्कार देने की घोषणा भी की।

मुख्य अतिथि माननीय अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से. के उद्बोधन के बाद राष्ट्रगान के साथ ही यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान मीडिया भी मौजूद था तथा मीडिया में भी हमारे पखवाड़ा आयोजन को अच्छा कवरेज प्राप्त हुआ। ■

## हँसी की फुहार

सुबह घना कोहरा था। मैं लाइन लगा कर खड़ा था। अचानक 40-50 लोग और आ गए और मेरे पीछे खड़े हो गए।

किसी ने मेरे हाथ में पानी की बोतल देख कर पीने के लिये ले ली और पी गया,

मैं कुछ न बोला ।

जब कोहरा छंटा तब मेरे पीछे बाकी लोगों को पता चला कि मैं सुलभ शौचालय की लाइन में खड़ा हूँ

सबको लगा था कि ATM की लाइन है ।

भीड़ मुझे गुस्से से देखते हुए तितर-बितर हो गयी ।

# हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

# हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

# हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

# हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

*जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में 14 सितंबर,2016, हिन्दी दिवस से प्रारम्भ होकर 28 सितंबर, 2016 के दौरान आयोजित हिन्दी पखवाड़े में 'रिश्ते' विषय पर हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पहले तीन विजेताओं की कहानियाँ पाठकों को उनके भावक्षेत्र में निमग्न होने के लिए प्रस्तुत हैं, जहाँ पहुँचकर वे यह अनुभव कर पाएंगे कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास के कर्मचारी/ अधिकारी प्रतियोगिता आयोजन के थोड़े से समय में ही कल्पना की कितनी ऊँची उड़ान उड़ पाए अथवा विषय के चारों और मँडराते रह गए।*

*- सम्पादक*

**हिन्दी कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत कहानी**

# परम प्रेम

बारिश के दिनों में सृष्टि में बहुत ही सुहावना वातावरण होता है, वैसा ही वातावरण आज चारों ओर फैला था। हाल ही में संपन्न हुए गणेशोत्सव की मंगलमय आभाएं मन को बड़ा प्रसन्न बना रही थीं। वृंदावन तो ऐसा ही धार्मिक क्षेत्र है जहाँ आध्यात्मिकता की लहरें तरंगित होती हैं। आज मंदिर में प्रवचन की माला शुरू होने वाली थी। प्रवचन करने वाले महात्मा भी बड़े मशहूर विद्वान थे। उनका विषय भी था 'रिश्ते नाते'। रोजमर्रा के जीवन में ऐसे कार्यक्रमों से बड़ा आनंद आता था। दोपहर चार बजे प्रवचन शुरू होने वाला था। आज छुट्टी थी, तो मैं भी चाय लेकर मंदिर में जाने के लिए तैयार हो गया। मंदिर जाते जाते मन में उसी विषय को लेकर चिंतन हुआ, महाराज जी आज कौन से रिश्ते अहमियत बताएंगे। आज कल तो किसी भी रिश्ते पर भरोसा करना कठिन है। माता-पिता, भाई-भाई, भाई-बहन, मां-बेटा, मित्र कौन सा रिश्ता है जिस पर आँख मूंद कर विश्वास करें। मन बड़ा विषाद से भर गया। मैंने इन विचारों को झटक दिया और मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। मंदिर में भगवान को प्रणाम कर मैं प्रवचन कक्ष में जाकर आगे की ओर बैठ गया।

महाराज बड़े कद के काफी प्रसन्नचित्त व्यक्ति थे। उनकी विद्वत्ता की आभा मुखमंडल पर झलक रही थी। भगवान का नाम सुमिरन करके उन्होंने कथा आरंभ की।

उन दिनों वृंदावन में एक महात्मा घूमते थे, उन्हें देखकर सब लोग बोलते थे 'जज साहब आ गए, जज साहब आ गए' एक संत ने पूछा'यह तो साधू हैं, फिर उन्हें जज साहब क्यूं बुला रहे हैं?' तो वे बोले, 'यह बड़ी कहानी है। तीस साल पूर्व ये दक्षिण भारत की एक लोक-अदालत में जज थे। वहां एक गांव में 'भोला' नाम का आदमी रहता था।'भोला' नाम तो लोगों ने उसे दे दिया था। वह केवल रामजी को जानता था'नान्यं जाने नैव जाने न जाने'। केवट जाति का था सामान्य परिस्थिति, दो बेटे एक बेटी थी। बड़ा ही भक्तिपूर्ण था भोला। उसे कोई पूछता कि'भोला। बताओ यह कैसा है' तो वह कहता, 'ये तो रघुनाथजी जानें, मैं तो कुछ नहीं जानता'।

श्रीमती अंजली वेंगुर्लेकर
*आशुलिपिक*

उसके बेटों ने कहा, पिताजी, गाँव के सेठजी से पैसे लेकर बहन की शादी कर देते हैं, बाद में हम रुपया कमाकर सेठजी का रुपया वापस कर देंगे। केवट बोला ठीक है। केवट सेठजी के पास गया, सेठजी ने सामान्य ब्याज दर लगाकर लिखा-पढ़ी करके केवट को पैसे दे दिए। केवट पैसे लेकर आया, बेटी की शादी हुई, बेटी ससुराल बिदा हुई और केवट भी घर छोड़ कर गाँव के रघुनाथजी के मंदिर में रहने लगा।

कुछ समय बाद बेटों ने केवट को सेठजी को पैसे देने के लिए पैसे दिए। केवट सेठजी के पास गया। सेठजी ने हिसाब करके पाई-पाई पैसा वापस मिला, ऐसी रसीद बनायी और केवट को दे दी और बोले भोला पढ़ो क्या लिखा है। केवट ने अपने अंदाज में कहा, अजी ये सब तो रघुनाथजी जानें, मैं कुछ नहीं जानता। सेठजी के मन में पाप आया, सोचा इससे दोबारा पैसे ले सकते हैं। फिर बोले -'केवट, वह रसीद देना, तुम जरा पानी ले आना'। केवट एक गिलास पानी लेने गया। सेठजी ने वह रसीद छुपायी। फाड़ते तो शक होता। दूसरे कागज पर कुछ लिखकर दे दिया। केवट वह रसीद लेकर मंदिर आया, उसे रघुनाथजी के चरणों में रखा और बाद में जहां रहता था, वहाँ बैग में रसीद रख दी।

फिर सेठजी ने उस पर दावा लगाया, उसने मेरा पैसा वापस नहीं दिया है और बोल रहा है कि पैसा वापस किया। केवट को कोर्ट में जाना पड़ा। वहां यह महात्मा जज थे। उन्होंने केवट से पूछा, 'क्या तुमने इनका पैसा वापस दिया है।' केवट

बोला हाँ। फिर पूछा, 'क्या उसका कोई सबूत है आपके पास'। केवट ने वह कागज दिखाया। जज ने देखा और बोले, 'अरे यह तो कोई प्रमाण नहीं हो सकता, इसमें तो कुछ भी नहीं लिखा है'। केवट रोने लगा बोला, 'हुजूर, मैं तो इसी को रसीद समझा था। जज साहब बोले, 'देखो रोओ मत' बताओ, तुमने जब सेठजी का पैसा वापस दिया तो उस समय तुम दोनों के बीच कोई तीसरा था क्या? उस पर केवट ने हमेशा के अपने अंदाज में कहा 'सत्य बोलता हूं, हुजूर मैंने जब सेठजी का रुपया वापस दिया तब सिवाय रघुनाथजी के वहाँ कोई नहीं था।' जज साहब बोले 'भोला, तुम ऐसा करो तुम अगली तारीख को आना, अब जाओ।'

जज साहब को लगा कि रघुनाथजी कोई इनके गांव के व्यक्ति होंगे, उन्होंने अपने खर्चे से रघुनाथजी के नाम का समन निकला। चपरासी पूरे गांव में घूमकर परेशान हो गया, क्योंकि उस गांव में तो रघुनाथजी नाम का कोई आदमी नहीं था। एक ने बोला यहां रघुनाथजी का मंदिर है, तो बोला बताओ। चपरासी मंदिर गया, वहां बाहर पुजारी बैठे थे, उन्होंने देखा बोले 'क्या बात है।' चपरासी ने पूछा 'क्या यह रघुनाथजी का मंदिर है?' पुजारी बोले हाँ ! तो यह लो। पुजारी ने मन में कहा अब रामजी ने मंगवा ही लिया है, तो मना क्यूँ करूँ, उन्होंने हस्ताक्षर किए और समन को रघुनाथजी के चरणों में रख दिया। कहा रघुनाथजी आपको अब तक तरह-तरह के पोशाक आई होंगी, तरह-तरह की मिठाइयां आयी होंगी, भक्तों ने विविध आभूषण चढ़ाए होंगे, लेकिन समन तो पहली बार मिला है। पुजारी जी ने केवट से पूछा, 'तुमने रघुनाथजी का नाम क्यों लिखवा दिया?' तो केवट ने कहा, 'मैं क्या झूठ बोलता हूं, रघुनाथजी तो सदैव मेरे साथ ही होते हैं।'

दूसरे दिन पुजारीजी ने केवट को जल्दी ही कोर्ट भेज दिया। केवट ने भगवान को प्रणाम किया और प्रार्थना की'हे रघुनाथजी, आप ही मुझे संकट से निकालें।'

## ''हरि बिन संकट कौन निभाए''

बड़े भावुक होकर केवट कोर्ट में गए। पुजारी जी ने भगवान की जल्दी ही पूजा करके नए वस्त्र पहनाए। मन में यह भाव था कि आज भगवान पहली बार बाहर जा रहे हैं और प्रभु से बोले, 'हे रघुनाथजी आप कोई भी वस्त्र पहनकर जाइए, लेकिन जाइएगा जरूर, उस बेचारे का आपके सिवा कोई नहीं है।'

वहाँ केवट पहुँचे, सेठजी पहुँचे और जज साहब भी आ गए। जज साहब ने केवट से पूछा, 'आपके गवाह रघुनाथजी कहाँ हैं?' केवट अपने भाव से अपने अंदाज से बोला, 'हुजूर वे तो यहीं कहीं होंगे, वे तो सब जगह रहते हैं।' जज साहब फिर भी नहीं समझे।

जज साहब ने चपरासी को पुकारने को कहा। चपरासी ने तीन बार आवाज दी, 'रघुनाथजी हाजिर हो, रघुनाथजी हाजिर हों, रघुनाथजी हाजिर हों।'

सब लोगों की निगाहें दरवाजे की ओर लगी थीं, तभी एक वृद्ध लटपटाती चाल से, झुकी हुई कमर, काठी का सहारा लिए गले में तुलसी की माला, सर पर फटे कपड़े का साफा,माथे पर चंदन का टीका लगाए और हाथों से इशारा कर'हाजिर हूं' कहते सामने आए। जज साहब ने देखा, सेठजी ने देखा और चौंक गए, 'यह कौन है?'

जज साहब ने पूछा 'क्या आपको पता है इन्होंने सेठजी का रुपया वापस दिया है?' रघुनाथजी बोले, 'हाँ ! इसने पैसा वापस दिया है।' बोले उसका सबूत। तब बोले कि सेठजी को इधर ही रखा जाए, उनके घर के बाहर वाले कक्ष में तीन अलमारियां हैं और उनमें से बीचवाली अलमारी के तीसरे खाने में 32 नंबर वाली बही में वह रसीद है। जज साहब ने चपरासी को भेजा, रसीद मिली। सेठजी को दंडित होना पड़ा। भगवान तो अंतर्यामी हैं उनसे क्या छिपा है। काम तो हो गया था। रघुनाथजी गायब हो गए।

जज बड़े अचरज में थे, बोले आज तक बहुत फैसले सुनाता आया हूं लेकिन ऐसा गवाह आज तक नहीं देखा। जज ने भोला को अकेले में लेकर पूछा'भोला जी, ये रघुनाथजी कहां रहते हैं? बोला, 'जहां मैं रहता हूँ।' तुम कहां रहते हो। बोला, जहां रघुनाथजी रहते हैं,। अरे तुम एक ही गाँव के रहनेवाले हो। जज साहब ने फिर चपरासी को बुलवाया। चपरासी कँपकँपाते हुए बोला'सरजी ! जिसको मैंने समन दिया था वह यह आदमी नहीं था।'

फिर जज ने गांव जाकर पूछताछ की तो भावनाओं से विह्वल हो गए। घर पर आकर रोने लगे। लोगों ने पूछा जज साहब, आप रो क्यूँ रहे हैं? तो रोते-रोते बोले, 'अरे आज कोर्ट में भगवान खुद आए थे और मैं कुर्सी पर बैठा रहा। जिसकी अदालत में हम सबको उपस्थित होना है, उसी को आज यहां खड़ा होना पड़ा।' ऐसा वैराग्य हुआ कि जज के पद से इस्तीफा दिया और साधु बन गए। वे अक्सर खड़े ही रहते, कोई पूछता तो कहते भगवान को खड़ा कर मैं बैठा रहा, अब यही सही है। भगवान को रोज बाहर से प्रणाम करते। सीढ़ियों की धूल माथे से लगाते। कोई पूछता अंदर क्यों नहीं जाते? तो कहते मैं तो उनको मुंह दिखाने लायक नहीं रहा हूं।

क्या था उस केवट में, जिसकी गवाही देने के लिए स्वयं भगवान हाजिर हुए। केवट की अनन्य भक्ति, उसका समर्पण, उसका अटल विश्वास। इस समर्पण भाव से ही ईश्वरीय शक्ति पाने का मार्ग प्रशस्त होता है।'भक्ति वह विशुद्ध शक्ति है जो ईश्वर प्राप्ति या भगवत्प्राप्ति से फलीभूत होती है।'

बड़ा अनोखा, अजर-अमर है यह भक्त और भगवान का रिश्ता। ■

हिन्दी कहानी प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कृत कहानी

# इंदु नानी

श्री शेखर मालवदे
*अधीक्षक*

इंदु नानी को मैंने पहले कब देखा, मुझे याद नहीं। ठीक वैसे ही जैसे कि अपनी माँ को पहले कब देखा वह मुझे याद नहीं। इंदु नानी से मेरा कोई सगा रिश्ता तो नहीं था। नवजात शिशु को जो दाई माँ मालिश करवाने नहलाने के लिये आती है वैसे ही मेरे जन्म के बाद इंदु नानी पहले साल भर घर आया करती थी। इसलिये मैंने कहा कि उसे पहले कब देखा मुझे याद नहीं है। शायद इस दुनिया में माँ के साथ-साथ जो कुछ चेहरों से मेरी शुरू-शुरू में मुलाकात हुई और जो चेहरे मैं पहचानने लगा उनमें इंदु नानी भी हैं।

मुझे अपनी दादी का साथ ज्यादा मिला नहीं। शायद इसी वजह से इंदु नानी यादों में बस गयी और अभी तक वे मुझे याद हैं।

जैसे पहले बताया कि वे हमारी रिश्तेदार नहीं थीं। और होंगी भी अगर तो शायद बहुत दूर की जिनका विवरण न तो मुझे पता है और न मेरे घरवाले दे सकेंगे।

हमारे घर में किसी बच्चे का जन्म हो जाये, शादीब्याह या त्योहार का कोई शुभकार्य हो या कोई बीमार हो या उस जमाने की रीति के अनुसार हाथसे घुमायी जानेवाली चक्की पर कुछ पीसा जाता हो। इन सब कामों में इंदु नानी की उपस्थिति अनिवार्य थी। कहते हैं कि मेरे पिताजी के जन्म पर भी, यही इंदु नानी हाजिर थीं और उन्होंने ही पिताजी की शिशु अवस्था में मालिश थी। उन्हें नहलाया धुलाया था। हमारे घर के सभी बच्चे इन इंदु नानी के हाथ से मलके ही बड़े हुए थे। इतने सालों से हमारे परिवार से जुड़ी हुई थीं वे।

साढ़े चार-पाँच फीट के अंदर-बाहर वाला कद। चेहरा और हाथ पाँव झुर्रियों की सिलवटों से भरा हुआ। रुक्ष देहयष्टि/ सफेद बाल/स्वच्छ परंतु पुराना और बारबार धुलाने की वजहसे फीकी पड़ गई नौगजी साड़ी पहने हुए नानी की छवि आज भी मेरे मनपटल पर वैसी ही है।

घर में सभी को वे तब याद आतीं जब घर में कोई बीमार हो या, दिवाली, गणेशचतुर्थी जैसे त्योहारों के पहले की तैयारी करनी हो, यह और ऐसे अनेक कारण थे जब इंदु नानी को बुलाया जाता था। थोड़ा बड़ा होने के बाद उन्हें बुलाने का काम मुझे सौंपा जाता था। इंदु नानी को संदेसा देकर मैं उसे ले आता था और पूरा घर निश्चिंत हो जाता था।

इंदू नानी का घर और वह घर भी कैसा ? किसीने अपना ओसारा (बरामदा) उसे रहने को दिया था। वहाँ पर वह अपने पोते जगन के साथ रहती थी। जगन कुछ सोलह सत्रह साल का था।

उस ओसारे के एक कोने में दोनों अपनी जिंदगी बिता रहे थे। मिट्टी के तेल का स्टोव कुछ अल्युमिनियम के बर्तन और एकाध पुराना संदूक यही उसकी परिसंपत्ति थी। मैं जाता था तो वह हाथ पर गुड़ दे देती थी, जिसे मैं खुशी-खुशी खा लेता था।

मेरी मां को इंदु नानी से बड़ा लगाव था। बड़ी अच्छी बनती थी दोनों के बीच में। हम जैसे-जैसे बड़े होते गये तब इंदु नानी की कहानी मां को जितनी पता थी, हमें मालूम होने लगी।

इंदु नानी अपनी जवानी में एक बहुत समृद्ध परिवार से थीं। उसके छह-सात बच्चे भी हुए, पर किसी कारणवश उनमें से कोई जीवित न रहा। फिर किस्मत ने उसे और घुमाया। दुर्भाग्यवश उनका पति भी कम उम्र में गुजर गया और वे विधवा हो गयीं। फिर उस पर क्या बीती क्या पता। पर उसे लोगों के घर जाकर काम करने पड़े और यही उनकी जिंदगी बनकर रह गयी।

किस्मत का तमाशा भी अजीब है। जिसका अपना एक भी बच्चा जिंदा नहीं बचा उसे घर घर जाकर नये जन्मे बच्चों को नहलाने का, घुट्टी बनाके पिलाने का, उनको स्वस्थ और निरोग बनाने का पेशा अपनाना पड़ा।

बाद में यह भी पता चला कि जगन जो उसके साथ रहता है, वह भी उसका सगा पोता या रिश्तेदार नहीं है। किसीके अनाथ बच्चेको इंदू नानी ने गोदी ले लिया था।

जगन को वह बड़ा लाड़ प्यार करती। उसे घरों में कुछ मिठाई वगैरह मिल जाये तो वह कागज में बाँधकर जगन के लिये ले जाती। मेहनत करके जितना हो सके जगन को लाड़ करके खुश करना चाहती। पर जगन थोड़ा सा आवारा किस्म का था।

स्कूल जाने से मना करता था। और अनपढ़ इंदु नानी उसे डांटती भी नहीं थी। उसे अपना कोई चाहिये था। मैंने जब पहले उसे देखा था तभी वे बूढ़ी थीं। जगन उसे बुढापे की लाठी वगैरह नहीं लगता होगा। किस्मतने उसके सारे रिश्ते उससे चुरा लिये। इसलिये उसने जगन के रूप में अपना नया रिश्ता बना लिया था। उसे वह स्कूल जाता नहीं इस बात का कुछ दुख भी नहीं था।

अब जगन भी कुछ छोटामोटा काम करके नानी का हाथ बँटाने लगा था। और इंदु नानी इसी बात से खुश थीं।

और एक दिन अचानक चिंतित चेहरे से इंदु नानी हमारे घर आयीं। दो तीन दिनों से जगन घर नहीं लौटा था। वह रो रही थीं। मां ने उन्हें समझाया। वह भी मां को अपनी बेटी समान मानती थीं। मां ने भी उनके लिये बहुत किया था। उन दिनों संजय गांधी निराधार योजना सरकार द्वारा चलाई जाती थी। मां ने इंदु नानी से अर्जी भरवाकर, तहसील के दस चक्कर काटकर वह अल्प मासिक पेंशन उसे दिलवाई थी।

महीने में कुछ सौ दो सौ रूपये मिल जाते थे जिससे इंदु नानी को मदद मिल जाती थी। पर उन्होंने किसीसे कभी मुफ्त में कुछ नहीं लिया था। हर महीने पैसे मिलते ही हमारे घर आकर पांच-दस रूपये मेरे हाथों में जबरन थमा जाती। बड़ी स्वाभिमानी महिला थीं। अपने बुरे समय में भी उन्होंने किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये थे। किस्मत ने उनसे सब कुछ छीना फिर भी वह डटकर संकटों का सामना करती रहीं। मेहनत मंजूर थी, किन्तु किसी से मुफ्त लेना मंजूर नहीं था। कितना आत्मसम्मान था उनमें, वह रोने नहीं बैठती थी।

पर अब जगन में उसकी जान अटकी थी। उसका इस तरह दो दिन गायब होना उसे चिंतित कर गया।

मेरी मां ने उसे समझाया, 'कुछ नहीं होगा। चिंता मत करो कहीं दोस्तों के साथ घूमने गया होगा, आ जाएगा।' पर जगन आनेवाला नहीं था। दूसरे दिन वह पहाड़ी वाले रास्ते पर साईकल से खाई में गिरा हुआ बेहोश अवस्था में पाया गया। यथावकाश अस्पतालमें उसकी मौत हो गयी।

इस घटना को इतने सारे साल हो गये पर मुझे आज भी याद है कि इंदु नानी जगन के जाने से कैसे पत्थर बन गयी थीं। जब उसकी अर्थी उठ रही थी तब कैसे वे लाश के गले पड़ कर कैसे उसे उठा रही थीं। आज भी साफ साफ दिखता है और मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

पहले से बूढी इंदू नानी इस हादसे से थोड़ी सँवर तो गईं पर अंदर ही अंदर खोखली होती गईं। मेरी माँ ने कुछ महीने उसे अपने घर में भी लाकर रखा था। पर उनकी जैसे जीने की तृष्णा ही चली गयी थी।

वे बीमार होती चली गईं और फिर सरकारी अस्पताल में कुछ महिनों के बाद उनकी मृत्यु हो गयी। इंदु नानी... जीवन की अजीब गरिमा की शिकार। उनके सारे रिश्ते उनसे छिन गये। उन्होंने अपने वंश के मिटने का गम छोड़कर, भुलाकर दूसरों के घर के दीपक जलाये। दूसरों की खुशियों के लिये जूझती रहीं। विपरीत स्थितिमें उन्होंने एक अनाथ को सहारा देकर एक और रिश्ता बनाना चाहा, पर किस्मत की इस क्रूरता को क्या कहा जाये ? ■

## हँसी की फुहार

गधा : मेरा मालिक मुझे बहुत पीटता है

कुत्ता : तुम भाग क्यों नहीं जाते

गधा : मालिक की खूबसूरत लड़की है जब वह पढ़ाई नहीं करती तो मालिक कहता है कि तेरी शादी गधे से कर दूंगा। बस इसी उम्मीद से टिका हूँ

मम्मी : बेटा कहाँ गये थे?

बेटा : एक फिल्म देखने गया था।

मम्मी : कौन सी?

बेटा : माँ की ममता।

मम्मी : जा बेटा, ऊपर नई फिल्म लगी है वह भी देख ले।

बेटा : कौन सी?

मम्मी : ''बाप का कहर''

टीचर : Date और तारीख में क्या अंतर है????
सारी Class चुप....

चुन्नू : सर, Date में Girlfriend के साथ जाते हैं और तारीख में वकील के साथ....

हिन्दी कहानी प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कृत कहानी

# एक ऐसा भी रिश्ता

रिश्ते तो अलग-अलग प्रकार के होते हैं जैसे कि खून के रिश्ते, दोस्ती के रिश्ते, जीवन के अलग-अलग मोड़ पर मिलनेवाले लोगों के साथ रिश्ते। एक ऐसे ही रिश्ते के बारे में मैं अपना अनुभव बांटना चाहती हूं।

भरतपुर गांव में गीता नामक बारह साल की लड़की अपनी मां के साथ रहती थी। उसके पिता नौकरी के कारण दूर शहर में रहते थे। गीता अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी। उसे अपने माता-पिता से बहुत लगाव था। गीता बहुत ही अच्छी, विनम्र और थोड़ी चुलबुली लड़की थी।

उसके पिता उसको हर हफ्ते पत्र भेजते थे। उस गांव में हाल ही में नए पोस्टमैन आए थे। उनकी उम्र लगभग 55-56 साल की होगी। एक दिन वह गीता का पत्र लेकर उसके घर देने के लिए गए। उन्होंने दरवाजा खटखटाया, अंदर से 'आती हूं' आवाज आई लेकिन दरवाजा खुला नहीं। इसलिए पोस्टमैन ने फिरसे दरवाजा खटखटाया। तब गीता ने दरवाजा खोला और पोस्टमैन गीता को जल्दी दरवाजा न खोलने पर डांटने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि गीता दोनों पैरों से अपाहिज़ है। उसे वॉकर के सहारे खड़ा देखकर उनको बहुत दु:ख हुआ।

गीता ने उनको पानी दिया। पोस्टमैन को जल्दी होने के बावजूद वे गीता के साथ बैठे। उसे पत्र पढ़कर सुनाया और थोड़ी देर में उसकी मां बाजार से आई तब वे निकल पड़े।

अब हर हफ्ते गीता और पोस्टमैन चाचा की बहुत सारी बातें होती थीं। उनको भी गीता से बातें करके बहुत सुकून मिलता था। ऐसे ही दिन बीत गए। अब दिवाली का त्यौहार आया। गीता के पापा ने शहर से उसके लिए नए कपड़े, खिलौने, मिठाइयां लाईं। तब उसने अपने पापा को बाजार में भेजकर एक वस्तु लाने के लिए कहा। उसके पिता ने गीता ने जो वस्तु मंगाई थी वह तुंरत उसे लाकर दी।

अब वह पोस्टमैन चाचा की राह देखने लगी। दूसरे दिन उसने अपने पापा को पोस्टमैन चाचा को बुलाने भेजा। उसके पापा पोस्टमैन चाचा को लेकर आए। गीता की मां ने उनको मिठाइयां दीं। सबसे बातें करके पोस्टमैन चाचा निकलने लगे तो गीता ने उनके हाथ में एक बॉक्स रखा और कहा कि उसे वे अपने घर जाकर खोलें। उन्होंने घर जाकर उस बॉक्स को खोला और वे फूटफूटकर रोने लगे। उनकी बीवी ने देखा तो वह भी रोने लगी। उस बॉक्स में चप्पल की एक जोड़ी थी।

श्रीमती गायत्री म्हात्रे,
*आशुलिपिक*

गीता ने पोस्टमैन चाचा को फटी चप्पल पहने हुए धूप में पत्र बांटते देखा था। अपनी पत्नी की बीमारी के कारण उनकी तनख्वाह उसके इलाज पर खर्च हो जाती थी।

गीता, जिसके दोनो पैर नहीं थे, उसने पोस्टमैन चाचा की तकलीफ समझी और उन्हें चप्पल की जोड़ी भेंट दी। यह भी तो एक रिश्ता है।

जन्म के साथ खून के रिश्ते जैसे, मां-बाप, भाई-बहन, चाचा-चाची, दादा-दादी व इतर मिल ही जाते हैं। लेकिन जैसे जिंदगी के अलग-अलग मोड़ पर अलग-अलग लोगों के साथ जिंदगीभर के लिए रिश्ते बन जाते हैं, वैसे ही यह एक रिश्ता - गीता और पोस्टमैन चाचा का है।

जिनके पास रिश्ते हैं उन्हें निभाने का प्रयत्न करें क्योंकि जिनके पास कोई नहीं, जो अनाथ हैं, उन्हें पूछिए रिश्तों की कीमत। ■

## हँसी की फुहार

पिता : तेरे रिजल्ट का क्या हुआ?

पुत्र : सर ने कहा है कि इसी क्लास में एक और साल लगाना पड़ेगा।

पिता : साल तो चाहे 2-3 लगा ले, पर फेल न होना बेटा।

*जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास ने हिन्दी पखवाड़े में इस बार 'कश्मीर में आतंकवाद' जैसे सम्वेदनशील विषय पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें अनेक कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक वर्ग यह देखकर आश्चर्यचकित थे कि इस कार्यालय के कर्मचारी तथा अधिकारी आज की बड़ी ही घातक कश्मीर समस्या के प्रति कितनी गहरी रुचि तथा जानकारी रखते हैं और देश के कितने जागरूक नागरिक हैं।प्रतियोगिता के पहले तीन विजेताओं के लेख हम ''अभिव्यक्ति'' के पाठकों को पढ़ने के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि पाठक अवश्य ही उनके ज्ञान से कहीं न कहीं यह सोचने पर मजबूर होंगे कि क्या इतना मुश्किल है कि यह रोज-रोज की जानलेवा कश्मीर समस्या हल नहीं होती ?*

*- सम्पादक*

**पखवाड़े की हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध**

# कश्मीर में आतंकवाद

**श्री संतोष भिवा परब**
*कनिष्ठ अभियंता*

अमीर खुसरो ने कहा था कि दुनिया की जमीन पर सचमुच कहीं स्वर्ग है तो वह कश्मीर है। यही कश्मीर का स्वर्ग आज आतंकवाद से झुलस रहा है। आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन के कमांडर बुरहान वानी को भारतीय सेना द्वारा मार गिराए जाने के बाद कश्मीर में नए सिरे से आतंकवाद शुरू हो गया है जिससे आज तक 5,000 करोड़ रुपयों का आर्थिक नुकसान हुआ है। राज्य के सरकारी खजाने को हर दिन 400 करोड़ के राजस्व का नुकसान हो रहा है। पर्यटन व्यवसाय पूरी तरह से ठप होने से होटल और हाउसबोट मालिकों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। आतंकी बुरहान वानी के जनाजे में दो लाख से ज्यादा भीड़ आयी थी और उसने खुलकर भारत विरोधी नारे लगाये। आज तक कश्मीर के हालात सामान्य नहीं हुए हैं। पिछले सात दशकों से धरती का यह स्वर्ग आतंकवाद झेल रहा है।

कश्मीरी आतंकवाद की जडें भारत के विभाजन के समय तक जाती है। वर्ष 1947 में भारत का विभाजन होकर पाकिस्तान जैसे मुस्लिम बहुल राष्ट्र का निर्माण हुआ। स्वतंत्रता के पहले भारत में 600 से ज्यादा रियासतें थीं। लॉर्ड माऊंटबैटन योजना के तहत इन देशी रियासतों को यह छूट दी गयी कि ये भारत या पाकिस्तान में शामिल हो सकती हैं या फिर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं। इस योजना के तहत तत्कालीन कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने भारत या पाकिस्तान किसी भी देश में शामिल न होकर स्वतंत्र रहने का फैसला किया। उसी वक्त पाकिस्तान ने कबालियों का साथ देकर कश्मीर पर आक्रमण किया। जब पाकिस्तानी सेना कश्मीर के श्रीनगर से 20 कि.मी. की दूरी तक पहुँच गई तो महाराजा हरि सिंह ने भारत सरकार से मदद मांगी और भारत में विलय होने की संधि पर अपने हस्ताक्षर कर दिए। इसके बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को मुँहतोड़ जवाब देकर उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया। लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने यह समस्या संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने का फैसला किया जिससे कि आज भी कश्मीर समस्या सुलझी नहीं है।

कश्मीर समसया को लेकर भारत और पाकिस्तान में अब तक चार बार युद्ध हो चुके हैं और चारों बार पाकिस्तान को हार का मुँह देखना पड़ा है। इसके बावजूद पाकिस्तान के रवैये में कोई परिवर्तन नहीं आया। कश्मीर घाटी पर कब्जा जमाने के लिए पाकिस्तान अपनी कूटनीतिक चाल चलता रहता है। इतना ही नहीं बल्कि कश्मीर घाटी में हो रहीं आतंकवादी गतिविधियां और सीमापर की घुसपैठ में अधिकतर उसका ही हाथ रहता है। पाकिस्तान हमेशा कश्मीरी जनता को भारत के खिलाफ बगावत के लिए प्रोत्साहित करता है और उनका समर्थन करता है। इस सबका उद्देश्य यह है कि कश्मीर में भारतीय सत्ता को विवादित किया जाए, भारतीय सैन्य बलों

को विचलित करें और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की निन्दा कर सकें।

कश्मीर इस शर्त पर भारत में शामिल हुआ था कि विदेशी मसलों, सुरक्षा और मुद्रा चलन के अतिरिक्त बाकी सभी मसलों पर कश्मीर की सरकार निर्णय लेने के लिए स्वायत्त है। इसलिए भारतीय संविधान में धारा 370 का निर्माण किया गया और इस में यह प्रावधान किया गया कि भारतीय संविधान के दायरे में रहकर कश्मीर राज्य का स्वायत्तता दे दी जाएगी। भारत में धारा 370 का काफी विरोध हो रहा है फिर भी यह अबतक लागू है। इस धारा के अंतर्गत अन्य कोई भारतीय कश्मीर में जमीन-जायदाद नहीं खरीद सकता।

वर्ष 1951 के आम चुनाव के बाद कश्मीर ने भारत में विलय को स्वीकार किया। लेकिन बाद में शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की नाकाम कोशिशें कीं। फिर 1965 में भारत ने पाकिस्तान को युद्ध में हराकर पाकिस्तान की कश्मीर पर कब्जे की एक और कोशिश नाकाम की। वर्ष 1971 में भारत ने पाकिस्तान का विभाजन करके बांगलादेश का निर्माण किया। वर्ष 1977 में शेख अब्दुल्ला ने फिर से कश्मीर के लिए स्वतंत्र राष्ट्र निर्माण करने का राग अलापना शुरू किया। इससे कश्मीर समस्या सुलझने के बजाय उलझती गयी। लेकिन 1979 में शेख अब्दुल्ला के मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने भारत के साथ सहयोग किया, जिससे कश्मीर की अशांति में कमी आ गयी। शेख अब्दुल्ला की 1982 में मृत्यु होने के बाद उनके बेटे फारुख अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने। उन्होंने विधानसभा में कश्मीर पुनर्वास विधेयक पारित किया। यह विधेयक भारतीय एकता और अखण्डता के लिए खतरा था क्योंकि इस विधेयक में यह प्रावधान था कि आजादी के बाद कश्मीर से चले गये मुसलमानों को फिर से कश्मीर में बसाया जाएगा। इस विधेयक का फायदा उठाते हुए अनेक पाक प्रशिक्षित आतंकवादी कश्मीर में आकर बसने लगे। उन्होंने पाकिस्तान से सैन्य सहायता, हथियार और प्रशिक्षण हासिल करके कश्मीर में आतंकवाद का सिलसिला शुरू किया। तभी भारत सरकार ने आतंकवादियों को कुचलने के लिये सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम को पारित किया, जिससे कश्मीर में लगभग सैन्य-शासन जैसे हालात हो गये। आज भी कश्मीर में सात लाख के ऊपर भारतीय सैनिक मौजूद हैं। कश्मीर में 1986 में राष्ट्रपति शासन लागू कराया गया। बाद में 1987 के चुनावों में फारुख अब्दुल्ला के नैशनल कोन्फरेंस ने काँग्रेस के साथ गठबंधन करके चुनावों में धांधली की जिसकी वजह से चुनावों में अन्यायपूर्ण तरीके से हारे हुए समूह सशस्त्र विद्रोह की तरफ अगसर हुए। उन्हें पाकिस्तान का पूरी तरह समर्थन और प्रोत्साहन था। इससे पूरी कश्मीर में आतंकवाद का सिलसिला शुरू हुआ। जैसे जैसे आतंकवाद बढ़ता गया वैसे वैसे सशस्त्र सेनाओं का दमन भी बढ़ता गया। इस कश्मीर आतंकवाद ने गए सात दशकों में 60,000 से भी ज्यादा जानें लीं और 7,000 से ज्यादा लोग लापता हुए। इतनी जानें जाने के बाद भी कश्मीर की समस्या जैसी की तैसी है।

1988 में तत्कालीन पाकिस्तानी राष्ट्रपति जिया-उल-हक ने 'आपरेशन टोपाक' नाम की 'वॉर विद लो इंटेंसिटी' योजना बनायी जिसके तहत कश्मीर के लोगों में अलगाववाद और भारत के विरूद्ध नफरत के बीज बोने थे और उनके हाथों में हथियार थमाने थे। इस योजना के प्रथम चरण में कश्मीर में मस्जिदों की संख्या बढ़ाई गई तथा दूसरे चरण में वहां पर गैर मुस्लिमों और शिया मुसलमानों को मार भगाया गया। तीसरे चरण में पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. और पाकिस्तानी सेना ने वहां पर दंगे-फसाद करवाए। अब उसका अंतिम चरण चल रहा है जिसमें सरे आम भारत विरोधी नारे लगाए जाते हैं, पाकिस्तानी झंडे लहराये जाते हैं और सरे आम भारत की खिलाफत की जाती है।

कश्मीर आज पूरी तरह से आतंकवाद से ग्रसित हो गया है। पाक प्रशिक्षित आतंकवादियों के न जाने कितने गुट वहां पर कार्यरत हैं। हत्या, मारकाट, लूट-,खसोट व अपहरण रोज की दिनचर्या है। अलकायदा, लश्कर-ए-तोयबा, हरकत-उल-मुजाहिदिन, हरकत-उल-अन्सार तथा अलबदर ऐसे अनेक गुट आज आतंकवादी और आपराधिक हरकतों में संलिप्त हैं। उन्होंने कश्मीर की युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित किया है।

आज के कश्मीर में आतंकवाद का शहरीकरण हुआहै। इसमें शामिल ज्यादातर युवक शहरी और पढ़े-लिखे हैं जो अपने लाभ के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना जानते हैं। भारतीय मिडिया भी टीआरपी बढ़ाने के चक्कर में इसे बढ़ावा देकर उनका उद्देश्य सफल कर रहा है। आज कश्मीर के आतंकवाद में एक नया आयाम देखने को मिला है कि जब कभी भी सेना और आतंकवादियों में मुठभेड़ होती है, तो आम जनता इकट्ठा होकर सेना पर पथराव और कभी-कभी गोलियां चलाकर आतंकवादियों को भागने के लिए मौका देती है। और इस वक्त अगर सेना 'पैलेट गन' और बंदूकों का इस्तेमाल करती है, तो भीड़ और हिंसक हो जाती है। फिर सेना और प्रशासन आलोचना में फंस जाते हैं।

कश्मीर की मुख्य समस्या है शिक्षा, रोजगार और विकास में पिछड़ापन। इसी जहालत के चलते कश्मीर कभी देश की मुख्य धारा में शामिल नहीं हुआ। पिछले सात दशकों में भारत सरकार ने कश्मीर में एक लाख करोड़ की सहायता राशि दी है और सीमाओं की रक्षा और आतंकवाद से लड़ने के लिए न जाने कितने लाखों करोड़ लग गये हैं। कश्मीरी जनता को प्रति व्यक्ति देश में सबसे अधिक केन्द्रीय सहायता राशि मिल रही है। फिर भी आज कश्मीर अशांत क्यूं है और वहां पर आतंकवाद खत्म क्यूं नहीं होता? इसका एक कारण है कि राजनीति में काफी बड़ा भ्रष्टाचार समाया है। आम जनता तक विकास की राशि नहीं पहुंचती है। यहां के युवक बेरोजगारी के चलते आतंकी हरकतों में शामिल हुए हैं। उन्हें पैसा, जन्नत और 72 हूरें मिलने का सपना दिखाकर कट्टरपंथियों ने दिग्भ्रमित किया है। कश्मीरी पंडितों को इन कट्टरपंथियों की वजह से अपने ही देश में विस्थापित होना पड़ा है। आज 7 लाख कश्मीरी पंडित जम्मू और देश के विभिन्न भागों में विस्थापितों के जैसी बदतर जिंदगी जी रहे हैं। कितनों को बेरहमी से मौत के घाट उतारा गया है।

फिर कश्मीर समस्या का समाधान क्या है? इसका सबसे अहम समाधान है - कश्मीर का विकास। दूसरी ओर हमें पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय वार्ता (जैसे कि पूर्व प्रधानमंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह जी ने सुझाया था) करनी होगी। और अगर पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है तो भारत को सिंध और बलूचिस्तान में हो रहे स्वतंत्रता आंदोलन की पूरी सहायता करनी होगी। पाकिस्तान अगर सिंध और बलूचिस्तान में उलझा रहेगा तो वह कश्मीर में दखलंदाजी नहीं करेगा।

कश्मीर के युवकों को देश की मुख्य धारा में लाना होगा। उन्हें बताना होगा कि आतंकवादी की औसतन उम्र सिर्फ 25 साल की होती है। उन्हें बताना होगा कि भारत जैसे विशाल, धर्मनिरपेक्ष और आगामी महाशक्ति में रहना उनके लिए गौरव की बात होगी। अगर कश्मीर जैसे छोटे भूभाग को आजादी मिल भी गई तो ऐसा छोटा प्रदेश, जो चारों ओर से भूमि से घिरा है, जिसकी साधन संपत्ति सीमित है,वह दूसरे किसी बड़े देश का उपग्रह देश बनकर ही रहेगा। कश्मीर में आतंकवाद खत्म करने के लिए समग्र, समन्वित और ठोस नीति अपनानी होगी।

सच कहें तो भारत सरकार ने भी अपने द्वारा सौम्य-दमन और कश्मीरी जनता को रास्ते पर थकाने वाली दोहरी आंदोलनकारी नीति अपनायी है, जिससे कमोवेश कश्मीर पर वह अपना अधिकार कभी नहीं छोड़ेगा। अगर कश्मीर आजाद हो जाता है, तो देश की अखंडता खतरे में आएगी। अनेक राज्य या भूभाग स्वतंत्रता की मांग कर सकते हैं। इसलिए कश्मीर पर भारत अपना अधिकार कभी नहीं छोड़ेगा।

कई विशेषज्ञों का कहना है कि इतनी काफी मात्रा में खर्च करने के बावजूद कश्मीर को हम साथ नहीं रख सकते हैं तो उसे आजादी देना बेहतर होगा। लेकिन यह बात 'रोग से ज्यादा दवा लाजिम' जैसी है। ऐसा करना ऐतिहासिक भूल होगी।

पूरे विश्व के परिवेश में देखा जाये तो ऐसे स्वतंत्रता आंदोलन ज्यादा देर तक नहीं टिक पाए हैं। बढ़ते विकास और आधुनिकता में ऐसे आंदोलनों की आवश्यकता को खत्म कर दिया है। हो सकता है कश्मीर के साथ भी ऐसा ही हो। कश्मीर में उनकी जनता की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, पुलिस और प्रशासन में उत्पीड़न दमन विरहित सरकार आनी चाहिये जिसकी सामान्य जनता के प्रति जवाबदेही हो।

पाकिस्तान भारत की प्रगति से हमेशा से ही ईर्ष्या करता आया है। कश्मीरी आतंकवाद इसी की उपज है। अगर हम भटके हुए कश्मीरी युवकों को सही रास्ते पर लाने में कामयाब रहे, तो कश्मीर जो कि भारत के नक्शे में मुकुट की तरह सुशोभित है,वह हमेशा ही भारत के सिर पर शोभायमान रहेगा, चाहे इसके लिए हमें कुछ भी करना पड़े। कश्मीर जो कि धरती का स्वर्ग कहलाता है, उसे हमें फिर से स्वर्ग बनाना होगा। ■

## हँसी की फुहार

अच्छे और बहुत अच्छे टीचर में अंतर:

अच्छा टीचर वह है, जो परीक्षा में आपको कड़ी मेहनत करने की सलाह दे...

और बहुत अच्छा टीचर वह है, जो आपको परीक्षा के वक्त कहे - कंजरो ! पर्चियाँ चबा जाओ, चेकिंग वाले आ गए।

कहानी आगे भी है...

जब सब पर्चियाँ चबा लें तो टीचर सीट पर हँसते हुए जा बैठे और कहे, कोई चेकिंग वाले नहीं आए अब करो पेपर...

पखवाड़े की हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कृत निबंध

# कश्मीर में आतंकवाद

डॉ. मिलिंद डी. भोसकर
*चिकित्सा अधिकारी*

आज सारा विश्व आतंकवाद की जटिल समस्या से जूझ रहा है। शायद ही ऐसा कोई देश होगा जहां आतंकवाद का काला साया न छाया हो। हम जितना भी इससे निपटने की कोशिश कर रहे हैं, यह उतना ही निरंतर बढ़ता जा रहा है। भारत में केवल कश्मीर और पंजाब में ही नहीं, बल्कि अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश भी इस आतंकवाद से बच नहीं पाया है। ईरान, ईराक और अफगानिस्तान आज इसी आतंकवाद की वजह से नेस्तनाबूद हो चुके हैं। अमेरिका ने आज भले ही अलकायदा जैसे आतंकी समूह को झुकने पर मजबूर कर दिया हो, पर इस समय आइ.एस.आइ.एस.जैसा आतंक का नया काला चेहरा समूची विश्व शांति को चुनौती देने के लिए सामने खड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे पूरी दुनिया में आतंक की फैक्ट्री सी चल रही है और आपका नाम अन्न के किसी दाने पर भले ही न लिखा हो, पर शायद बंदूक की किसी गोली पर जरूर लिखा हो सकता है।

इस वक्त भी कश्मीर में विस्फोटक आग जैसे हालात बने हुए हैं। इंडियन आर्मी, जे. एण्ड के. पुलिस, बी.एस.एफ जवान कश्मीर में तैनात हैं। घाटी में कर्फ्यू जारी है। जन-जीवन अस्त-व्यस्त है तथा स्कूल, कॉलेज, दुकानें , व्यापार एवंआवागमन ठप्प है। अमरनाथ यात्रा पर रोक लगी है। आए दिन कश्मीरी नौजवानों और सेना के बीच पत्थरों और घातक बंदूकी छर्रों (पेलेट गन) से संघर्ष जारी है। कुछ सौ से अधिक लोगों की जानें जा चुकी हैं और हजारों घायल भी हुए हैं। भारत के सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल से बातचीत पर रोक लगी है। इस सबका कारण है 8 जुलाई, 2016 को हिजबुल कमांडर बुरहान वानी का भारतीय सेना द्वारा किया गया कथित एन्काउंटर।

आखिर ऐसी क्या वजह है कि बुरहान जैसे कश्मीरी नवयुवक अपनी जिंदगी को खुशहाल बनाने की बजाय किसी के बहकावे का शिकार बन आतंकी संगठन के प्यादे होकर दहशत की मशीन बनकर रह जाते हैं और क्या है इस कश्मीर के आतंक का इतिहास ?

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत में आतंकवादी कार्रवाइयां शुरू हो चुकी थीं। धर्म के नाम पर पाकिस्तान को भारत से अलग किया गया। भारत-पाक अलग होते ही भारत आंतकवाद के शर्मनाक कार्यों से थर्रा उठा था। इतिहास बताता है कि देशी रियासतों के सामने भारत या पाकिस्तान में शामिल होने के दो ही विकल्प मौजूद थे, पर कश्मीर अब तीसरा विकल्प बन गया था। पाकिस्तान का मानना था कि कश्मीर उसी का एक हिस्सा है, जो बंटवारे के दौरान एक अधूरे कार्य के समान रह गया। कश्मीर को भारत से अलग करने के लिए पाकिस्तान ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया। पर जब उसे यह बंटवारा किसी तरह संभव होता नजर नहीं आया, तब उसने आतंकवाद का कुटिल रास्ता अपनाया। वर्ष 1980 के बाद से पाकिस्तान के प्रायोजित, नियंत्रित और प्रशिक्षित उग्रवादियों ने अपनी नई पहचान को रेखांकित करने के लिए कश्मीर में खूनी खेल की शुरुआत कर दी।

वर्ष 1947 के बाद से ही कश्मीर विवाद मुख्य रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच एक क्षेत्रीय संघर्ष के स्वरूप में उभरा। विभिन्न कश्मीरी अलगाववादियों, राष्ट्रवादियों, चरमपंथियों, भारत सरकार और सेना के बीच में अपनी स्थानीय स्वायत्तता बनाए रखने की एक जंग सी छिड़ गई। फिर लश्कर-ए-उमर, लश्कर-ए-जब्बार, तेहरीक-उल-मुजाहिदीन, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के उग्रवादियों द्वारा आए दिन कश्मीरी अवाम के साथ मार-पीट, बदसलूकी, आगजनी, देशी-विदेशी पर्यटकों का अपहरण और सेना पर हमले जैसी कार्यवाइयां चलती और बढ़ती गईं। इसी कारण भारत को कश्मीर में लोकतांत्रिक विकास करने में कठिनाई महसूस होती रही। कई रिपोर्टों से यह साबित होता रहा कि पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था आइ.एस.आइ,चीन, अलकायदा और अभी आइ.एस.आइ.एस के उग्रवादियों का कश्मीर उग्रवाद में बड़ा हाथ है।

वर्ष 1980 के बाद से कश्मीरी उग्रवाद से निपटने हेतु भारत ने कश्मीर में विशेष आपातकालीन अधिकार देकर अपने करीब 6,00,000 सेना के जवानों की तैनात किया। इसके चलते कश्मीरी जनता में, मुख्य रूप से मुस्लिम समाज में गुस्से की एक लहर सी

उठी। फिर उन्होंने पाकिस्तानी हुक्मरानों की आवाज में आवाज मिलाकर भारतीय सेना पर बेकसूर मुस्लिम युवकों से बदसलूकी, जबरन मारपीट, जान से मारने, मुस्लिम औरतों से अत्याचार जैसे संगीन आरोप लगाए। कुछ सच भी साबित हुए। पर ज्यादातर में अफवाहों की गंध अधिक मानी जाती रही। वहीं दूसरी तरफ कश्मीरी अलगावावदियों का समर्थन प्राप्त उग्रवादियों ने कश्मीर घाटी में सालों से बसे हिन्दू पंडितों पर बड़े जुल्म कर सामूहिक निष्कासन पर मजबूर कर दिया। एक रिपोर्ट के आधार पर करीब 5,06,000 कश्मीरी हिन्दू पंडित कश्मीर से जम्मू पलायन कर चुके हैं। इस प्रकार कश्मीर में दोनों ही समाज और सेना पर मानव अधिकारों के उल्लंघन के आरोप-प्रत्यारोप लगते रहे हैं।

कश्मीर विवाद पर भारत और पाकिस्तान ने चार युद्ध लड़े हैं। वर्ष 1947, 1965, 1971 के युद्ध के साथ ही 1999 का कु-प्रसिद्ध कारगिल युद्ध। इन चारों ही युद्धों में पाकिस्तान को करारी हार का सामना करना पड़ा है। भारत को भी अपने कई वीर जवानों के बलिदान को स्वीकारना पड़ा। आर्थिक नुकसान दोनों ही देशों को हुआ। आज दोनों ही देश न्यूक्लियर मिसाइलों से लैस हो चुके हैं। न जाने न्यूक्लियर मिसाइल कब चल जाय।

भारत-पाक युद्ध विराम के चलते शिमला समझौते के अनुसार दोनों देशों के बीच की सैन्य नियंत्रण रेखा को एलओसी (लाइन ऑफ कंट्रोल) माना गया। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को पीओके अर्थात पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर कहा जाता है। भारत हमेशा यह आरोप लगाता चला आ रहा है कि पाकिस्तान पोओके की धरती का उपयोग आतंकवादी ट्रेनिंग कैंप चलाने में करता आया है। आए दिन एलओसी पर कश्मीर के पुंछ और द्रास सेक्टर में घुसपैठ करने वाले दहशतगर्दों से मुठभेड़ के साथ भारत-पाक सैनिकों के बीच गोलीबारी और मोर्टार शेल चलने की खबरें आती रहती हैं। इस प्रकार के युद्ध विराम का दोनों देशों को कोई फायदा दिखता नज़र नहीं आ रहा।

कश्मीर मसले पर केवल भारत-पाकिस्तान ही नहीं बल्कि अमेरिका, रूस, चीन, संयुक्त अरब राष्ट्र सभी अपनी-अपनी राजनीति करते दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका को एशिया खंड पर, रूस को अमेरिका पर, चीन को भारत पर अपना दब-दबा कायम रखना है। उधर अरब राष्ट्रों का इस्लामिक जिहाद को हर मुमकिन मदद करना दिखाई देता है। इन सभी बड़े देशों को कश्मीर विवाद न सुलझने में ही अपनी भलाई नज़र आती है। फिलहाल भारत जी-20 समिट, सार्क देशों, संयुक्त राष्ट्र के मंच से आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को विश्व भर में अलग-थलग दिखाने पर जोर दे रहा है। इस प्रकार कश्मीर एक वैश्विक कुटिल राजनीति का शिकार होता नज़र आता है।

सत्रहवीं सदी में मुगल बादशाह शाहजहां ने कश्मीर घाटी की अद्भुत सुंदरता से मोहित होकर कहा, ''धरती पर गर कहीं जन्नत है... तो बस यहीं है .. यहीं है''। कई दूसरे कलाकारों ने भी कश्मीर की सुंदरता पर अपनी कलाकारी पेश की है। कश्मीर अपनी सुंदरता के साथ ही अपने नैसर्गिक धन, सांस्कृतिक धरोहर, अपने खान-पान, डल-झील, कुशल कारीगरी और आर्टवर्क के लिए भी दुनिया भर में मशहूर है। इसी कारण से विश्व भर से पर्यटक कश्मीर की ओर खिंचे चले आते हैं। कश्मीर की अर्थव्यवस्था में इस पर्यटन का मुख्य हाथ है। पर दशकों से चले आए आतंकवाद, असुरक्षा तथा बुनियादी विकास में कमी के चलते अब इन्हीं सैलानियों ने कश्मीर से मुंह मोड़ लिया है। उनका कहना है कि कश्मीर एक नर्क के समान हो चुका है।

एक सर्वेक्षण में यह कहा गया कि 2014 के लोकसभा चुनाव में कश्मीरी जनता ने बड़ी संख्या में भाग लिया और यह मानना था कि अब कश्मीर की जनता सालों से चले आए इस आतंकवाद से तंग आ गई है। वह अब लोकतंत्र को अपनाकर, अपने विकास पर तवज्जो देना चाहती है।

भारत-पाकिस्तान को भी अब बंदूक का सहारा छोड़ कश्मीरी अलगाववादियों, राष्ट्रवादियों और चरमपंथियों का विश्वास पाकर एवं उनका समर्थन लेकर, बात-चीत के रास्ते कश्मीरी विवाद का हल तलाशना चाहिए। कश्मीरी नौजवानों को अन्य राज्यों तथा देश के दूसरे बच्चों के समान आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए। कश्मीरियों ने अब अपने नैसर्गिक धन, सांस्कृतिक धरोहर, अपने आर्ट को विश्व के सामने रख पर्यटन पर जोर देना चाहिए और अपनी आर्थिक हालत सुधारकर अपना विकास करना चाहिए।

''बिखरी लाशें, बेघर-भूखे-अनाथ बच्चे, अत्याचार सहती विधवा औरतें, जले हुए घर, उजड़ा चमन किसे अच्छा लगता है''। यह बात सभी जानते भी हैं, पर मानते क्यूं नहीं।

### आखिर में यही लिखता हूँ ----

''मस्जिद तो हासिल हुई तुमको, खाली ईमान गवां बैठे.....
मंदिर तो बचा लिया हमने, पर अपना भगवान गवां बैठे....
धर्म के ठेकेदारों ने आज फिर यूं भड़काया हमें
काज़ी और पंडित जिंदा थे, हम अपनी जान गवां बैठे
क्या कहें .. हम पाकिस्तान गवां बैठे, तुम हिन्दुस्तान गवां बैठे''
''कश्मीरियत ---- जम्हूरियत ----- इंसानियत''
जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद

पखवाड़े की हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कृत निबंध

# कश्मीर में आतंकवाद

सत्येन्द्र प्रताप सिंह
*सहायक प्रबंधक*

भारत का संवेदनशील राज्य होने के साथ ही जम्मू और कश्मीर हिंसा एवं राजनीति की वजह से हमेशा चर्चा में रहता है। आजादी के इतने वर्षों के पश्चात भी क्या वजह है कि इस राज्य में हिंसा रुकने का नाम नहीं ले रही? क्या राजनीतिक पार्टियाँ इसका इस्तेमाल अपने राजनीतिक मंसूबे पूरे करने के लिए कर रही हैं, या स्वयं को इसे रोक पाने में असफल पा रही हैं? क्या यहाँ आतंकवाद पाकिस्तान प्रेरित, प्रायोजित विभिन्न अलगाववादी संगठनों की हताशा की देन है? इसे समझने के लिए हमें इतिहास की पृष्ठिभूमि को समझना जरूरी है।

हाल ही में अनंतनाग जिले में हिजबुल मुजाहिदीन के कमांडर इनामी आतंकी बुरहान वानी के मारे जाने पर सुरक्षा बलों पर हुए हमले एवं उसकी शवयात्रा में जमा भारी जन सैलाब, हमारी सुरक्षा एजेंसियों के लिए बहुत चिंता का विषय है। इस शव यात्रा में दो अलगाववादी संगठनों द्वारा भारतीय ध्वज जलाना एवं पाकिस्तान समर्थित नारे लगाना इस देश के लिए चिंता का सबब है। यह हमें सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या वजह है कि हमारे नौजवान भाई इन चरमपंथियों के बहकावे में आ जाते हैं?

इस राज्य की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने इस घटना एवं नौजवानों के मारे जाने पर अफसोस जाहिर किया। परंतु क्या वजह है कि राज्य सरकारें ऐसी हिंसा को रोक पाने में अक्षम हैं। दूसरी ओर पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा - बुरहान वानी पहला एवं आखिरी नौजवान नहीं होगा बंदूक उठानेवाला। इसका साफ मतलब है कि विपक्षी पार्टियाँ ऐसी घटना को अपने राजनीतिक उद्देश्यों को साधने में प्रयोग करती हैं वर्ना इन लोगों को नौजवानों को भटकाने का क्या अधिकार है, जिनके बच्चे विदेशों में तालीम ले रहे हैं। यह घटना सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक आघात है क्योंकि ऐसा दावा किया जा रहा था कि हमारे पाकिस्तान से संबंध सुधर रहे हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजशाही कश्मीर के लिए भारत एवं पाकिस्तान में युद्ध हुआ। भारत ने कश्मीर के प्रमुख स्थानों पर कब्जा किया। इसी के साथ वहाँ के राजा ने कश्मीर के भारत में विलय का निर्णय लिया। छिटपुट हिंसा के आलावा उस समय वहाँ कोई अलगाववादी संगठन सक्रिय नहीं थे।

वर्ष 1951 में वहाँ संसदीय चुनाव हुए जब शेख अब्दुल्ला निर्विरोध चुने गए। पर वे केंद्र सरकार के कभी पक्ष में रहे तो कभी विरोध करने पर बर्खास्त भी हुए। इस प्रकार वहाँ राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बना रहा। कई बार राष्ट्रपति शासन लगा एवं सैन्य बल बढ़ाया गया। इन सुरक्षा बलों ने नागरिक अधिकारों को सीमित करने का प्रयत्न किया जिससे वहाँ हिंसा भड़कने लगी। सुरक्षा बल जितनी सख्ती करते हिंसा उतनी तेज फैलती। यह आग में घी का काम कर रही थी।

शेख अब्दुल्ला की मृत्यु के पश्चात उनके बेटे फारुख अब्दुल्ला मुख्यमंत्री बने परंतु केंद्र सरकार का विरोध करने पर स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन्हें बर्खास्त कर दिया। इसके 1 वर्ष पश्चात 1987 में फारुख अब्दुल्ला काँग्रेस के समर्थन से मुख्यमंत्री चुने गए। कथित रूप से इस चुनाव में बहुत धांधली हुई जिसके परिणामस्वरूप पराजित नेताओं ने हिंसक विरोध का रास्ता पकड़ा। पाकिस्तान ने इनका समर्थन कश्मीर पर भारत की वैधता को गलत साबित करने एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को बदनाम करने के लिए किया। पाकिस्तान ने कई बार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन में एवं मानव अधिकार संगठनों से भारत की शिकायत की।

वर्ष 2004 के पश्चात पाकिस्तान की नीति में थोड़ा बदलाव आया जिसकी वजह थी पाक समर्थित कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ पर दो बार जानलेवा हमला जिसमें वह बाल-बाल बच गए। अब पाकिस्तान सरकार ने निर्णय लिया कि वे कश्मीरी आतंकवादियों का समर्थन नहीं करेंगे। इसका अनुसरण परवेज मुशर्रफ के उत्तराधिकारी आसिफ जरदारी ने भी किया। उन्होंने तो कश्मीरी अलगाववादियों को

आतंकवादी तक कह दिया था। पाकिस्तान सरकार ने अपनी सुरक्षा एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलिजेन्स को आतंकवाद पर नियंत्रण करने एवं आतंकवादियों का समर्थन न करने की हिदायत भी दी थी, परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि उसने इस पर कितना नियंत्रण किया है।

## आतंकवाद के कारण निम्नलिखित हैं :

क) मानवी शोषण : केंद्र सरकार ने राजनीतिक कारणों से सुरक्षा बलों का अत्यधिक प्रयोग किया जिसने नागरिक अधिकारों को सीमित करने का प्रयत्न किया जिसके फलस्वरूप विरोध एवं हिंसा में इजाफा हुआ।

ख) इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस : इस संगठन ने कश्मीर मुद्दे पर अलगाववादियों एवं आतंकवादियों का समर्थन अपने देश के राजनीतिक उद्देश्यों को हासिल करने के लिए किया।

ग) राजनीतिक अधिकार : केंद्र एवं राज्य सरकारों ने राजनीतिक कारणवश इस समस्या को जिंदा रखा। वर्ष 1987 के चुनाव में धांधली की वजह से कुछ लोग अलगाववाद की तरफ बढ़े। हालांकि वर्तमान समय में चुनावों में अधिक पारदर्शिता एवं गंभीर प्रयत्न के लिए बल दिया गया है जिससे चुनाव साफ हों। केंद्र सरकार ने प्रतिव्यक्ति संघीय सहायता में भी वृद्धि की है।

घ) मुजाहिदीन प्रभाव : सोवियत संघ के अफगानिस्तान पर आक्रमण के पश्चात कुछ मुजाहिदीन संगठन पाकिस्तान के साथ मिलकर इस्लाम धर्म के प्रसार-प्रचार के लिए कश्मीर की तरफ बढ़ने लगे।

ङ) साक्षरता दर एवं बेरोजगारी : भारतीय जनगणना के तथ्य बताते हैं कि कश्मीर में साक्षरता दर एवं बेरोजगारी अत्यधिक है जिससे यहाँ के युवा/नौजवान गुमराह होकर चरमपंथियों के बहकावे में आ जाते हैं। सरकार को इनके रोजगार एवं शिक्षा की तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

वर्ष 2015 से कश्मीर में हिंसा में बेतहाशा वृद्धि हुई है। अगस्त तक 75 बार हिंसक झड़पें एवं 11 बार नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ की कोशिश हुई है। अगस्त तक इस हिंसा में 104 लोग मारे गए, जिसमें 48 आतंकवादी, 24 सुरक्षा बल के जवान एवं 22 नागरिक मारे गए। अब समय आ गया है कि हमें आतंकवाद को मुँहतोड़ जवाब देना होगा। आतंकवाद के फैले हुए फन को कुचलना होगा। पाकिस्तान की नापाक कोशिशों को नाकामयाब करना होगा। उसे राजनीतिक रूप से अंतरराष्ट्रीय समाज से अलग-थलग करना होगा। बेरोजगारों को रोजगार देना होगा। शिक्षा का विस्तार करना होगा। पर्यटन एवं सुविधाओं का विस्तार करना होगा। प्रति व्यक्ति आमदनी में बढ़ोत्तरी करनी होगी। आखिर कब तक हम अपने सैनिकों एवं निर्दोष नौजवानों की हत्या बर्दाश्त करेंगे। हमें अपने देश के रणनीतिकारों पर विश्वास है कि एक दिन हम इन लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे। हिंसा का दमन होगा, विकास की राह पर चलेंगे, आखिर हमारे पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी सपना तो यही था। ■

## हँसी की फुहार

ताऊ गाँव से शहर जाने के लिये पहली बार बस पर बैठे। कंडक्टर ने ड्राइवर के बगल वाली सीट पर उन्हें बैठाया। वे बड़े ध्यान से ड्राइवर को गाड़ी चलाते देखते रहे। रास्ते में चाय-पान के लिये बस रुकी। ड्राइवर भी उतरा। थोड़ी देर बाद ड्राइवर जब लौटा तो गियर बदलने वाल डंडा गायब पाया। वह चिल्लाने लगा-गियर वाला डंडा किसने उखाड़ा? ताऊ बोले-उस्ताद, मैं देख रहा था तुम बार-बार उस डंडे को हिला-डुला कर उखाड़ने की कोशिश कर रहे थे, इसलिये मैंने ही उसे उखाड़ दिया।

पप्पू उदास घर के बारामदे में बैठा था। गुजरते हुए उसके दोस्त ने पूछा - क्या हुआ? पप्पू ने जवाब दिया-दुकान से दो टन का एसी खरीदा। घर लाकर तौला तो 60 किलो का निकला।

*जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत अपने आसपास के क्षेत्र में जिस तरह अनेक प्रकार की सामाजिक जिम्मेदारियाँ निभाता है तथा सार्वजनिक जनहित के कार्यों के लिए महाराष्ट्र सरकार की भी आर्थिक सहायता करता है, उसी प्रकार वह राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार के लिए भी अनेक उपाय करता है, जिसमें वर्ष में एक बार विद्यालयों के विद्यार्थियों की भी हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिससे कि क्षेत्र के अध्ययन परिसरों में भी हिन्दी के प्रति जागरूकता का विस्तार हो। इसलिए इस बार हिन्दी पखवाड़े में ''जीवन जीने की कला है योग'' विषय पर पत्तन क्षेत्र के सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी निबंध को हम पाठकों के पढ़ने के लिए उपलब्ध करा रहे हैं।*

*- सम्पादक*

**विद्यार्थी वर्ग में प्रथम पुरस्कृत निबंध**

# जीवन जीने की कला है योग

**कु. अमरजीत सुदर्शन राम**

*रोटरी इंग्लिश मीडियम स्कूल, कक्षा-12 के विद्यार्थी जनेप न्यास के अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से. से पुरस्कार प्राप्त करते हुए*

**''योग स्वयं को स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुँचाने की यात्रा है।''**

चलिए हम भी इस यात्रा में शामिल होकर अपने जीवन को योग के माध्यम से बेहतर बनाएँ।

योग भारत की प्राचीन संस्कृति का गौरवमयी हिस्सा रहा है, जिसकी वजह से भारत सदियों तक विश्वगुरु रहा। योग एक ऐसी सुलभ एवं प्राकृतिक पद्धति है जिससे स्वस्थ शरीर तथा स्वस्थ मन के साथ अनेक आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं।

जिस योग को स्वामी रामदेव महाराज ने गुफाओं, कंदराओं से बाहर निकालकर आम जन तक पहुँचाया। उसी योग को प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी ने एक कदम आगे बढ़कर विश्व पटल पर स्थापित कर दिया है।

यह योग में विश्व के दृढ़ विश्वास का फल है, जिसकी वजह से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रखे गए प्रस्ताव को 177 देशों ने सीमित समय में पारित कर दिया। आज अमरीका में 2 करोड़ से भी ज्यादा लोग योग का नित्य अभ्यास करते हैं।

**''योग से ईश्वर का अनुपालन होता है।''**

योग की उत्पत्ति - योग संस्कृत शब्द की 'युज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'जोड़ना' अर्थात शरीर, मन और आत्मा को एकसूत्र में जोड़ना ही योग है। योग के महान ग्रंथ ''पंतजलि योग दर्शन'' के अनुसार- ''योगाश्चित्तवृत्ति निरोध:''- अर्थात मन की वृत्तियों का निरोध ही योग है। गीता में भी कहा गया है -

**'योग: कर्मसु कौशलम्''**

अर्थात कर्मो में कुशलता ही योग है।

योग का उपदेश सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने सनकादिकों और विवस्वान (सूर्य) को दिया था। इसके बाद यह दो भागों में विभक्त हो गया एक ब्रह्म योग और दूसरा कर्म योग। ब्रह्म योग की परंपरा सनक, सनन्दन, कपिल, आसुरी, वोढु और पंच्चशिख ने शुरू की थी। ब्रह्म योग आगे चलकर ज्ञान, अध्यात्म और सांख्य योग नाम से प्रसिद्ध हुआ। दूसरा कर्म योग विवस्वान (सूर्य) का है। विवस्वान ने मनु को, मनु ने इक्ष्वाकु को, इक्ष्वाकु ने राजर्षियों और प्रजाओं में योग का ज्ञान विस्तृत किया। वेदों और पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है। वेद विश्व की पहली पुस्तक है जिसका उत्पत्ति काल लगभग 10,000

वर्ष पूर्व है। योग की उत्पत्ति 5000 ई.पू. में हुई। गुरु-शिष्य परंपरा से योग का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया गया। सबसे आश्चर्यजनक खोज तो 1920 में हुई। पुरातत्त्व वैज्ञानिकों ने 1920 में ''सिंधु सरस्वती सभ्यता'' की खोज की जिसमें हिंदू धर्म और योग के होने के सबूत मिलते हैं।

''यस्माद्वते न सिद्धतो यज्ञो विपश्चितश्चन
धीनां योगभिन्विते''

अर्थात योग के बिना विद्वान का भी कोई यज्ञ कर्म सिद्ध नहीं होता वह अधूरा रह जाता है।

**योग का महत्व -** आज की रफ्तार भरी जिंदगी में कई ऐसे पल आते हैं जो हमारी गति को रोक देते हैं। हमारे आस-पास के वातावरण में ऐसे अनेक कारण विद्यमान हैं जो तनाव, थकान, चिड़चिड़ाहट को उत्पन्न करते हैं। ऐसे हमारा यह जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। ऐसे में जीवन को स्वस्थ तथा ऊर्जावान बनाए रखने के लिए योग एक ऐसी रामबाण दवा है जिससे दिमाग ठंडा और शरीर स्वस्थ रह सकता है।

विश्व की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद में भी कई स्थानों पर यौगिक क्रियाओं का उल्लेख किया गया है। भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि-मुनियों ने ही योग का विस्तार किया। इसके बाद कृष्ण, महावीर और बुद्ध ने इसे अपनी तरह से विस्तृत किया। और इसके पश्चात पतंजलि ने इसे सुव्यवस्थित रूप दिया।

योग आस्था, श्रद्धा और विश्वास से परे एक सीधा विज्ञान है। जीवन जीने की कला है योग। योग शब्द के दो अर्थ हैं। और दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक है जोड़ना और दूसरा है समाधि, अर्थात जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते तब तक हम समाधि तक नहीं पहुँच सकते। समाधि तक पहुँचने के लिए हमारे तन, मन और आत्मा का स्वस्थ होना अतिआवश्यक है। इस कार्य को और भी सुगम बनाया जा सकता है, अगर हम योग को जीवन का एक हिस्सा बना लें। योग कहता है कि आपमें जानने की क्षमता है उसे पहचानिए और उसका इस्तेमाल कीजिए।

अनेक सकारात्मक ऊर्जाओं के कारण योग का भगवद्गीता में विशेष स्थान है।

भगवद्गीता के अनुसार -

''सिद्धसिद्धयो समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते।''

अर्थात सुखः-दुःख, लाभ-हानि , शीत-ऊष्ण आदि द्वंद्वों में सर्वत्र समभाव ही योग है।

योग क्यों है फायदेमंद -

1) योग का प्रयोग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के लिए हमेशा से किया जाता रहा है। आज के जीवन के अनुसार योग बहुत लाभकारी है तथा चिकित्सा शोधों के अनुसार योग शारीरिक और मानसिक रूप से मानवजाति के लिए वरदान है।
2) जहाँ जिम आदि से शरीर के किसी खास अंग का व्यायाम होता है, वहीं योग के नित्य अभ्यास से शरीर के समस्त अंगों, प्रत्यंगों और ग्रंथियों का व्यायाम होता है जिससे समस्त अंग, प्रत्यंग सुचारु रूप से कार्य करते हैं।
3) योग हमारे शरीर को रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है जिससे त्वचा पर चमक आ जाती है और शरीर स्वस्थ, निरोगी और बलवान हो जाता है।
4) जहाँ एक तरफ योग के नित्य अभ्यास से हमारी माँसपेशियों को पुष्टता मिलती है जिससे कि एक दुबला-पतला व्यक्ति भी बलवान बन जाता है, वहीं दूसरी और कई लाभ हैं जैसे इसके नित्य अभ्यास से पेट की चर्बी कम हो जाती है। इस प्रकार योग कृष और स्थूल दोनों को ही फायदेमंद है।
5) योग के नित्य अभ्यास से माँसपेशियों का अच्छा व्यायाम होता है, जिससे तनाव दूर होकर अच्छी नींद आती है, अच्छी भूख लगती है और पाचन सही रहता है।
6) प्राणायाम - प्राणायाम योग का ही एक प्रमुख अंग है जो योग जैसा ही अति लाभकारी है। प्राणायाम से श्वसन-प्रश्वसन की गति को नियंत्रित किया जा सकता है। प्राणायाम से श्वसन संबंधी रोगों का निवारण किया जा सकता है। प्राणायाम से फेफड़ों की ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है।
7) ध्यान - ध्यान यानि मेडिटेशन। ध्यान का प्रचार-प्रसार हमारे देश से अधिक विदेशों में हुआ है। आज की तनावभरी जिंदगी में ध्यान से ज्यादा फायदेमंद और कुछ नहीं। ध्यान से हमें मानसिक शांति मिलती है और मन की एकाग्रता बढ़ती है।
8) योग हमारे शरीर से एल डी एल और बैड कॉलेस्ट्राल कम करता है जिससे हमारा शरीर स्वस्थ हो जाता है।
9) योग हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दवाओं पर हमारी निर्भरता को कम करता है। योग के द्वारा शुगर, हाई फीवर, हाई ब्लडप्रेशर जैसी अनेक बीमारियों का निवारण हो सकता है। योग के अनुसार उसके द्वारा कैंसर जैसी बीमारी का भी निवारण हो सकता है।
10) कई अध्ययनों में साबित हो चुका है कि योग के द्वारा आर्थराईटिस और बैकपेन जैसी बीमारियों का भी निवारण हो सकता है।
11) आजकल के बदलते खान-पान और रहन-सहन में जीवन को बेहतर बनाने के लिए योग से अच्छा कोई उपाय नहीं है।

संक्षेप में कहा जाए तो योग केवल शारीरिक व्यायाम और रोगों से लड़ने की प्रक्रिया नहीं बल्कि जीवन को बेहतर से बेहतर बनाने की एक जीवन पद्धति है।

आईए हम भी योग अपनाएं और अपने भारतीय गौरव को योग के माध्यम से स्वस्थ रूप से गौरवान्वित करें।

''योगमितिमन्यते स्थिरोमिन्द्रिय धारणम्''

*हिन्दी पखवाड़े में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन होना भी जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में एक बड़ा आकर्षण होता है जिसमें स्वरचित कविता पाठ करने का बंधन परिस्थितिवश हम नहीं रख पाते हैं। किन्तु ऐसे कविहृदय रचनाकार कर्मचारी/अधिकारी जो अपनी स्वयं की बनाई कविताओं का पाठ करते हैं, परंतु प्रतियोगिता में पुरस्कार मान लीजिए जीत पाते हैं या नहीं जीत पाते क्योंकि अन्य कवियों की कविताओं का पाठ करने वाले कर्मचारी/अधिकारी बड़े ही नाटकीय अंदाज में ऐसा सस्वर पाठ करते हैं कि पुरस्कारों की दौड़ में आगे निकल जाते हैं। फिर भी, हम यह समझते हैं कि ऐसे मूल कवियों की कुछ कविताओं को छापकर उन्हें प्रोत्साहन देना नितांत आवश्यक है। वह हम नि-रंतर अनेक वर्षों से करते आ रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। इसके अलावा भी अन्य प्राप्त कविताएं भी हम प्रस्तुत कर रहे हैं।*

*- सम्पादक*

**हमारे कवि**

**कवि शेखर मालवदे**
*अधीक्षक*

# मनुष्य

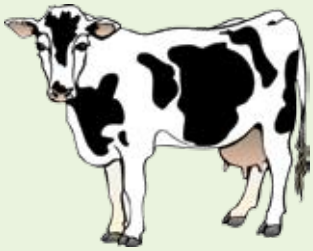

यह पाया मैंने जब गौर से देखा चारों ओर।
मनुष्य ही इस दुनिया का सबसे बड़ा है चोर।।

गायको ''गोमाता'' कहता,
चुराकर घास उसे चराता।
दूध उसका फिर छल से चुराता,
धर्म के नाम पर मचा देता फिर यह बड़ा ही शोर।। टेक।।

बैल को है यह सजाता नहलाता,
नंदी-नंदी कहकर बहलाता।
खेत में उसी से हल चलवाता,
न जाने और क्या क्या करवाता,
धान उगाकर दुनिया को दिखला देता है ज़ोर।। टेक।।

समुंदर की पूजा करवाता,
गंगा को मैया कहता।
जल से मछली, मोती यह चुराता,
आसानी से छुपा यह देता, सारा अपना अघोर ।। टेक।।

मधुमक्खी के छाते से शहद यह चुराता,
भेड़ बकरियों की खाल यह खींचता।
बंदर से कसरत करवाता,
''प्राणी मित्र'' बना कभी तो, यह होता भाव-विभोर।। टेक।।

पेड़ों से फल-फूल यह चुराता, रेशम के कीड़ों से रेशम,
घर बनवाता जंगल से चुराकर लकड़ी, साल, चन्दन और शीशम।
पृथ्वी को तो लूट चुका कब का,
पाताल से तेल-खनिज भी लूटे,
हवा से प्राणवायु तक लूटा,
करने डकैती चल पड़ा अब यह मंगल ग्रह की ओर।। टेक ।।

हमारे कवि

कवयित्री भारती ठाकुर
*लिपिक*

# उम्मीद

बेजान हो गई है जिंदगी, खो गए हैं हौसले,
अपनी खुदगर्जी के कारण रिश्तों में हैं फासले।
हार भी जाए गर सब कुछ अपना, रिश्तों को तू संभाले रख,
खुशियों से भर जाएगा दामन, जरा सी उम्मीद जिंदा रख।।1।।

खाली हाथ ही आए हम, फिर किस बात पर इतराते हैं,
अक्सर कुछ खोने के डर से चैन-सुकून खो जाते हैं।
किस्मत से मिल गई हैं खुशियाँ, हर सुख जो हमने चाहा है,
खुशियाँ लुटाता औरों पर जो बनता वही मसीहा है ?
इंसानियत की उस फितरत को हमेशा अपने दिल में रख,
तुझ पर उसकी रहमत होगी जरा सी उम्मीद जिंदा रख।।2।।

जरा सी नाकामी से नौजवाँ खुदकुशी की राह अपनाते हैं,
किसान भी अपनों की जिंदगी शमशान बनाकर जाते हैं।
नज़र उठाकर देख खुली हैं इस दुनिया में राहें हजार,
डटकर आगे बढ़ता चल सब सपने हो जाएँगे साकार।
कर हौसले बुलंद अपने, खुद पर जरा भरोसा रख,
कामयाबी होगी कदमों में जरा सी उम्मीद जिंदा रख।।3।।

देश की सरहद पर सिपाही अपनी जान की बाजी लगाते हैं,
मौत भी दिखती है सामने पर कदम नहीं डगमगाते हैं।
हौसलों से भर-भरकर अपना धरम निभाते हैं,
देश की खातिर जीते हैं और शान से विदा हो जाते हैं।
सर कटाने का हौसला, तू भी अपने दिल में रख,
फ़ख्र करेगी दुनिया तुझ पर जरा सी उम्मीद जिंदा रख।।4।।

जो भी जैसी भी है जिंदगी मिलती नहीं है बारबार,
नेकी और रहम हो दिल में याद करेगा फिर संसार।
मरकर भी जिंदा रहने की चाहत को तू दिल में रख,
जन्नत तेरे कदमों में होगी, जरा सी उम्मीद जिंदा रख।।5।।

हमारे कवि

डॉ. मिलिंद भोसकर
*चिकित्सा अधिकारी*

# पीएमई

*(आवधिक चिकित्सा जाँच)*

देखो देखो क्या कहते हैं पीएमई के परिणाम
हैं ऐसी कौन सी बीमारियाँ जिनमें फँसी हुई है अपनी जान,
समझते थे जिस, बंगला, गाड़ी, जेवर को ही अपनी शान
न जाने कमाते इन्हें ही, फँस गए कब अपने ही प्राण
सोचते हो तुम, चलो भागो दौड़ो हरदम
क्यूँकि खानी है आखिर में पेंशन
अरे भाइयो, आपकी बीमारियाँ ही बन जाएँगी आपका एक टेंशन ।
कहते हो, जाओ फ़िक्र नहीं हमें
भरेगी सरकार अपना मेडिकल बिल
और जानते यह भी, कि कर रहे हैं हम खुद ही खुद को कत्ल।
मानो मेरी बात, अभी निकला नहीं आपसे आपका वक्त।
न जलाओ दो दो शिफ्टों में काम कर अपना रक्त।
और तोड़ दो ज्यादा कमाने की ये आसान बेड़ी, जो बन गई है सख्त।
मैं आपका कोई शत्रु नहीं मेरे मित्रो,
काम था मेरा यही, कि बताऊँ आपको आने वाला ख़तरा ।
कैसे बताऊँ तुम सभी को कि है कोई एक शॉर्टकट
चलता हूँ जिस रस्ते मैं खुद ही है वह एक लाँग कट
हैं आप में भी एक नहीं बल्कि कई ऐसे नायाब मोती
बन जाओ आप भी एक..... समझ कर इसे एक चुनौती
बन जाओ आप भी एक..... समझ कर इसे एक चुनौती
देखो देखो क्या कहते हैं पीएमई के परिणाम।

# आतंकवादी हमले

हमारे कवि

कवयित्री रजनी घरत
*आशुलिपिक*

फिर हुई धरती माता खून से लहूलुहान,
उग्रवादियों ने अपने नापाक इरादों
को दिया दहशतवाद का अंजाम।

मौत का खेल रचनेवालों ने किए श्रंखलाबद्ध बम विस्फोट,
कश्मीर की घाटी को बनाया
इन हमलों का मुख्य स्त्रोत।

बुज़दिलों ने किए सोते हुये सैनिकों पर आत्मघाती हमले,
उरी के कैंप में धोखे से मारे
हमारे निहत्थे जाँबाज सारे।

हिंदुस्तान की यह पवित्र भूमि हुई वीर जवानों के खून से लथपथ,
बिखर पड़ी थीं रक्तरंजित लाशें
कश्मीर की उस फूलोंभरी धरती पर।

कुछ क्षणों के लिए जैसे थम सी गई जिंदगी की रफ्तार,
गूंज रही थीं दर्दनाक दुख भरी चीखें, घोर क्रंदन
और हाहाकार।

हे भारत माँ के वीर सपूतो !
व्यर्थ न जाएगा तुम्हारा बलिदान,
आतंकवादी शक्तियों का हम करेंगे
हर मकसद नाकाम।

अरे ओ पाकिस्तान !
नापाक, जाहिल, नामुराद और
आतंकवादियों के सरपरस्त
जिस मकसद से तू बहा रहा है
मासूमों का खून,
याद रखना बूंद-बूंद की कीमत चुकाने पर ही होगी
भारतवासियों की मनोकामना पूर्ण।

विकृत मानसिकता रखनेवालो !
मत समझो इस देश को कमजोर,
एकता और अखंडता से है बँधी हिंदुस्तान की डोर।
घुसपैठियो, न करो अपने कुकर्मों पर इतना गुमान,
तुम्हारी हर एक साजिश को मिलेगा अपने
किए का फल।

मौत का तांडव रचनेवालों को
देना होगा मुँहतोड़ जवाब,
अब तो बस शुरू करनी होगी जंग
हिंसात्मक गतिविधियों और वारदातों के खिलाफ।

अमन,शांति और समझौतों का हमेशा से रहा भारत का प्रयास,
लेकिन पड़ोसियों ने पीछे से वार कर
किया भारत से विश्वासघात।

हे मेरे वीर सैनिको ! करती हूँ अर्पण,
नतमस्तक होकर भावपूर्ण श्रद्धांजली।
तुम बेकसूर और निर्दोष सोते हुए हो गए शहीद वीर जवानों को,
दे दी तुमने अपने प्राणों की आहुति।

# पानी


हमारे कवि

कवि के. एस. कराले
*कनिष्ठ अभियंता*


सोच समझकर,संभल-संभलकर इस्तेमाल करो पानी।
वरना कल, पैसे के बदले सोना, सोने के बदले पैसा मिलेगा
नहीं मिलेगा पानी ? सोच समझकर.....

बरसों हमने नदी किनारे हैं गुजारे, बरसों देखे दरिया सागर के नजारे।
अब नहीं रहीं बहती गाती नदियाँ
और सागर में कभी नहीं था पीने जैसा पानी। सोच समझकर.....

हक है तो हो सही, पर क्या यह सौभाग्य नहीं
सर पर हमारे फुहारे से गिरता पानी।
जरा उनकी सोचो सर पर गागर घूमे दर-दर
जल-जल करके जल रहे शहर
पानी-पानी करते कितनों ने खोई ज़िंदगानी ? सोच समझकर.....

सृष्टि का नियम समता है, विविधता में एकता है।
एक दूजे को सहना सीखो नियमों से रहना सीखो
तब नियमित बरसेगा पानी। सोच समझकर .....

पानी हम बना नहीं सकते, बचा सकते हैं
बरसों भूगोल बिगाड़ते आए हैं,
अब इतिहास रचा सकते हैं।
बला-ए-आसमानी से करने हैं दो दो हाथ
यह लड़ाई नहीं सुलतानी,
बूंद-बूंद बचाए वह राजा, बूंद-बूंद बचाए वह रानी। सोच समझकर .....

ऊपरवाले की दुआएं आशीर्वाद हैं,
आप तक पहुंचा सब पानी।
जैसे होली वाटर है, ज़मज़म है,
शंखोदक या तीर्थ सा पवित्र है पानी। सोच समझकर .....

*कवि विष्णु वर्मा ''अभिव्यक्ति'' के एक ऐसे निष्काम सहृदय पाठक हैं जो हमें बिना मांगे ही एक न एक कविता जरूर भेजते हैं। आपकी कविता बड़ी ही समसामयिक तथा मार्मिक होती है एवं वे निरंतर ही अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजकर हमारा मार्गदर्शन भी करते हैं। ''अभिव्यक्ति''परिवार उनके राष्ट्रभाषा प्रेम का अभिनंदन करता है।*

*- सम्पादक*

# लगता अच्छा गाँव हमें

कवि विष्णु वर्मा

नहीं मिला आराम एक पल, नहीं सुखों की छाँव हमें,
फिर भी जग से अच्छा लगता,अपना घर और गाँव हमें।

पाए हैं आघात अनेकों, घाव न जाने कितने हैं,
परेशान करती रहती हैं, यहाँ धूप और छाँव हमें।

अपने धोखा देते रहते, गैरों से क्या आस करें,
फिर भी उनका कहीं से कोई, बुरा न लगता भाव हमें।

संघर्षों और अंतर्द्वंद्वों से ही निकलें मन की बातें,
प्रायश्चित्त की बहती धारा का नहीं भूले भाव हमें।

वाद-विवाद और अपयश तक, गए स्वयं ले पाँव हमें,
कोई राह मिले न मिले लेकिन, लगता अच्छा गाँव हमें।

# भारत का नागरिक

मैं भारत का नागरिक हूँ, मुझे लड्डू दोनों हाथ चाहिए।
बिजली मैं बचाऊंगा नहीं, बिल मुझे माफ चाहिए।
पेड़ मैं लगाऊँगा नहीं, मौसम मुझको साफ चाहिए।
शिकायत मैं करूंगा नहीं, कार्रवाई मुझे तुरंत चाहिए।
बिना लिए कुछ काम न करूँ, पर भ्रष्टाचार का अंत चाहिए।
घर के बाहर कूड़ा फेंकूँ, पर शहर मुझे साफ चाहिए।
काम करूँ न धेले भर का, वेतन लल्लनटॉप चाहिए।
एक नेता कुछ बोल गया सो, मुफ्त में पंद्रह लाख चाहिए।
लाचारों वाले लाभ उठाएँ, फिर भी ऊँची साख चाहिए।
लोन मिले बिल्कुल ही सस्ता, फिर भी बचत पर बढ़ा ब्याज चाहिए।
धर्म के नाम रेवड़ियाँ खाएँ, पर देश धर्मनिरपेक्ष चाहिए।
जाति के नाम पर वोट दें, पर अपराध मुक्त राज्य चाहिए।
मैं भारत का नागरिक हूँ, मुझे लड्डू दोनों हाथ चाहिए।

*(सौजन्य : राष्ट्रभाषा प्रचार मंडल,जेएनपीटी)*

# सत्यनिष्ठा का प्रभाव

चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, सुपुष्ट, सुन्दर सींगोंवाली नन्दा नामकी गाय एक बार हरी घास चरती हुई वनमें अपने समूहकी दूसरी गायों से पृथक हो गयी। दोपहर होने पर उसे प्यास लगी और जल पीने के लिये वह सरोवरकी ओर चल पड़ी, किंतु सरोवर जब समीप ही था, मार्ग रोककर खड़ा एक भयंकर सिंह उसे मिला। सिंहको देखते ही नन्दाके पैर रुक गये। वह थर-थर काँपने लगी। उसके नेत्रोंसे आँसू बह चले।

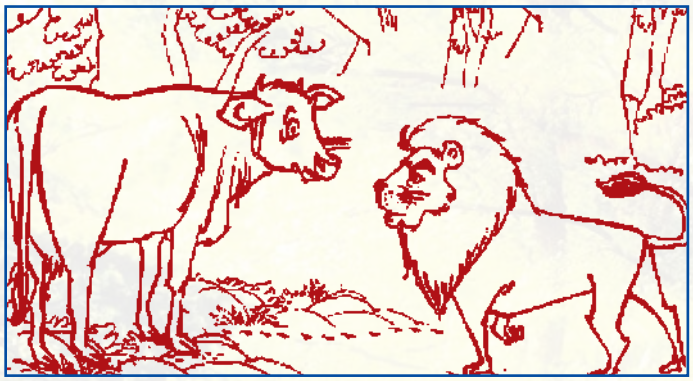

भूखे सिंहने उस गायके सामने खड़े होकर कहा- 'अरे! तू रोती क्यों है? क्या तू समझती है कि सदा जीवित रहेगी? तू रो या हँस, अब जीवित नहीं रह सकती। मैं तुझे मारकर अपनी भूख मिटाऊँगा।'

गाय काँपते स्वरमें बोली - 'वनराज ! मैं अपनी मृत्यु के भयसे नहीं रोती हूँ। जो जन्म लेता है, उसे मरना पड़ता ही है, परंतु मैं आपको प्रणाम करती हूँ। जैसे आपने मुझसे बातचीत करने की कृपा की, वैसे ही मेरी एक प्रार्थना स्वीकार कर लें।'

सिंहने कहा -'अपनी बात तू शीघ्र कह डाल। मुझे बहुत भूख लगी है।'

गौ- 'मुझे पहली बार ही एक बछड़ा हुआ है। मेरा वह बछड़ा अभी घास मुखमें भी लेना नहीं जानता। अपने उस एक मात्र बछड़े के स्नेहसे ही मैं व्याकुल हो रही हूँ। आप मुझे थोड़ा-सा समय देनेकी कृपा करें, जिससे मैं जाकर अपने बछड़े को अंतिम बार दूध पिला दूँ। यह करके मैं अपके पास आ जाऊँगी।'

सिंह - 'तू तो बहुत चतुर जान पड़ती है, परंतु यह समझ ले कि मुझे तू ठग नहीं सकती। अपने पंजे में पड़े आहार को मैं छोड़नेवाला नहीं हूँ।'

गौ- 'आप मुझपर विश्वास करें। मैं सत्यकी शपथ करके कहती हूँ कि बछड़े को दूध पिलाकर मैं आपके पास शीघ्र आ जाऊंगी।'

सिंह ने गौकी बहुत-सी शपथें सुनीं, उसके मनमें आया कि 'मैं एक दिन भोजन न करूँ तो भी मुझे विशेष कष्ट नहीं होगा। आज इस गायकी बात मानकर ही देख लूँ।' उसने गायको अनुमति दे दी- 'अच्छा, तू जा, किंतु किसी के बहकावे में आकर रुक मत जाना।'

नन्दा गौ सिंह की अनुमति पाकर वहाँ से अपने आवास पर लौटी। बछड़े के पास आकर उसकी आँखों से आँसू की धारा चल पड़ी। वह शीघ्रता से बछड़े को चाटने लगी। बछड़े ने माता के रोने का कारण पूछा। जब नन्दा ने बताया कि वह सिंह को लौटने का वचन दे आयी है, तब बछड़े ने कहा -'माता ! मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूँगा।'

नन्दाकी बात सुनकर दूसरी गायोंने उसे सिंह के पास फिर जानेसे रोकना चाहा। उन्होंने अनेक युक्तियों से नन्दाको समझाया, परंतु नन्दा अपने निश्चयपर दृढ़ रही। उसने सत्यकी रक्षाको ही अपना धर्म माना। बछड़े को उसने पुचकारकर दूसरी गायोंको सौंप दिया, किंतु जब वह सिंहके पास पहुँची, तब पूँछ उठाये 'बाँ-बाँ' करता उसका बछड़ा भी दौड़ा आया और अपनी माता तथा सिंहके बीचमें खड़ा हो गया। नन्दाने यह देखकर सिंहसे कहा - 'मृगेन्द्र ! मैं लौट आयी हूँ। आप मेरे इस अबोध बछड़े पर दया करें। मुझे खाकर अब आप अपनी क्षुधा शान्त कर लें।'

सिंह गायकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर बोला - 'कल्याणी! जो सत्यपर स्थिर है, उसका अमंगल कभी नहीं हो सकता। अपने बछड़े के साथ तुम जहाँ जाना चाहो, प्रसन्नतापूर्वक चली जाओ।'

उसी समय वहाँ जीवों के कर्म-नियन्ता धर्मराज प्रकट हुए। उन्होंने कहा -'नन्दा ! अपने सत्यके कारण बछड़ेके साथ तुम अब स्वर्ग की अधिकारिणी हो गयी हो और तुम्हारे संसर्ग से सिंह भी पापमुक्त हो गया है।'

**पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड से उद्धृत**

# भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन 2016

# भारतीय समुद्री शिखर सम्मेलन 2016

मुद्रक: ACUVEN मुंबई. मो: 9819858987